आपकी बात, निर्भीकता के साथ

प्रातःनागपुरी

आरएनआई पंजीयन सं. JHABIL/2023/86791

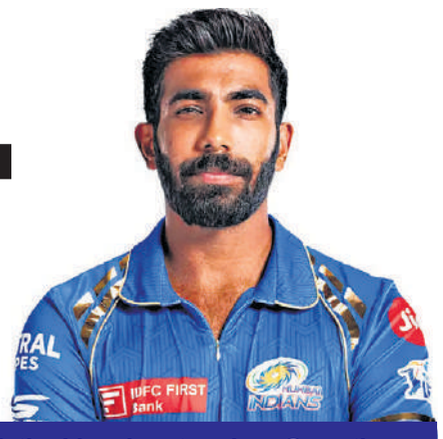

वर्ष : 02, अंक : 28 | रांची, मंगलवार, 07 जनवरी 2025 (पौष शुक्ल 08, संवत 2081), पृष्ठ : 12, मूल्य : 3 रुपये | email: jharkhandwanitaudyog@gmail.com

झारखंड में विमान सेवा पर कोहरे का कहर, कोलकाता-रांची फ्लाइट रद्द

प्रातः नागपुरी संवाददाता

रांची। झारखंड में कोहरे का कहर थमने का नाम नहीं ले रहा। खासकर विमान यात्रियों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। किसी का विमान रद्द हो जा रहा है, तो किसी की फ्लाइट लेट हो रही है। सोमवार को सुबह राजधानी रांची में घना कोहरा देखा गया। कोहरे का असर रविवार को भी विमान सेवाओं पर पड़ा। इस वजह से यात्रियों को एयरपोर्ट पर घंटों इंतजार करना पड़ा। कोलकाता-रांची विमान (6E7561) को रद्द कर दिया गया। एयर इंडिया एक्सप्रेस समेत अन्य विमानन कंपनियों के प्लेन देर से आए।

मुंबई-रांची समेत कई फ्लाइट्स को आने में हुई देरी : एयर इंडिया एक्सप्रेस की मुंबई-रांची फ्लाइट (आईएक्स 1237) सुबह 8:20 बजे की जगह सुबह 8:59 बजे रांची पहुंची। इंडिगो की पुणे-रांची फ्लाइट (6ई6484) सुबह 8:25 की जगह सुबह 9:33 बजे, इंडिगो की दिल्ली-रांची फ्लाइट (6ई5044) सुबह 8:40 बजे की जगह सुबह 9:09 बजे, (66484), एयर इंडिया एक्सप्रेस की दिल्ली-रांची फ्लाइट (आइएक्स 1116) की सुबह 10:00 बजे की जगह सुबह 10:22 बजे रांची में लैंडिंग हुई।

शेष पेज 08 पर

सीएम हेमंत ने 56 लाख बहनों को दिया नये साल का तोहफा

प्रातः नागपुरी संवाददाता

रांची। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने राज्य की 56 लाख से भी अधिक महिलाओं के बैंक अकाउंट में 'मंईयां सम्मान योजना' के तहत दिसंबर महीने की किस्त के रूप में ढाई-ढाई हजार रुपए की राशि ट्रांसफर की। रांची के नामकुम खोजाटोली ग्राउंड में सोमवार को एक वृहद् कार्यक्रम आयोजित में करीब दो लाख महिलाएं मौजूद रहीं। सीएम सोरेन ने महिलाओं से संवाद करते हुए कहा- 'यह राशि आपको आर्थिक तौर पर स्वावलंबी बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है। सरकार ने चुनाव के पहले जो संकल्प लिया था, उसे पूरा करते हुए आज हमें बेहद खुशी हो रही है।'

1,415 करोड़ की राशि 5661791 महिलाओं के खाते में ट्रांसफर : सीएम ने रिमोट का बटन दबाकर राज्य की कुल 56 लाख 61 हजार 791 महिलाओं के बैंक खाते में कुल 1,415 करोड़ 44 लाख 77 हजार 500 रुपए की राशि ट्रांसफर की। पांच महीने पहले जब यह योजना शुरू हुई थी, तब महिलाओं को प्रतिमाह एक हजार रुपए दिए जा रहे थे, लेकिन चुनाव के एलान के ठीक पहले सरकार ने कैबिनेट में यह राशि बढ़ाकर ढाई हजार करने की स्वीकृति दी थी।

छोटी-छोटी बचत से बच्चों का भविष्य बेहतर होगा : हेमंत सोरेन ने विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा कि हम उनकी तरह नहीं, जो अपने किए वादे से मुकर जाएं या झूठ बोलकर लोगों को गुमराह करें। उन्होंने महिलाओं से राज्य के विकास में भागीदारी की अपील करते हुए कहा कि आपकी छोटी-छोटी बचत से बच्चों का भविष्य बेहतर होगा। 'मईयां सम्मान' की राशि का उपयोग महिलाएं खुद और अपने बच्चों का कुपोषण दूर करने के लिए कर सकती हैं।

चुनाव में सहयोग- समर्थन के लिए जताया आभार : मुख्यमंत्री ने चुनाव के दौरान महिलाओं के सहयोग-समर्थन के लिए आभार जताते हुए कहा कि आपने हमें भरपूर आशीर्वाद देकर हमारी सरकार बनाई है। अब आपको स्वावलंबी और विकसित बनाने की चिंता हमारी है। कार्यक्रम को राज्य के वित्तमंत्री राधाकृष्ण किशोर ने भी संबोधित किया। इस मौके पर मंत्री चमरा लिंडा, विधायक कल्पना सोरेन सहित कई अन्य महत्वपूर्ण लोग उपस्थित रहे। देखें पेज 12 भी

खाते में ढाई-ढाई हजार रुपये आते ही झूम उठीं महिलाएं

योजना का विपक्षियों ने उड़ाया मजाक : मुख्यमंत्री

हेमंत सोरेन ने कहा कि देश और राज्य के सर्वांगीण विकास की परिकल्पना तब तक साकार नहीं हो सकती, जब तक महिला और पुरुष एक साथ कंधे से कंधा मिलाकर न चलें। हमलोगों ने इसी को ध्यान में रखकर महिलाओं को आगे लाने के लिए यह कदम उठाया है। उन्होंने कहा कि पहले की सरकारों ने महिला सशक्तीकरण की बातें तो बहुत कीं, लेकिन कोई ठोस कदम नहीं उठाया। हमने जब महिलाओं को प्रतिमाह एक हजार रुपए की राशि देने की शुरुआत की, तब हमारा मजाक उड़ाया गया। जब हमने यह राशि ढाई हजार रुपये करने का वादा किया, तो विपक्षियों ने इसे लेकर भी दुष्प्रचार किया। उन्होंने सवाल उठाया कि इतना पैसा सरकार कहां से लाएगी? आज हमने उन्हें जवाब दे दिया है।

संक्षिप्त खबरें

झारखंड बोर्ड 10वीं-12वीं परीक्षा के लिए मॉडल पेपर जारी, परीक्षाएं 11 फरवरी से

रांची। झारखंड एकेडमिक काउंसिल, रांची ने कक्षा 10 (मैट्रिक) और कक्षा 12 (इंटरमीडिएट) की बोर्ड परीक्षा 2025 के लिए मॉडल प्रश्न पत्र जारी कर दिए हैं। मॉडल प्रश्न पत्रों का उद्देश्य छात्रों को परीक्षा पैटर्न और प्रश्नों के स्वरूप को समझने में मदद करना है। इन पेपरों के माध्यम से छात्र यह जान सकते हैं कि परीक्षा में किस प्रकार के प्रश्न पूछे जा सकते हैं और उनकी तैयारी के लिए उसी अनुसार योजना बना सकते हैं। मॉडल पेपर हल करना न केवल छात्रों के आत्मविश्वास को बढ़ाता है, बल्कि टाइम-मैनेजमेंट, आंसर राइटिंग को भी बेहतर बनाता है। ये मॉडल प्रश्न पत्र सभी विषयों के लिए पीडीएफ प्रारूप में उपलब्ध हैं, जिन्हें छात्र आधिकारिक वेबसाइट jacexamportal.in पर जाकर आसानी से डाउनलोड कर सकते हैं।

खूंटी में पीएलएफआई के 2 उग्रवादी हथियार-गोली के साथ गिरफ्तार

खूंटी। प्रतिबंधित उग्रवादी संगठन पीपुल्स लिबरेशन फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएलएफआई) के 2 सदस्यों को पुलिस ने हथियार के साथ गिरफ्तार किया है। इन दोनों के पास से 1 एक नली देशी राइफल, 8 एमएम के 2 कारतूस, 7।65 एमएम की 9 कारतूस, 2 मोबाईल फोन और 4 पीएलएफआई के पर्चे बरामद हुए हैं। पीएलएफआई के इन दोनों सदस्यों के नाम विकास गोप (28) और निमेश गोप (21) हैं। दोनों को कर्रा थाना क्षेत्र के रोन्हे जंगल से गिरफ्तार किया गया है। शेष पेज 08 पर

छत्तीसगढ़ के बीजापुर में नक्सलियों का सुरक्षाबल के जवानों पर बड़ा हमला

धमाके से 20 फीट उछला वाहन, 10 फीट गहरा गड्ढा, 10 जवान हुए शहीद

छत्तीसगढ़। छत्तीसगढ़ के बीजापुर में नक्सलियों ने सुरक्षाबलों के जवानों पर बड़ा हमला किया। इसमें राज्य पुलिस यूनिट डीआरजी या डिस्ट्रिक्ट रिजर्व गार्ड के 10 जवान समेत एक नागरिक ड्राइवर शहीद हो गए। वे एंटी-नक्सल ऑपरेशन से ही लौट रहे थे, जब उनके वाहन को निशाना बनाया गया। इस हमले के बाद एनआईए के रायपुर ब्रांच की फॉरेंसिक टीम घटनास्थल की जांच के लिए बीजापुर पहुंच रही है। बताया जा रहा है कि आईईडी लदे वाहन को जवानों के वाहन के पास ब्लास्ट किया गया। धमाका इतना जोरदार था कि सड़क पर एक बड़ा गड्ढा हो गया और वाहन के परखच्चे उड़ गए। घटनास्थल से सामने आए वीडियोज में देखा जा सकता है कि आसपास वाहन के टुकड़े बिखरे हैं। जिस स्कॉर्पियो वाहन में जवान सवार थे, वो पूरी तरह से जलकर खाक हो गई।

डीआरजी के शहीद जवानों के नाम : कोरसा बुधराम, सोमडू वेंटिल, दुम्मा मड़काम, बमन सोढ़ी, हरीश कोर्राम, पण्डरू पोयम, सुदर्शन वेटी, सुभरनाथ यादव व अन्य ।

तीन दिनों के ऑपरेशन के बाद लौट रहे थे जवान: आईजी सुंदरराज

बस्तर रेंज के आईजी सुंदरराज पी ने बताया कि डीआरजी जवान ऑपरेशन से लौट रहे थे, जब उनपर हमला हुआ। उन्होंने बताया कि पिछले तीन दिनों से जिला बीजापुर, नारायणपुर और दंतेवाड़ा के सीमावर्ती इलाके में सुरक्षाबल ऑपरेशन चला रहे थे, जिसमें पांच माओवादी मारे गए थे और उनके शव भी बरामद किए गए थे। इस दौरान मुठभेड़ में भी एक जवान शहीद हो गए थे। आईजी ने बताया कि वे सर्च पूरी करके वापस लौट रहे थे, जब बीजापुर के बेदरे-कुटरू इलाके के अंबेली गांव के पास माओवादियों द्वारा लगाए गए आईईडी के ब्लास्ट होने से 10 डीआरजी जवान शहीद हो गए और उसमें एक ड्राइवर भी शहीद हो गए थे। हमले में शहीद हुए सभी जवानों के शव को बरामद कर लिया गया है।

इस खौफनाक ब्लास्ट का अंदाज इसी से लगाया जा सकता है कि धमाके के बाद वाहन के टुकड़े पास के ही पेड़ पर जा लटके। वाहन पूरी तरह नेस्तनाबूद हो गया और उसके स्टेरिंग भी घटनास्थल पर बिखरे पाए गए। हमले के बाद जवानों के हथियारों को भी बरामद किया गया है, जो पूरी तरह नष्ट हो गए। बता दें कि, यह विस्फोट बीजापुर जिले के बेदरे-कुटरू रोड पर 02.15 बजे हुआ। शेष पेज 08 पर

व्यर्थ नहीं जाएगा बलिदान, 2026 तक खत्म करके रहेंगे नक्सलवाद: शाह

सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म एक्स पर शहीदों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने कहा, बीजापुर (छत्तीसगढ़) में आईईडी ब्लास्ट में डीआरजी के जवानों को खोने की सूचना से अत्यंत दुःखी हूं। वीर जवानों के परिजनों के प्रति गहरी संवेदनाएं व्यक्त करता हूं। इस दुःख को शब्दों में व्यक्त कर पाना असंभव है, लेकिन मैं विश्वास दिलाता हूं कि हमारे जवानों का बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा। हम मार्च 2026 तक भारत की भूमि से नक्सलवाद को समाप्त करके ही रहेंगे।

पलामू में गैंगवार: बर्थडे पार्टी के बाद घर पर फायरिंग, दो की मौत

- गोली लगने से जख्मी हुए दो लोगों की हालत गंभीर, जांच में जुटी पुलिस

प्रातः नागपुरी प्रतिनिधि

पलामू। पलामू जिले के चैनपुर थाना क्षेत्र में रविवार-सोमवार की रात झारखंड के पांडेय गैंग के दो अपराधियों की गोली मारकर हत्या कर दी गई। गोलीबारी में दो अन्य लोग जख्मी हो गए हैं, जिन्हें इलाज के लिए पलामू के मेदिनीराय मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल में दाखिल कराया गया है। यह वारदात आपराधिक गिरोहों के बीच वर्चस्व की लड़ाई का नतीजा मानी जा रही है।

पलामू की एसपी रीष्मा रमेशन ने बताया कि मारे गए अपराधियों की पहचान भरत पांडेय और दीपक साव के रूप में हुई है। भरत पांडेय एक आपराधिक मामले में लंबे वक्त तक जेल में बंद था। वह बीते 22 दिसंबर को जेल से बाहर निकला था।

बताया गया कि पांडेय गिरोह के कई सदस्य पलामू जिले के चैनपुर थाना क्षेत्र के गरदा गांव में एक घर में दीपक साव नामक व्यक्ति के पुत्र की बर्थडे पार्टी में जुटे थे। रविवार-सोमवार की देर रात प्रतिद्वंद्वी आपराधिक गिरोह के लोग हथियारों से लैस होकर पहुंचे और घर का दरवाजा खुलवाकर अंधाधुंध फायरिंग शुरू कर दी। गोली लगने से भरत पांडेय और दीपक साव ने मौके पर ही दम तोड़ तोड़ दिया, जबकि घर के दो अन्य लोग जख्मी हो गए। देर रात फायरिंग से इलाके में दहशत फैल गई। शेष पेज 08 पर

प्रशांत किशोर को राहत, गिरफ्तारी के छह घंटे बाद अदालत से मिली जमानत

एजेंसियां

- प्रशांत किशोर को पटना पुलिस ने गिरफ्तार किया
- पीके और 43 समर्थकों को गैरकानूनी धरने के आरोप में पुलिस ने किया था गिरफ्तार
- सिविल कोर्ट में पीके को 25 हजार रुपये के मुचलके पर मिली जमानत

पटना। जनसुराज के सूत्रधार प्रशांत किशोर उर्फ पीके को पटना पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पीके के समर्थकों के साथ हुए हंगामे के बाद उन्हें मेडिकल जांच के लिए फतुहा ले जाया गया। इसके बाद उन्हें सिविल कोर्ट में पेश किया गया, जहां से उन्हें जमानत मिल गई। बता दें कि पीके और उनके 43 समर्थकों को गिरफ्तार किया गया था, साथ ही 15 वाहन भी जब्त किए गए थे। यह कार्रवाई पटना में उनके धरने के बाद हुई है, जिसके लिए प्रशासन ने उन्हें निर्धारित जगह पर धरना देने को कहा था, लेकिन उन्होंने मना कर दिया।

गैरकानूनी तरीके से धरना देने का आरोप : प्रशांत किशोर पर गैरकानूनी तरीके से धरना प्रदर्शन करने का आरोप था। पुलिस ने उन्हें पहले एम्स ले जाकर मेडिकल जांच कराने की कोशिश की, लेकिन उनके समर्थकों ने हंगामा कर दिया। शेष पेज 08 पर

महाकुंभ में 99 देशों से धर्म प्रतिनिधि लेंगे भाग

नई दिल्ली। श्री काशी विश्वनाथ धाम के निर्माण के बाद पहली बार त्रिवेणी संगम पर काशीपुराधिपति के दर्शन होंगे। प्रयागराज में बसने वाली टेंट सिटी में श्री काशी विश्वनाथ की प्रतिकृति विराजमान करायी जायेगी। टेंट सिटी में देशभर से आने वाले साधु-संत और श्रद्धालु बाबा विश्वनाथ के दर्शन कर सकेंगे। शेष पेज 08 पर

चीनी वायरस एचएमपीवी ने दी भारत में दस्तक, सामने आए पांच मामले

एजेंसियां

नई दिल्ली। चीन में ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस (एचएमपीवी) वायरस बहुत तेजी से फैल रहा है। यह वायरस अब धीरे-धीरे भारत में भी पैर पसारने लगा है। भारत में अब तक इस वायरस के पांच केस सामने आ चुके हैं। बेंगलुरु में दो मामलों के बाद गुजरात के अहमदाबाद में भी 2 महीने के एक बच्चे की रिपोर्ट पॉजिटिव आई है। साथ ही तमिलनाडु में भी दो बच्चों में एचएमपीवी वायरस की पुष्टि हुई है। इसमें से एक चेन्नई का मामला है, तो दूसरा सलेम जिले का। सरकार ने बताया कि दोनों की स्थिति स्थिर है और दोनों पर निगरानी रखी जा रही है। शेष पेज 08 पर

स्वास्थ्य विभाग ने की हेल्थ एडवाइजरी जारी

गुजरात स्वास्थ्य विभाग ने सोमवार को हेल्थ एडवाइजरी जारी की है। विभाग ने वायरस की गंभीरता को देखते हुए लोगों को सलाह दी है कि यदि आप खांसते या छींकते हैं, तो अपने मुंह और नाक को रुमाल से ढके रहें। बीमार हैं तो सार्वजनिक स्थानों पर जाने से बचें और सांस संबंधी समस्या होने पर तुरंत डॉक्टरों को दिखाएं।

ओयो ने अनमैरिड कपल को दिया झटका, नहीं कर सकेंगे होटल बुक

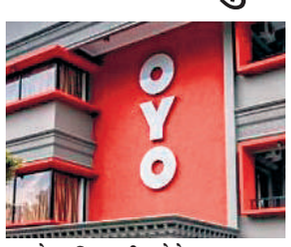

नई दिल्ली। ओयो, इसके नाम से शायद आप पहले से वाकिफ हों। जी हां, यह टूर और होटल बुकिंग प्लेटफॉर्म है। इसने अपने पार्टनर होटलों के लिए एक नया चेक-इन नियम पेश किया है। इसकी शुरुआत उत्तर प्रदेश के मेरठ से होगी और यह इसी साल से प्रभावी होगी। इसके अनुसार, अनमैरिड कपल को अब 'चेक-इन' की अनुमति नहीं दी जाएगी। इसका मतलब केवल पति-पत्नी ही होटल में कमरा ले सकेंगे। इसके लिए आपको जरूरी डॉक्यूमेंट दिखलाना होगा। नये नियम के तहत, सभी जोड़ों को 'चेक-इन' के समय अपने पति-पत्नी होने का प्रमाण देना होगा। इसमें ऑनलाइन की गई बुकिंग को भी शामिल किया गया है।

अनमैरिड कपल नहीं कर सकेंगे होटल में बुकिंग : कंपनी ने कहा कि ओयो ने अपने पार्टनर होटलों को से अनमैरिड कपल की बुकिंग को अस्वीकार करने को कहा है। शेष पेज 08 पर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जम्मू रेलवे डिवीजन का किया उद्घाटन, किया एलान

भारत में पटरियों पर जल्द दौड़ेगी बुलेट ट्रेन

एजेंसियां

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को नए जम्मू रेलवे डिवीजन का वर्चुअली उद्घाटन किया और इसे ऐतिहासिक मील का पत्थर बताया। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से रेलवे से जुड़ी विभिन्न परियोजनाओं के उद्घाटन और शिलान्यास के दौरान प्रधानमंत्री ने भारतीय रेलवे में पिछले दशक में हुए ऐतिहासिक बदलावों और बुनियादी ढांचे में किए गए सुधारों का उल्लेख किया।

जम्मू को दीं कई परियोजनाएं : प्रधानमंत्री ने इस अवसर पर जम्मू रेलवे डिवीजन का उद्घाटन किया, जो 742 किलोमीटर लंबे रेल मार्ग को जोड़ते हुए पठानकोट, जम्मू, उधमपुर, श्रीनगर, और बारामूला जैसे क्षेत्रों में संपर्क में सुधार करेगा। इस परियोजना से न केवल क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास को बल मिलेगा, बल्कि रोजगार के नए अवसर भी पैदा होंगे। शेष पेज 08 पर

बुलेट ट्रेन पर चर्चा

भारत में पहली बुलेट ट्रेन परियोजना पर बात करते हुए मोदी ने कहा कि हाई स्पीड ट्रेनों की मांग तेजी से बढ़ रही है। उन्होंने कहा, लोग लंबी दूरी तय करने में कम समय बिताना चाहते हैं। वह समय दूर नहीं जब भारत में पहली बुलेट ट्रेन दौड़ेगी।

कनाडा के पीएम जस्टिन ट्रूडो ने दिया इस्तीफा, पार्टी नेता का पद भी छोड़ा

कनाडा। कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने पीएम पद से इस्तीफा दे दिया है। साथ ही उन्होंने पार्टी नेता के पद से भी इस्तीफा दे दिया है। ये फैसला उन्होंने सरकार और व्यक्तिगत आलोचनाओं के बीच लिया है। देश को दिए संबोधन में ट्रूडो ने अपने इस्तीफे का एलान किया। उन्होंने बताया कि यह फैसला उन्होंने अपनी पत्नी और बच्चों के साथ लंबी चर्चा के बाद लिया है।

वहीं, अपने संबोधन में उन्होंने ये भी कहा कि पार्टी में आंतरिक विवादों ने कामकाज को काफी प्रभावित किया और उनको लगता है कि यही सही समय है पार्टी और देश को नई ऊर्जा और नेतृत्व देने का। हालांकि नए नेता के चुने जाने तक जस्टिन ट्रूडो पद पर बने रहेंगे। ट्रूडो ने साल 2013 में लिबरल नेता का पद संभाला था। जस्टिन ट्रूडो 11 सालों से लिबरल पार्टी के नेता और नौ वर्षों से प्रधानमंत्री के पद पर काबिज थे। शेष पेज 08 पर

संक्षिप्त

मोबाइल छीनने के मामले में दो लोग गिरफ्तार

रामगढ़। रामगढ़ पुलिस ने मोबाइल छीनने के मामले में दो लोगों को गिरफ्तार किया है। उन दोनों के विरुद्ध रामगढ़ थाने में प्राथमिकी दर्ज हुई थी। थाना प्रभारी कृष्ण कुमार ने बताया कि पतरातू बस्ती मुंडा टोली निवासी राज मुंडा उर्फ धमकू और 13 वर्ष की एक अन्य युवक ने मिलकर मोबाइल छिनतई किया था। वे लोग बाइक पर सवार होकर निकलते थे और राह चलते लोगों के हाथ से मोबाइल छीन कर भाग जाते थे। इस मामले में थाना कांड संख्या 395/2024 दर्ज किया गया था। पुलिस छिनतई में प्रयुक्त मोटरसाइकिल को बरामद करने का प्रयास कर रही है।

तोरपा के नये थाना प्रभारी ने दिया योगदान

खूंटी। सब इंस्पेक्टर मुकेश हेंब्रम

तोरपा के नये थाना प्रभारी बनाये गये है। रविवार की देर शाम उन्होंने तोरपा थाने में योगदान दे दिया। तोरपा के निवर्तमान थाना प्रभारी प्रभात रंजन पाण्डेय का तबादला सोयको थाना प्रभारी के रूप में हुआ है। तोरपा के नये थाना प्रभारी मुकेश हेंब्रम ने सोमवार को कहा कि क्षेत्र में विधि व्यवस्था बनाये रखना उनकी प्राथमिकता है। आम लोग बेझिझक थाना आएं तथा अपनी समस्या बतायें, उनकी समस्याओं का समाधान किया जायेगा।

मुखिया ने जरूरतमंदों के बीच किया कंबल का वितरण

लापुंग। दोलैचा पंचायत की मुखिया मालती रानी केरकेट्टा मालती रानी केरकेट्टा ने पंचायत अंतर्गत डिंबा गांव में बुजुर्ग व जरूरतमंदो के बीच कंबल का वितरण किया। मौके पर मुखिया ने कहा कि इस ठंड के समय में जरुरतमंदों को कंबल मिलने से ठंड से राहत मिलेगी। मेरा उद्देश्य है कि अपने पंचायत क्षेत्र के सभी बुजुर्गों व जरूरतमंदो को कंबल मिलें। मौके पर वार्ड सदस्य राजकुमार साहु, सहिया रीना देवी समेत कई लोग मौजूद रहें।

बारीडीह में बंदरों का आतंक, किसान परेशान

रामगढ़। बारीडीह पंचायत के ग्रामीण इन दिनों बंदरों के आतंक से परेशान हैं। बंदरों का समूह खेतों में लगी फसल को भारी नुकसान पहुंचा रहा है। जिससे किसान सुबह जल्दी खेतों पर जाने और देर शाम लौटने को विवश हैं। जिससे खेतों में लगे मटर, टमाटर, गोभी, आलू, फरसबीन सहित अन्य सब्जियों की रखवाली कर सकें। पंचायत के किसान बिरवल बेदिया ने कहा कि बीज का दाम इतना ज्यादा है कि किसान किसी तरह कर्ज लेकर सब्जी लगातें है।

ट्रांसपोर्ट नगर में गोलीबारी कांड का जायजा लेने पहुंचे एसपी, कहा

अपराधियों के खिलाफ होगी कार्रवाई

▶ व्यवसायियों को मिलेगी पूरी सुरक्षा

प्रातःनागपुरी प्रतिनिधि

रामगढ़। अपराधियों के जरिये लेवी वसूलने के लिए एक बार फिर व्यवसायी को निशाना बनाया गया है। कुजू ओपी क्षेत्र के ट्रांसपोर्ट नगर में हुई गोलीबारी कांड का जायजा लेने के लिए सोमवार को एसपी अजय कुमार घटनास्थल पर पहुंचे। उन्होंने घायल अनिल कुमार केसरी के परिजनों से बात की और उन्हें पूरी सुरक्षा का भरोसा दिलाया।

इस दौरान उन्होंने प्रत्यक्षदर्शियों से भी बात की। वहां लगे सीसीटीवी कैमरे के फुटेज पर भी एसपी ने बारीकी से नजर दौड़ाई। एसपी ने कहा कि अपराधियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई होगी। किसी भी सूरत में उन्हें पकड़ा जाएगा। साथ ही व्यवसायियों को पूरी सुरक्षा भी मुहैया कराई जाएगी।

एसपी ने कुजू ओपी प्रभारी के साथ-साथ अन्य थाना प्रभारी को भी अलर्ट रहने को कहा है। मांडू कुजू और वेस्ट बोकारो क्षेत्र में कोयला व्यवसायियों से रंगदारी वसूलने के लिए अपराधी इस तरह की वारदात को अंजाम दे रहे हैं। गैंग के हर स्लीपर सेल पर पूरी नजर रखी जाएगी और जांच अभियान भी तेज किया जाएगा। अनिल केसरी के सहयोगी संतोष केसरी से लेवी से जुड़े हुए मामले को लेकर पूछताछ की गई। एसपी अजय कुमार ने घटना का नामजद आरोपित राहुल दुबे के कुजू स्थित घर पर कुर्की जब्ती करने एवं उसके पिता परमहंस दुबे के ट्रांसपोर्ट नगर, कुजू स्थित ठिकाने को अविलंब ध्वस्त करने का फरमान सुनाया। मौके पर मौजूद कोयला कारोबारी प्रतिनिधियों के जरिये गश्त और सुरक्षा की मांग पर उन्होंने पुलिस की तरफ से हर संभव सुरक्षा प्रदान किए जाने की बात कहते हुए कारोबारी के जरिये अपने-अपने कार्यालय के आसपास सीसीटीवी कैमरा एवं लाइटिंग व्यवस्था सुदृढ़ करवाने पर जोर दिया। साथ ही अपराधियों के जरिये किसी भी प्रकार की धमकी भरे कॉल या सूचना मिलने पर तत्काल पुलिस देने की बात कही। एसपी के निर्देश पर कुजू पुलिस की ओर से राहुल दुबे को नामजद करते हुए अज्ञात पांच लोगो के खिलाफ एफआईआर दर्ज किया गया है। मौके पर डीएसपी चंदन वत्स, मांडू इंस्पेक्टर सुरेश लिंडा, कुजू ओपी प्रभारी मो नौशाद समेत कई पुलिस अधिकारी मौजूद थे।

मां विघ्नहरणेश्वरी मंदिर में हुई महाकाल की पूजा, झूमे श्रद्धालु

प्रातःनागपुरी प्रतिनिधि

रामगढ़। रामगढ़ बचाओ संघर्ष समिति की ओर से नववर्ष के पहले सोमवार को रामगढ़ जिला वासियों की सुख, समृद्धि और शांति के लिए महाकाल का पूजा किया गया। सोमवार को मेन रोड के सुभाष चौक के मां विघ्नहरणेश्वरी मंदिर परिसर में भगवान श्री महाकाल का भव्य दरबार सजाया गया। पुजारी संजयेंद्र गुरु ने वैदिक मंत्रोच्चार के बीच यजमान मोर्चा के केंद्रीय अध्यक्ष धनंजय कुमार पुट्स को पूजा कराई। पूजन, रुद्राभिषेक के बाद महाआरती की गई। महा आयोजन में हजारीबाग के सांसद मनीष जायसवाल उपस्थित होकर महाकाल की पूजा की एवं लोकसभा वासियो के सुख समृद्धि की कामना की। महोत्सव में रामगढ़ जिला के उपायुक्त चंदन कुमार ने महाकाल का आशीर्वाद ले लोगों के बीच प्रसाद वितरण कर महाभण्डारा का शुभारंभ किया। आयोजन में जिले के सभी पदाधिकारी व कार्यकर्ता के अलावा काफी संख्या महिला-पुरुष श्रद्धालु शामिल हुए। वहीं गायकों के भजनों पर शिव भक्त झूमे। संघर्ष समिति के केंद्रीय अध्यक्ष धनंजय कुमार पुट्स ने कहा कि नववर्ष की शुरूआत महाकाल के साथ हो, और राष्ट्र, राज्य व रामगढ़ जिला की तरक्की और जिला वासियों की समृद्धि की कामना की गई है।

फंदे से झूलता मिला महिला का शव, पति हुआ गिरफ्तार

प्रातःनागपुरी प्रतिनिधि

रामगढ़। रामगढ़ शहर के जरा टोला रानी बागी में एक महिला का शव घर में ही फंदे से झूलता हुआ मिला। मृतका कविता पांडे की मौत को उसके परिजनों ने हत्या करार दिया है। इस मामले में कविता पांडे के पिता तेज नारायण पांडे ने रामगढ़ थाने में हत्या के प्राथमिकी दर्ज कराई है। बिहार राज्य के आरा जिला अंतर्गत सलेमपुर गांव निवासी तेज नारायण पांडे ने सोमवार को पुलिस को बताया कि उनकी पुत्री की शादी वर्ष 2015 में जरा टोला रानी बागी निवासी प्रवीण पांडे के साथ हुई थी। उन्होंने प्रवीण पांडे, देवर प्रणीत पांडे और ससुर अक्षय पांडे पर उनकी बेटी को प्रताड़ित करने का आरोप लगाया है। आवेदन में बताया गया है कि बेटी ने मरने से पहले बताया था कि ये सभी उसे घर से बाहर निकालना चाह रहे हैं। जान से मारने की बात करते हैं। रविवार को दोपहर लगभग एक बजे दामाद प्रवीण पांडे ने मुझे फोन पर बेटी कविता की मौत की सूचना दी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इन सभी ने मिलकर ही मेरी बेटी की हत्या की है। मामले में रामगढ़ थाना पुलिस ने कांड संख्या 10/25 के तहत मामला दर्ज कर पति प्रवीण पांडे को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।

शहीद सरदार गया मुंडा को दी गई श्रद्धांजलि

खूंटी। अमर स्वतंत्रता सेनानी भगवान बिरसा मुंडा के सेनापति शहीद सरदार गया मुंडा की पुण्यतिथि पर सोमवार को उनके पैतृक गांव मुरहू प्रखंड के एटकेडीह में विधायक राम सूर्या मुंडा, पूर्व विधायक नीलकंठ सिंह मुंडा, उपायुक्त लोकेश मिश्रा, पुलिस अधीक्षक अमन कुमार सहित कई राजनीतिक और सामाजिक संगठनो ने उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किये। गया मुंडा के शहादत दिवस पर खूंटी के विधायक राम सूर्या मुंडा और पूर्व विधायक नीलकंठ सिंह मुंडा अलग-अलग समय पर उनके पैतृक गांव एटकेडीह जाकर उनकी प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। मौके पर विधायक ने गया मुंडा के वंशज रमई मुंडा के साथ अमर शहीद गया मुंडा की पूजा-अर्चना कर उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण किया।

ड्यूटी में कोताही बरतने वाले डॉक्टरों और कर्मियों पर होगी कार्रवाई : विधायक

प्रातःनागपुरी प्रतिनिधि

खूंटी। तोरपा के विधायक सुदीप गुड़िया तथा खूंटी के जिला बीस सूत्री कार्यक्रम क्रियान्वयन समिति के उपाध्यक्ष जुबैर अहमद ने रेफरल अस्पताल तोरपा के चिकित्सकों और कर्मचारियों को कड़ी चेतावनी दी कि ड्यूटी में कोताही बरतने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जायेगी।

विधायक और बीस सूत्री के उपाध्यक्ष ने सोमवार को रेफरल अस्पताल का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने अस्पताल में भर्ती रोगियों से मिल उनका हाल चाल जाना। मरीजों को दी जा रही सुविधाओं की जानकारी ली। अस्पताल के प्रभारी डॉ मिदेन मुंडू से अस्पताल में उपलब्ध संसाधनों के बारे में पूछा। प्रभारी ने बताया कि नया एक्स-रे मशीन नये भवन में लगाई जायेगी। इसके लिए जल्द से जल्द वायरिंग आदि का काम ठेकेदार को पूरा करने को कहा गया है। इस अवसर पर विधायक सुदीप गुड़िया व बीस सूत्री समिति उपाध्यक्ष जुबैर अहमद ने कहा कि चिकित्सा लोगों की आधारभूत आवश्यकता है।. लोग बडी उम्मीद से अस्पताल में आते हैं। डॉक्टर व स्वास्थ्यकर्मी ड्यूटी में कोताही न बरतें, ईमानदारी से ड्यूटी करें तथा अस्पताल में आने वाले मरीजों को त्वरित चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराएं। उन्होंने कहा कि अस्पताल की जरूरतों को लेकर जल्द विभागीय मंत्री से मिलेंगे।

सिविल सर्जन को दिया निर्देश

विधायक सुदीप गुड़िया तथा जुबैर अहमद ने सिविल सर्जन से बात कर एक हफ्ता के अंदर एक्सरे मशीन को चालू करने का निर्देश दिया। उन्होंने डीसी से बात कर रेफरल अस्पताल की व्यवस्थाओं को ठीक करने की कहा। निरीक्षण के मौके पर झामुमो प्रखंड अध्यक्ष रूबेन तोपनो, सोशल मीडिया प्रभारी राहुल केशरी जिला सह सचिव प्रदीप केशरी, जॉनसन आईंद आदि उपस्थित थे।

धूमधाम से मना गुरु गोविंद सिंह का प्रकाश उत्सव

प्रातःनागपुरी प्रतिनिधि

रामगढ़। सिक्खों के 10वें गुरु गुरु गोविंद सिंह जी का 358वां प्रकाश उत्सव 6 जनवरी को धूमधाम से मनाया गया । इस मौके पर सर्व प्रथम गुरुद्वारा साहिब में हेड ग्रंथी बाबा गुरजीत सिंह द्वारा पाठ किया गया।

मालूम हो की दो दिन पूर्व गुरुद्वारा साहिब में अखंड पाठ का आरम्भ किया गया था। आज सुबह अखंड पाठ की समाप्ति हुई। दिल्ली से आए प्रसिद्ध रागी इंद्रजीत सिंह ने शबद कीर्तन किया। वही, आज प्रभात फेरी गुरुद्वारा साहिब से झंडा चौक, वैष्णो देवी गली होते हुए गुरुद्वारा साहिब आई आज की प्रभात फेरी खालसा क्रिकेट क्लब द्वारा की गई। गुरुद्वारा साहिब में निशान साहब का चोला बदला गया जिसकी सेवा स्वर्गीय करनैल सिंह सैनी के परिवार द्वारा की गई। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में सिख श्रद्धालु उपस्थित हुए। रामगढ़ गुरुद्वारा साहिब के हेड ग्रंथी बाबा गुरजीत सिंह ने गुरु गोविंद सिंह के जीवनी पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि गुरुगोविंद सिंह ने किस तरह से अपने कॉम के लिए संघर्ष किए। गुरुगोविंद सिंह का जन्म स्थान पटना साहिब में है, जहां हर साल देश विदेश से श्रद्धालु शामिल होते है। रामगढ़ गुरुद्वारा साहिब में कार्यक्रम के पश्चात गुरु का लंगर बांटा गया।कार्यकतम में प्रधान परमदीप सिंह कालरा, अमरजीत सिंह सैनी,हैप्पी छाबड़ा,डॉ नरेंद्र सिंह सोनी जोगेंद्र सिंह जग्गी नरेंद्र सिंह चमन, रघुवीर सिंह छाबड़ा रमिंदर सिंह गांधी मनदीप सिंह गुरदीप सिंह सैनी,कुलवंत सिंह मारवाह, तेजेंद्र सिंह सोनी, मशहूर गायक सुरजीत सिंह छाबड़ा इकबाल सिंह, बबल छाबड़ा दलजीत सिंह किंगरा यश छाबड़ा, रसप्रीत सिंह जग्गी, जिगर छाबड़ा, रौनक,कमल जैसल,रणजीत सिंह,हरजीत सिंह,जसमीत कौर सोनी, रोमी छाबड़ा,गुरप्रीत कालरा उर्फ प्रीत, गुरबक्श कौर, सुमी जौली,सतविंदर कौर, रविंदर कौर पवार, कुदरत छाबड़ा, निक्की लांबा, मनप्रीत कौर सैनी लवली लांबा, बलविंदर कौर छाबड़ा, बबली सोनी, सोमा जस्सल आदि शामिल हुए।

150 लोगों के बीच कंबल का हुआ वितरण

भुरकुंडा। पंचायत भवन में सोमवार को जरूरतमंदों महिला और पुरूषों के बीच कंबल का वितरण किया गया। मुखिया अजय पासवान की अगुवाई में सभी वार्डों से चिन्हित किए गए 150 जरूरतमंदों को राज्य सरकार द्वारा उपलब्ध कराए गए कंबल दिए गए। अवसर पर मुखिया अजय पासवान ने कहा कि कंबल से गरीब और असहायों बढ़ती ठंड में काफी राहत मिलेगी। कहा कि ठंड से राहत दिलाने के लिए आगे भी प्रयास किया जाएगा। जरूरतमंदों की हर संभव मदद का प्रयास किया जाएगा। मौके पर पंचायत समिति सदस्य दीपक कुमार भुइंया, संजीत राम, रौशन पासवान,जितेंद्र तिवारी, पुष्पा देवी, उमेश कुमार नायक, सुनीता देवी, किरण देवी, प्रीति देवी सहित कई मौजूद थे।

गांवों में जंगली हाथियों उत्पात जारी

इटकी। इटकी और कर्रा प्रखण्ड के सीमावर्ती गांव में जंगली हाथियों का उत्पात जारी है। एक सप्ताह के अंदर उन्मत हाथियों ने इटकी सीमा क्षेत्र से सटे कर्रा के कदली गांव के सोरिया उरांव (37) और छुनकू बाखला (70) नामक दो लोगों कुचल कर मौत का घाट उतार चुका है। वही रविवार की रात खुटियारी और भंडरा गांव के खेतों में उत्पात मचा कर फसलों को भारी नुकसान पहुंचाया है। किसान सुरेश उरांव बताया कि खुटियारी गांव स्थित करीब 20 एकड़ भूमि में मटर ,फ्रेंचबीन और आलू फसल लगा रखे है किन्तु हाथियों ने जंगल से निकल फसलों को अहार बनाते हुए रौंद डाला है। जंगली हाथियों ने भोन्दू उरांव, जितराम उरांव, घूरणदीप उरांव , बिरसा उरांव , सुरेश उरांव सहित अन्य किसानों के फसलों को भारी नुकसान पहुंचाया है। इधर भंडरा गांव में भी फसलों को नुकसान पहुंचाने की सूचना है। अबतक हाथियों ने फसलों को नुकसान पहुंचाकर किसानों को लाखों की क्षति पहुंचा चुकें है। कदली गांव में पिछले 28 दिसम्बर की रात खलिहान पर गहरी नींद में सो रहे सोरिया उरांव को कुचल कर मार डाला जबकि छुनकू बाखला नामक वृद्ध को उसके मकान के निकट सूड़ से पटक कर उसकी जान ले ली। क्षेत्र में लगातार हाथियों के आतंक से ग्रामीण दहशत में है। लोग अपनी जानमाल की सुरक्षा रातजगा कर कर रहे है। हाथियों के भय से लोग सूरज ढलने से पहले ही राह चलना छोड़ कर घरों में दुबक जाते है। ग्रामीणों ने बताया कि खुरियारी और भंडरा के बीच जंगल में हथियों ने अड्डा जमा रखे है। शाम ढलते ही हाथी अलग अलग बट कर खेतों पहुंचकर फसलों को भारी बरबाद कर रहे है। हाथियों का आतंक से खुटियारी , भंडरा , सौका, हरमू रानीडीह सहित कई अन्य गांव प्रभावित है।

महिलाओं को ऑपरेशन के बाद साफ सुथरे बेड भी नसीब नहीं

प्रातःनागपुरी प्रतिनिधि

सिल्ली। सिल्ली सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में सोमवार को अव्यवस्थाओं के बीच 24 महिलाओं का बंध्याकरण किया गया। महिलाओं को आपरेशन के बाद साफ सुथरे बेड भी नसीब नहीं हुआ।

ऑपरेशन के बाद कम बेड पर ज्यादा संख्या में महिलाओं को बेहोशी के हाल में किसी तरह सुला दिया गया। कई महिलाएं एक दूसरे से बिल्कुल लदकर सोई पाई गई। अस्पताल के वार्ड में छह बेड पर करीब दर्जन भर महिलाओं को सुलाया गया। इतना ही नहीं जगह और बेड के अभाव में कईयों को जमीन पर टेंट हाउस से मंगाए गए गंदे गद्दे पर सुला दिया गया। उन गद्दों पर एक साफ चादर तक नहीं दिया गया। अस्पताल के कार्यालय में ताला बंद था। बीपीएम शशि चौबे को फोन पर पूछा गया तो उन्होंने कहा मैं सीएस कार्यालय में मेटिंग में हूं। गड़बड़ी एवं अव्यवस्था कैसे हुई है मैं फोन करके देखता हूं। जब यह कहा गया कि जितनी बेड की क्षमता है उतना ही ऑपरेशन क्यों नहीं किया जाता ताकि मरीज को असुविधा न हो तो उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य सहियाओं के दबाव के कारण ही ऐसी स्थिति हो जाती है। प्रभारी चिकित्सक डॉ प्रियंका ने बताया कि आज छुट्टी और विभागीय कारणों से वह अस्पताल नहीं गई थी। बंध्याकरण में हुई अव्यवस्था की जानकारी लेकर उसे हर हाल में दुरुस्त किया जाएगा।

विधिक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

प्रातःनागपुरी प्रतिनिधि

खूंटी। झालसा रांची के निर्देश पर प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह डालसा अध्यक्ष रसिकेस कुमार के मार्गदर्शन में सोमवार को नालसा के जरिये संचालित 90 दिवसीय आउटरीच अभियान पर जुरदाग पंचायत, सीलादोन पंचायत और आवासीय बालिका उच्च विद्यालय कुंदी में विधिक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

यह कार्यक्रम लगातार 90 दिनों तक लगातार चलता रहेगा। इस अभियान में बच्चों के शिक्षा से जुड़े अधिकार, डायन प्रथा, वृद्धा, विधवा पेंशन से संबंधित मामलों की जानकारी दी गई। डालसा के पीएलवी ने कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को जागरूक करते हुए डायन प्रथा से संबंधित जुड़े अधिकार और इससे पीड़ित परिवार को सूचित करने का सही तरीका एवं जगह के बारे में जागरूक किया। उन्होंने बताया कि डायन शब्द कहकर किसी भी व्यक्ति को प्रताड़ित करना कानूनन अपराध है। इससे पीड़ित परिवार यदि थाने में सूचित करता है, तो उस व्यक्ति को सजा एवं जुमार्ना दोनों हो सकता है। साथ ही वृद्धा एवं विधवा पेंशन योजना के बारे में और विद्यालय के बच्चों को उनके शिक्षा के अधिकार तथा कल्याणकारी योजनाओं के बारे में जानकारी दी गई।

तीन दिनी प्रवास में पहुंचे पूर्व जिला अध्यक्ष जेलेंद्र चौधरी

सिल्ली। तीन दिवसीय प्रवास में सिल्ली पहुंचे भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष सह प्रदेश कार्य समिति के सदस्य जेलेंद्र चौधरी सोमवार को तीन दिवसीय प्रवास में सोमवार को सिल्ली पहुंचे। जहां वे भाजपा पार्टी कार्यालय में बैठक में शामिल हुए। बैठक की अध्यक्षता सिल्ली मंडल अध्यक्ष अंबुज रजक ने की। जेलेंद्र चौधरी ने कहा कि तीन दिवसीय प्रवास के दौरान नए कार्यकताओं को भाजपा से जोड़ने का काम किया जाएगा। उन्हें कार्यकताओं को पार्टी के आदर्श और ध्येय से अवगत कराते हुए श्रेष्ठ भारत के निर्माण में सहयोग करने की अपील की। साथ ही उन्होंने कहा कि सदस्यता अभियान 22 दिसंबर 2024 से 14 जनवरी 2025 तक पूरे भारतवर्ष में चलाया जा रहा है। इसके लिए कार्यकर्ता गांवों में जाकर लोगो को भाजपा का प्राथमिक सदस्य बनाने में जुटे हैं। इस मौके पर ललित महतो, विश्वनाथ महतो, हरिहर महतो, चितरंजन मंडल, शिबू हजाम, राजेंद्र साय, रविन्द्र साहू, सुधीर साहू, कर्ण महतो, परशुराम राम महतो, श्रीपद महली सुखराम बेदिया, अमित बेदिया चंदन गोस्वामी आदि उपस्थित थे।

वन भोज सह मिलन समारोह का आयोजन

सिल्ली। कोचों हरिहर मेला स्वर्णरेखा नदी तट पर ग्राम विकास उच्च विद्यालय सिल्ली के वर्ष 2008 मैट्रिक पास आउट बैच के द्वारा नववर्ष के उपलक्ष्य पर वन भोज सह मिलन समारोह का आयोजन किया। वनभोज में लगभग 16 वर्षों के बाद सभी दोस्त एक साथ मिले सभी दोस्तों अपने स्कूल के दिनों को और साथ बिताये पलों को याद करते हुए भावुक हो गये। बिपिन चंद्र महतो पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि सभी दोस्त विभिन्न सरकारी एवं निजी क्षेत्र में विभिन्न पदों पर सेवा दे रहे हैं जैसे रेलवे, बैंक, शिक्षा, पुलिस, केंद्रीय पुलिस बल, सेना एवं अन्य सरकारी पदों में सेवा दें रहें हैं। साथ कई ऐसे छात्र हैं जो निजी क्षेत्र व व्यवसाय में बेहतर कर रहे हैं। इस मौके परबिपिन चंद्र महतो, ऋषिकेश महतो, सुखदेव लोहरा, अजय बाउरी, अजय कोइरी, जीतेन्द्र महतो, राकेश, मिथिल राज, जगतपाल महतो, हराधन गोराई, केशव महतो, राजकुमार, चन्दन, राजू गोराई, अरुण, अमन, नरेश, गोपी सिंह, पवन, अशोक, बीरु, रवि समेत काफी संख्या दोस्त उपस्थित थे।

खेल मैदान को बेचने का ग्रामीणों ने किया विरोध

प्रातःनागपुरी प्रतिनिधि

खूंटी। कर्रा प्रखंड के डहकेला सिथत राजकीय मध्य विद्यालय के खेल मैदान को बेचे जाने का वहां के छात्रों, शिक्षकों और ग्रामीणों ने कड़ा विरोध किया है। खेल मैदान को बेचने के विरोध में सोमवार को ग्रामीणों की बैठक खेल मैदान में आयाजित की गई। बैठक में स्कूल के प्रधानाध्यापक

सहित कई शिक्षकों और छात्रों ने भाग लिया। बैठक में वक्ताओं ने कहा कि 1949 ईस्वी मं जरियागढ़ के तत्कालीन राजा ठाकुर महेंद्र नाथ शाहदेव ने स्कूल के नाम पर जीन जान दी थी। उसी चार एकड़ 59 डिसमिल में स्कूल और खैल मैदान का संचालन होता है। ग्रामीणों ने कहा कि स्कूल मैदान बचने के विरोध में आठ जनवरी को उसी स्थान पर ग्रामीणों की विशालसभा आयोजित की जायेगी और मैदान कों बचाने के लिए आगे की रणनीति बनाई जायेगी। मौके पर पत्रकारों से बातचीत करते हुए स्कूल के प्रधानाध्यापक संजय एरियल कंडुलना ने कहा कि 1949 से खेल मैदान पर स्कूल का कब्जा है। स्कूल के सभी तरह के आयोजन उसी मैदान में किया जाता हुआ। पिछले 74 वर्षों से मैदान पर स्कूल का कब्जा है। इस जमीन को किसी भी हाल में बेचने नहीं दिया जाएगा। सामाजिक कार्यकर्ता रवींद्र सिंह ने कहा कि कुछ लोग अपने निजी स्वार्थ के लिए शिक्षा के मंदिर की जमीन को बचे रहे हैं, इसका कड़ा विरोध किया जाएगा। उन्होंने बताया कि ठाकुर जयेंद्र नाथ शाहदेव और प्रतिमा देवी द्वारा उक्त जमीन को गोविंदपुर के रूपेश कुमार सोनी और चिजय कुमार साहू के पास बेच दिया गया। उन्होंने कि स्कूल के मैदान को बचाने के लिए आठ जनवरी को आहूत बैठक में रणनीति बनाई जाएगी और जरूरत पड़ी, तो जम्हार बंद जैसे आंदोलनात्मक कदम उठाये जायेंगे। उन्होंने कहा कि उक्त बैठक है। उन्होंने कहा कि 1990 कें पंडा पर्चा में भी इसका जिक्र है। उन्होंने कहा कि 1949 से 1975 तक विद्यालय का संचालन आदिम जाति सेवा मंडल द्वारा किया जाता था। 1975 से इसका सरकारीकरण में विधायक सुदीप गुड़िया को भी आमंत्रित किया गया है। बैठक में शिक्षक श्याम कुमार साहू, देवेंद्र सिंह, अभय सिंह, गजी सिंह, पारूल होरो, गणेश केशरी,जयपाल लोहरा, भोला गोप, डुडरू पाहन, पवन गोप, सुरेंद्र गोप सहित काफी संख्या में ग्रामीण उपसिथत थे। इस संबंध में जमीन को बेचने वाले ठाकुर जयेंद्र नाथ याहदेव ने कहा कि जमीन उनकी है और ऑन लाइन भी जमीन का खाता प्लॉट चढ़ा हुआ है। कुछ लोग ग्रामीणों को बहका कर इसका विरोध करा रहे है। उन्होंने कहा किं ग्रामीणों की बैठक में डनहें क्यों नहीं बुलाया गया। जब भी ग्रामीणों द्वारा उन्हें बुलाया जाएगा, वे बैठक में अपनापक्ष जरूर रखेंगे।

संक्षिप्त

वी दे रहा अनलिमिटेड डेटा

रांची। दूरसंचार सेवा प्रदाता वी ने 'सुपरहीरो' का लॉन्च किया है। यह दोपहर 12 बजे से रात 12 बजे तक अनलिमिटेड डेटा का एक्सेस देता है। इसे हाई स्पीड डेटा की बढ़ती जरूरत को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया गया है। जो उपभोक्ता सालाना पैक या पैसा वसूल ऑफर्स चाहते हैं, उनके लिए वी तीन एन्युअल रिचार्ज लेकर आया है।

बीएयू के सेवानिवृत्त एसओ समीउल्लाह अंसारी की मृत्यु

रांची। बीएयू के सेवानिवृत्त सेक्शन ऑफिसर (एसओ) मोहम्मद समीउल्लाह अंसारी (65) की रविवार देर शाम मृत्यु हो गई। परिजनों के अनुसार उन्हें हार्ट अटैक हुआ था, जिसके बाद मेदांता में भर्ती कराया। वहां इलाज के दौरान उनकी मौत हो गयी। उनकी मौत की जानकारी मिलते ही बीएयू के अधिकारी, कर्मचारी व पैतृक गांव हुसीर के ग्रामीणों में शोक व्याप्त हो गया। दिवंगत अंसारी का पार्थिव शरीर को हुसीर गांव स्थित कब्रिस्तान में सोमवार दोपहर 2 बजे जनाजे की नमाज पढ़कर मिट्टी दी गई। उनके अंतिम यात्रा में बीएयू के अधिकारी, कर्मचारी व क्षेत्र के कई गणमान्य व्यक्ति सहित सैकड़ों लोग शामिल हुए। वे हुसीर अंजुमन कमेटी के कोषाध्यक्ष पद पर रहकर समाजिक कार्यों में भी शामिल रहे। उनके निधन पर विधायक सुरेश कुमार बैठा, कांके प्रमुख सोमनाथ मुंडा, डॉ. डीके रुसिया, हुसीर अंजुमन के सदर सुलेमान अंसारी, नायब सदर शकिल अंसारी, सेक्रेट्री नसीम अंसारी, नायब सेक्रेट्री नेसार अहमद, जमील अख्तर, मुखिया आरती उरांव, पूर्व मुखिया विजय उरांव, कयुम अंसारी आदि ने शोक जताया है।

विशेष लोक अदालत 22 फरवरी को, तैयारी जोरों पर

रांची। झालसा के निर्देश पर न्यायायुक्त-सह-अध्यक्ष के मार्गदर्शन में विवाह एवं चेक अनादरण से संबंधित विशेष लोक अदलात का आयोजन 22 फरवरी को होना सुनिश्चित हुआ है। दिनांक 17 फरवरी से 21 फरवरी, 2025 तक विवाह एवं चेक अनादरण से संबंधित मामलों पर बातचीत के लिए प्री-लोक अदालत की बैठकें आयोजित की जायेगी। डालसा रांची की तैयारी जोरों पर है। पारिवारिक न्यायालयों व एन.आई. एक्ट न्यायालय से वादकारियों को अधिक से अधिक नोटिस भेजा जा रहा है, ताकि अधिक से अधिक वादों का निस्तारण किया जा सके।

बाबूलाल मरांडी ने राज्य सरकार पर साधा निशाना

रांची : भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी ने मुख्यमंत्री राज्य सरकार पर निशाना साधा है। उन्होंने सोमवार को सोशल मीडिया एक्स पर ट्वीट कर कहा है कि चुनाव के दौरान किए गए वादे केवल सत्ता हासिल करने का साधन बनकर रह गया। यह न केवल जनादेश का अपमान है, बल्कि जनता के भरोसे का भी अपमान है। इंडी गठबंधन ने 450 रुपये में गैस सिलेंडर और 3200 रुपये प्रति क्विंटल धान खरीदने का वादा किया था तब जनता ने इसे अपने भविष्य की उम्मीद के तौर पर देखा था। उन्होंने कहा कि अब जब सरकार से इन वादों को पूरा करने की मांग की जा रही है, तो मुख्यमंत्री से लेकर सभी मंत्री बहाने गढ़ने में व्यस्त हैं।

पुलिस मुख्यालय सहित राज्य की सभी जिला इकाइयों में साप्ताहिक परेड आयोजित

रांची : पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) अनुराग गुप्ता के निर्देश पर सोमवार को पुलिस मुख्यालय और राज्य के सभी जिला इकाइयों में साप्ताहिक परेड का आयोजन किया गया। पदस्थापित, प्रतिनियुक्ति पुलिस पदाधिकारियों एवं कर्मियों को शारीरिक-मानसिक रूप से चुस्त-दुरुस्त रखने के लिए साप्ताहिक परेड का आयोजन प्रारंभ हुआ।

जिथे बाबा पैर धरे पूजा आसन थापन होआ...

प्रकाश पर्व के उपलक्ष्य में रात को सजाया गया विशेष दीवान

प्रातः नागपुरी संवाददाता

रांची। गुरुद्वारा श्री गुरु नानक सत्संग सभा में दशमेश पिता श्री गुरु गोविंद सिंह जी महाराज का पावन प्रकाश पर्व सोमवार को मनाया गया। इस अवसर पर सजाए गए दीवान की शुरूआत शाम आठ बजे स्त्री सत्संग सभा की बबली दुआ के 'जिथे बाबा पैर धरे पूजा आसन थापन होआ...' शबद गायन से हुई।

इसके बाद गुरुद्वारा के रागी जत्था भाई महिपाल सिंह जी ने 'जिऊ पारब्रह्म चित आइया सो घर दय वसाइया...' और 'तहीं परकाश हमारा भयो पटना शहर विखे भव लयो...' शबद गायन किया।

गुरुद्वारा के हेड ग्रंथी ज्ञानी जिवेंदर सिंह ने गुरमत विचार साझा करते हुए गुरु गोविंद सिंह की जीवनी और उनके चार साहबजादों के बलिदान के बारे में साध संगत को विस्तार से बताया।

विशेष रूप से शिरकत करने पहुंचे दरबार साहिब अमृतसर के हजूरी रागी जत्था भाई बलराज सिंह जी ने 'सूरा सो पहचानिए जो लड़े दीन के हेत...' और 'वाहो वाहो गोबिंद सिंह जी, कलगियां वाले गोविंद सिंह जी...' जैसे शबद गायन कर साध संगत को गुरवाणी से जोड़ा।

प्रकाश पर्व के उपलक्ष्यज में रखे गए श्री अखंड पाठ साहिब जी का भोग रात 12 बजे हुआ। आरती साहिब जी का पाठ एवं बधाई का शबद भाई महिपाल सिंह जी द्वारा पढ़ा गया। श्री अनंद साहब जी के पाठ, अरदास, हुकुमनामा एवं कढ़ाह प्रशाद वितरण के साथ दीवान के समाप्ति रात 1.30 बजे हुई। सत्संग सभा द्वारा रागी जत्था को गुरु घर का सरोपा ओढ़कर सम्मानित किया गया। दीवान समाप्ति के उपरांत गुरु का अटूट लंगर चलाया गया।

दीवान में सुंदर दास मिढ़ा, हरविंदर सिंह बेदी, अशोक गेरा, नरेश पपनेजा, मनोहर लाल मिढ़ा, मोहन काठपाल, हरीश मिढ़ा, बसंत काठपाल, अश्विनी सुखीजा, ललित गखड़, रमेश गिरधर, नीरज गखड़, मोहन लाल अरोड़ा, भगवान थरेजा, राकेश गिरधर, राज कुमार सुखीजा, जितेश बेदी, भरत गाबा, प्रताप तलेजा, जितेंद्र मुंजाल, गौरव मिढ़ा, नंद किशोर मिढ़ा, मनीष गिरधर, अमन सचदेवा, कमल अरोड़ा, रिक्की मिढ़ा, कमल धमीजा, ज्ञान मादन पोत्रा, प्रवीण मुंजाल, राकेश काठपाल, दुर्गी देवी मिढ़ा, अंजू पपनेजा, खुशबू मिढ़ा, अंजू काठपाल, रजनी मक्कड़, बंसी मल्होत्रा, अमर मुंजाल, मंजीत कौर, ममता थरेजा, मनोहरी काठपाल, गूंज काठपाल, किरण अरोड़ा, पायल मल्होत्रा, रजनी तेहरी समेत अन्य शामिल थे।

जनता दरबार में मंत्री दीपिका पांडे ने सुनीं समस्याएं, अधिकारियों को दिए निर्देश

प्रातः नागपुरी संवाददाता

रांची। कांग्रेस ने जन समस्याओं के समाधान की सीधी पहल शुरू कर दी है। इस क्रम में सोमवार को कांग्रेस भवन में जनता दरबार का आयोजन किया गया, जिसमें ग्रामीण विकास मंत्री दीपिका पांडे सिंह ने आम लोगों की समस्याओं को सुना और संबंधित अधिकारियों को त्वरित निराकरण का निर्देश दिया। इस दौरान 20 लोगों ने समस्याओं को रखा।

प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता सोनाल शांति के मुताबिक, जनता दरबार के पश्चात पत्रकारों से बातचीत में दीपिका पांडे सिंह ने कहा कि यह सरकार आम लोगों के हित की सरकार है। आज के जनता दरबार में मुख्य शिकायत आंचल और प्रखंड ऑफिस का है। आसानी से और समय सीमा में होने वाली शिकायतों को अधिकारियों को अविलंब दूर करना चाहिए। जब कोई बड़ी योजना चलती है तो कुछ शिकायते आती हैं। अबुआ आवास बिल्कुल नयी योजना थी, शायद यही वजह है कि इसके कार्यान्वन में कुछ शिकायतें आती हैं, जिसे दूर किया जा रहा है। अबुआ आवास के मामले में अधिकांश शिकायतकर्ता है ऐसे हैं, जिन्हें पहले किसी अन्य आवास योजना से आवास आवंटित हो गया है लेकिन तीन कमरों का आवास शौचालय एवं किचन के साथ होने के कारण अबुआ आवास लोकप्रिय योजना है। इसलिए लोग चाहते हैं कि उन्हें अबुआ आवास मिले लेकिन पहले से लाभुक व्यक्तियों को यह नहीं मिल पा रहा है।

मंत्री ने कहा कि राज्य सरकार के सर्वे के अनुसार, अभी झारखंड में 24 लाख आवास की आवश्यकता है लेकिन केंद्र सरकार के सर्वे के अनुसार 16 लाख आवास की आवश्यकता है। हमने मांग की है कि झारखंड को प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत आवश्यक आवासों का आवंटन केंद्र सरकार करे। झारखंड सरकार द्वारा अभी 6.50 लाख आवास का आवंटन किया गया है, जो बनने तथा आवंटन की प्रक्रिया में है।

मंत्री ने कहा कि केंद्र सरकार झारखंड की योजना को मॉडल बनाकर तीन कमरों का शौचालय किचन सहित आवास बनाए ताकि महिलाओं और अन्य लोगों को बाद में परेशानियों का सामना न करना पड़े। प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत अभी झारखंड को सिर्फ 125000 आवास का आवंटन हुआ है जबकि आवश्यकता केंद्र के अनुसार 16 लाख आवास की है। केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री के समक्ष सारे तथ्यों को रखा गया है। हमने मांग किया है कि प्रधानमंत्री आवास योजना में मिलने वाली 120000 की राशि को 2 लाख किया जाए। यदि केंद्र सरकार जनता को छत मुहैया कराना चाहती है तो आवास की राशि तथा आवासों के आवंटन की संख्या बढ़ानी चाहिए।

मंईयां सम्मान योजना के राशि वितरण पर मंत्री ने कहा कि नए साल के तोहफे के तौर पर महिलाओं को महागठबंधन द्वारा चुनाव पूर्व घोषित 2500 की राशि आज बहनों के खाते में सीधे स्थानांतरित हुई है, जो महिला स्वावलंबन की दिशा में उठा एक बड़ा कदम है। निश्चित रूप से इस राशि से राज्य की महिलाओं को आर्थिक मजबूती मिलेगी।

उल्लेखनीय है कि इस कड़ी में सात जनवरी को 11:00 से 12:00 बजे तक कांग्रेस भवन में आयोजित जनता दरबार में स्वास्थ्य मंत्री डॉ इरफान अंसारी जन समस्याओं को सुनेंगे। स्वास्थ्य विभाग सहित अन्य विभाग की समस्याओं को भी मंत्री के समक्ष आम लोगों के द्वारा रखा जा सकता है।

हाई कोर्ट में उपस्थित हुई गृह सचिव, होमगार्ड डीजी को सात को उपस्थित होने का निर्देश

प्रातः नागपुरी संवाददाता

रांची। झारखंड हाई कोर्ट में सोमवार को होमगार्ड जवानों को समान काम के बदले समान वेतन देने के मामले में दायर अवमानना याचिका पर सुनवाई हुई। इस दौरान हाई कोर्ट के आदेश के पर सिर्फ गृह सचिव वंदना दादेल ही कोर्ट में हाजिर हुईं। हाई कोर्ट के पिछले आदेश के बाद भी पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) के कोर्ट में सशरीर उपस्थित नहीं होने पर कोर्ट ने कड़ी नाराजगी जताई। मौखिक रूप से कोर्ट ने कहा कि अदालत के आदेश को हल्के में ना लिया जाए। कोर्ट ने अपने आदेश को संशोधित करते हुए अगली सुनवाई में सात जनवरी को डीजी होमगार्ड को कोर्ट में सशरीर उपस्थित होने का निर्देश दिया। हाई कोर्ट के जस्टिस डॉ. एसएन पाठक की बेंच में मामले की सुनवाई हुई। प्रार्थी की ओर से इस केस की बहस सर्वोच्च न्यायालय की अधिवक्ता अभय कांत मिश्रा और झारखंड हाई कोर्ट के अधिवक्ता दिलीप चक्रवती एवं अशोक सिंहा ने की।

पूर्व में कोर्ट ने राज्य सरकार को 25 अगस्त, 2017 के प्रभाव से होमगार्ड जवानों को बढ़े हुए वेतन का लाभ देने का निर्देश दिया था। उन्होंने कहा कि आदेश की तारीख से पुलिसकर्मियों के समकक्ष होमगार्ड जवानों को समान कार्य के लिए समान वेतन का लाभ देना होगा। कोर्ट ने दो माह में एरियर का भुगतान करने का निर्देश दिया था। आदेश का अनुपालन नहीं होने पर राज्य के गृह सचिव और डीजीपी को सशरीर हाजिर होने का निर्देश दिया था।

उल्लेखनीय है कि प्रार्थी झारखंड होमगार्ड वेलफेयर एसोसिएशन के प्रदेश उपाध्यक्ष अजय प्रसाद ने अवमानना याचिका दायर की है। प्रार्थी ने एकल पीठ के आदेश का अनुपालन कराने की मांग की है। इस मामले में राज्य सरकार की एसएलपी सुप्रीम कोर्ट से पहले ही खारिज हो चुकी है। सुप्रीम कोर्ट ने झारखंड हाई कोर्ट के आदेश में हस्तक्षेप से इनकार कर दिया था तथा एसएलपी खारिज कर दी थी। होमगार्ड जवानों अजय प्रसाद एवं अन्य ने पुलिसकर्मियों के समान वेतन और अन्य लाभ के लिए झारखंड हाई कोर्ट में याचिका दायर की है। प्रार्थियों का कहना था कि होमगार्ड का पोस्ट सिविल पोस्ट है। क्योंकि, वह पुलिसकर्मियों की तरह ड्यूटी करते हैं। इसलिए नियमित पुलिसकर्मियों की तरह उन्हें भी लाभ दिया जाए।

यूको बैंक ने मनाया अपना 83वां स्थापना दिवस

प्रातः नागपुरी संवाददाता

रांची : 06 जनवरी को यूको बैंक ने अपना 83वां स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर देशभर में यूको बैंक द्वारा कई कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसी क्रम में यूको बैंक, अंचल कार्यालय रांची द्वारा भूसुर-लालखटंगा अवस्थित बाल आश्रय गृह, आशा सेंटर में विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व कार्यक्रम के अंतर्गत यूको बैंक ने आशा सेंटर को खाद्य सामग्री, दैनांदिन उपयोग की वस्तुएं एवं खेल-सामग्री उपहार के रुप में दिया। इस अवसर पर यूको बैंक अंचल कार्यालय रांची से अंचल प्रबंधक भावना सिन्हा और यूको बैंक के अधिकारीगण पवनकुमार भारती, हरिचंद मुर्मू, दीपक कुमार सिंह, अरुण कुमार, अमित कुमार और कुमार मृणाल उपस्थित थे। अंचल प्रबंधक ने बच्चों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक प्रस्तुति की प्रशंसा की उन्होंने इस बाल आश्रय गृह में रहने वाली तथा राष्ट्रीय जूनियर स्तर पर फुटबॉल में नाम रोशन करने वाली बच्चियों का विशेष रुप से हौसला बढ़ाया तथा अन्य बच्चों को उनका अनुसरण करने की सलाह दी।

उन्होंने कहा कि यूको बैंक अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों के प्रति हमेशा से गंभीर रहा है। हम इस प्रकार के कार्यक्रम आगे भी आयोजित करते रहेंगे।

महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर बीआईटी मेसरा में कार्यक्रम आयोजित

प्रातः नागपुरी संवाददाता

रांची। बीआईटी मेसरा के सृष्टि महिला विकास प्रकोष्ठ ने 'महिलाओं और मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं' पर केंद्रित एक कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में प्रतिभागियों ने भाग लिया। मानसिक स्वास्थ्य जागरुकता की अत्यधिक आवश्यकता को रेखांकित किया।

कार्यक्रम की शुरूआत सृष्टि महिला विकास प्रकोष्ठ की अध्यक्ष प्रोफेसर बिंदुलाल द्वारा किए गए स्वागत भाषण से हुई। अपने उद्घाटन संबोधन में उन्होंने मानसिक स्वास्थ्य पर खुलकर बातचीत करने की जरूरत पर जोर दिया, विशेष रूप से महिलाओं की भलाई के संदर्भ में।

कार्यक्रम में आर्मी स्कूल की काउंसलर श्रीमती जे. तनुश्री सेनगुप्ता ने मुख्य वक्ता के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। अपने विचारोत्तेजक भाषण में उन्होंने मानसिक स्वास्थ्य के समग्र कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने आत्म-निदान (सेल्फ-डायग्नोसिस) की चुनौतियों और संभावित खतरों पर चर्चा की। पेशेवर मार्गदर्शन की आवश्यकता पर जोर दिया। श्रीमती सेनगुप्ता ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता (इमोशनल इंटेलिजेंस) की अवधारणा को भी विस्तार से समझाया। इसे मानव बुद्धिमत्ता का एक महत्वपूर्ण रूप बताया, जो मानसिक स्वास्थ्य प्रबंधन में प्रभावी भूमिका निभाता है। उन्होंने अपने संबोधन का समापन एक प्रेरणादायक उद्धरण के साथ किया, ह्यमूल्य सिखाए नहीं जाते, वे आत्मसात किए जाते हैं।

कार्यक्रम का सफल संचालन सृष्टि महिला विकास प्रकोष्ठ की सचिव डॉ. तनुश्री भट्टाचार्य द्वारा किया गया, जिसमें उपाध्यक्ष डॉ. ऋचा पांडे का सक्रिय सहयोग रहा। उनके समर्पण और प्रबंधन कौशल ने कार्यक्रम की सुचारु रूप से सम्पन्नता सुनिश्चित की।

सत्र का समापन एक आकर्षक प्रश्नोत्तर खंड के साथ हुआ, जिसमें प्रतिभागियों ने वक्ता के साथ बातचीत की। मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े मुद्दों पर गहन समझ प्राप्त की। यह कार्यक्रम उपस्थित लोगों के लिए मानसिक स्वास्थ्य की महत्ता को समझने और इसे अपनी दिनचर्या में प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित करने का एक महत्वपूर्ण अवसर साबित हुआ।

कांग्रेस पार्टी ने लगातार संविधान निर्माता अंबेडकर का किया अपमान : अमर बाउरी

प्रातः नागपुरी संवाददाता

रांची। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता अमर कुमार बाउरी ने कहा कि भाजपा 11 से 25 जनवरी तक संविधान गौरव अभियान चलायेगी। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने लगातार संविधान निमार्ता अंबेडकर का अपमान किया है। बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के संघर्ष, संविधान निर्माण और उनके साथ कांग्रेस के छल को लेकर जिला से मंडल तक आम जनता को जागरूक किया जायेगा।

बाउरी सोमवार को पार्टी कार्यालय में संवाददाता सम्मेलन में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि भाजपा 11 जनवरी से 25 जनवरी तक अभियान चलायेगी। इस अभियान को भारतीय जनता पार्टी ने संविधान गौरव अभियान का नाम दिया है। बाउरी ने कहा कि बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के संविधान का ही यह फल है कि आज सर्वोच्च पायदान पर देश की एक आदिवासी महिला विराजमान हैं। चाय बेचने वाले एक व्यक्ति प्रधानमंत्री के रूप में जन सेवा कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि भारत को महान बनाने में संविधान का महत्वपूर्ण भूमिका रही है लेकिन आज भी बाबा साहब भीमराव अंबेडकर के विचार समाज के बीच नहीं गया है। भारतीय जनता पार्टी बाबा साहब के लक्ष्य को देश के अंतिम पायदान तक पहुंचाने का काम इस अभियान के माध्यम से करेगी।

लैब के साथ अब लैंड पर सीएमपीडीआई कर रही है शोध

- नासेर के माध्यम से ऊर्जा और कोयला क्षेत्र की चुनौतियों के समाधान पर जोर
- स्थिरता व पर्यावरणीय प्रबंधन सुनिश्चित करते हुए अनुसंधान किया जाएगा

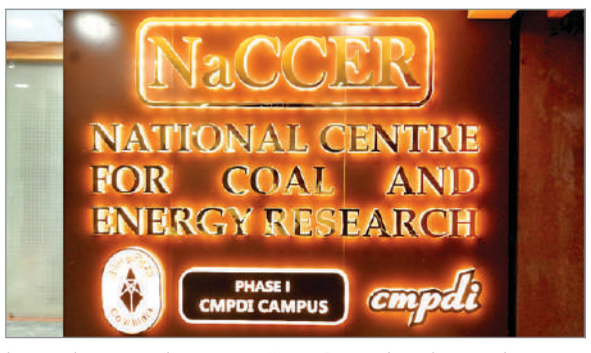

प्रातः नागपुरी संवाददाता

रांची। कोल इंडिया की सहायक कंपनी सीएमपीडीआई लैब के साथ अब लैंड (जमीनी स्तर) पर शोध करेगी। यह काम नेशनल सेंटर फॉर कोल एंड इनर्जी रिसर्च (नासेर) के माध्यधम से होगा। सेंटर के चरण-1 की स्थापना रांची स्थित सीएमपीडीआई मुख्यालय में की गई है। इसका उद्देश्य कोयला और ऊर्जा क्षेत्रों में गंभीर चुनौतियों का समाधान करने के साथ भारत को टिकाऊ ऊर्जा में अग्रणी के रूप में स्थापित करना है।

सीएमपीडीआई के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अध्यक्ष अमरकांत मिश्रा ने बताया कि पहले शोध लैब (प्रयोगशाला) में होता था। नासेर की स्थापना होने के बाद इसकी क्षमता और दायरा बढ़ा है। अब व्यापक स्तमर पर अनुसंधान का काम हो रहा है। यह सीधे जमीनी स्तार पर किया जा रहा है। काम की प्रकृति के हिसाब से यह खदान, परियोजना क्षत्रों में हो रहा है।

दुनिया तेजी से विकसित हो रही है। प्रतिस्पर्द्धा तेज है। प्रौद्योगिकियां बिजली की गति से आगे बढ़ रही है। इसके साथ पर्यावरणीय जिम्मेदारियां भी बढ़ रही हैं। वर्तमान में कोयला ही भारत की ऊर्जा आपूर्ति की आधारशिला है। इसको इन बदलावों के अनुरून ढलना होगा। अब पारंपरिक तरीकों पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं है। हमें नवप्रवर्तन करना चाहिए। विविधता लानी चाहिए और प्रगति पथ पर आगे रहना चाहिए।

विभाग के महाप्रबंधक डॉ शिशिर दत्ता ने कहा कि कोयला और ऊर्जा क्षेत्र की अनुसंधान एवं विकास जरूरतों को पूरा करने के लिए कोयला मंत्रालय के निर्देशन में नेशनल सेंटर फॉर कोल एंड इनर्जी रिसर्च (नासेर) की परिकल्पना की गयी थी।

नासेर की स्थापना दो चरणों में की जा रही है। चरण-1 को सीएमपीडीआई के प्रशासनिक नियंत्रण के तहत विकसित किया गया है। यह सीएमपीडीआई में मौजूदा बुनियादी ढांचे और विशेषज्ञता को मजबूत करता है। भविष्य में चरण-2 कोल इंडिया के नेतृत्व के तहत दीर्घकालिक नवाचार को बढ़ावा देने के लिए एक स्थायी विश्व स्तरीय सुविधा की रचना की जाएगी। उपयुक्तव स्थ ल के चुनाव के लिए कमेटी का गठन किया गया है।

नासेर का उद्देश्य ऐसे अनुसंधान को अंजाम देना है, जो स्थिरता और पर्यावरणीय प्रबंधन सुनिश्चित करते हुए कोयला और ऊर्जा उत्पादन में आत्मनिर्भरता को मजबूत करता है। इसका उद्देश्य वैश्विक मानकों का एक राष्ट्रीय अनुसंधान केंद्र बनाना है, जहां पनपते नवप्रवर्तन और उद्योग की चुनौतियों का समाधान परिवर्तनात्मक समाधानों से किया जा सके। स्वच्छ कोयला प्रौद्योगिकियों और एआई-संचालित खनन से लेकर नवीकरणीय ऊर्जा और पर्यावरणीय संरक्षणक तक नासेर ऊर्जा और स्थिरता के भविष्य के लिए लगभग सभी महत्व पूर्ण क्षेत्रों से निपटेगा।

हम इस पहल की पूरी क्षमता को उजागर करने के लिए विशेषज्ञों की एक बहु-विषयक दल बनाने, आईआईटी और एनआईटी जैसे अग्रणी संस्थानों के साथ साझेदारी करने और स्टार्ट-अप और राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय हितधारकों के साथ सहयोग करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उसी के अनुरूप, आईआईटी (आईएसएम), धनबाद-टेक्समिन के साथ एक समझौता ज्ञापन पर पहले हस्ताक्षर किए जा चुके हैं। आईआईटी, हैदराबाद और आईआईटी, मद्रास के साथ समझौता ज्ञापन को अंतिम रूप दिया जा रहा है।

नासेर का जोर नई तकनीकों को विकसित करना और टीआरएल-4 के सिद्ध अनुसंधान को प्रयोगशाला से धरातल तक लाना है, जिससे वास्तविक दुनिया प्रभावित हो, जो उद्योग के विकास और पर्यावरणीय स्थिरता दोनों को संचालित करता है। तद्नुसार, फंडिंग का बड़ा हिस्सा ऐसी सभी परियोजनाओं पर खर्च किया जाएगा, जो प्रभावी अनुप्रयोगों में तब्दील हो सकती हैं।

नासेर की स्थापना को कोल इंडिया के आरएंडटी फंड द्वारा समर्थित किया जाएगा, जिसमें विशेषज्ञ समितियां सुचारू निष्पादन और निरीक्षण सुनिश्चित करेंगी। उसी के अनुरूप, देश भर के विशेषज्ञों की एक सलाहकार विशेषज्ञ समिति बनाई गयी है। विषय विशेषज्ञों का पैनल बनाया गया है। नासेर राष्ट्रीय और वैश्विक अनुसंधान में तालमेल को बढ़ावा देगा। यह सुनिश्चित करेगा कि भारत आने वाले दशकों तक ऊर्जा नवाचार में अग्रणी रहे।

संक्षिप्त

चौपारण पुलिस ने फरार अभियुक्त के घर चिपकाया इश्तेहार

चौपारण : चौपारण (हजारीबाग) अड़की थाना कांड संख्या 37/24 जो कि एनडीपीएस एक्ट से संबंधित है के फरार अभियुक्त संजय दांगी पिता मानकी दांगी के घर पर डुगडुगी बजाकर इश्तेहार चश्पा किया। इश्तेहार चश्पा करते समय अड़की पुलिस के द्वारा यह हिदायत दी गई कि यदि अभियुक्त एक महीने के अंदर न्यायालय में आत्म समर्पण नहीं करता है तो ऐसी स्थिति में अभियुक्त के मकान को न्यायालय के आदेश के अनुसार कुर्क किया जायेगा। इश्तेहार चश्पा करने के बाद पुलिस ने इस बात का ऐलान किया कि अभियुक्त संजय दांगी को यह आखिरी अवसर दिया गया है कि वह न्यायालय के समक्ष उपस्थित हो। यदि वह आदेश का अनुपालन नहीं करता है तो ऐसी स्थिति में अगली कारवाई कुर्की जप्ती की होगी। इसलिए अभियुक्त संजय दांगी इश्तेहार चश्पा करने के 1 महीने के अंदर न्यायालय गये।

नये थाना प्रभारी का बजरंग दल के जिला सह संयोजक ने किया अभिनंदन

लातेहार : सदर थाना प्रभारी के रूप में पदभार ग्रहण करने के बाद दुलर चौड़े का सामाजिक संगठनों के द्वारा लगातार अभिनंदन और मुलाकात का दौर जारी है। इसी क्रम में सोमवार को बजरंग दल के जिला सह संयोजक नीतीश कुमार यादव ने मुलाकात कर उनका अभिनंदन किया। मौके पर यादव ने थाना प्रभारी को पुष्प गुच्छ व अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया।

असंतुलित होकर गिरा बाइक सवार, रिम्स रेफर

लातेहार : चंदवा थाना क्षेत्र अंतर्गत चंदवा-चांपी-लोहरदगा मुख्य मार्ग पर महादेव मंडा के समीप सोमवार को एक बाइक सवार युवक असंतुलित होकर दुर्घटना का शिकार हो गया। दुर्घटना में युवक गंभीर रूप से घायल हो गया है। उसके चेहरे व शरीर के अन्य हिस्सों में गंभीर चोट के निशान हैं। घायल युवक की पहचान चंदवा थाना क्षेत्र के ही मरमर निवासी दशरथ लोहरा पिता विसुन लोहरा (25) के रूप में हुई है। घायल युवक को 108 एंबुलेंस की मदद से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया जंहा प्राथमिक उपचार के पश्चात के बाद उसकी गंभीरता को देखते हुए उसे रिम्स रेफर कर दिया गया। घटना के संबंध में बताया जाता है कि युवक अपने किसी रिश्तेदार को बाइक से छोड़ने चांपी गया था। वापसी के दौरान महादेव मंडा के समीप वह अपने वाहन से संतुलन खो दिया और दुर्घटना का शिकार हो गया।

अयोध्या राम मंदिर स्थापना का प्रथम वार्षिकोत्सव 11 जनवरी को धूमधाम से मनाने की तैयारी

लातेहार : विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल की बैठक श्रीराम वाटिका में जिला अध्यक्ष श्याम किशोर अग्रवाल की अध्यक्षता में संपन्न हुई। संचालन जिला मंत्री संजय तिवारी ने किया। बैठक में धर्म रक्षा निधि समर्पण कार्यक्रम की समीक्षा के साथ जिले के सभी प्रखंडों में अभ्यास वर्ग आयोजित करने पर चर्चा हुई। बैठक में बताया गया कि 11 जनवरी को भगवान श्रीराम मंदिर, अयोध्या की स्थापना का प्रथम वार्षिकोत्सव मनाया जायेगा। यह तिथि हिंदू पंचांग के अनुसार पौष शुक्ल द्वादशी को पड़ रही है। इस अवसर पर शहर के अमवाटीकर महावीर मंदिर में 10 जनवरी से 11 जनवरी तक अखंड कीर्तन का आयोजन होगा। 11 जनवरी को अपराह्न एक बजे नगर भ्रमण आयोजित होगा, जिसमें राम दरबार की झांकी विशेष आकर्षण होगी। जिला अध्यक्ष श्री अग्रवाल ने बताया कि पिछले साल 22 जनवरी को अयोध्या में भगवान श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा हुई थी। इस वर्ष यह वार्षिकोत्सव 11 जनवरी को मनाया जाएगा। बैठक में सभी कार्यक्रमों को सफल बनाने के लिए कार्यकर्ताओं से सहयोग का आह्वान किया गया। मौके पर पलामू विभाग मंत्री विजय यादव, जिला उपाध्यक्ष रविंद्र प्रसाद गुप्ता, समाजिक समरसता प्रमुख अवधेश पांडेय, बजरंग दल संयोजक जयराम कपूर, जिला सेवा सह प्रमुख बिपिन सिंह, सह संयोजक नितिश यादव समेत अन्य कार्यकर्ता उपस्थित थे।

पुलिसकर्मी ने डीआईजी और डीजीपी के खिलाफ न्यायालय में जाने के लिए मांगा अवकाश

प्रातः नागपुरी प्रतिनिधि

सरायकेला-खरसावां। जिले के आरआईटी थाना में पदस्थापित एएसआई शुभंकर कुमार ने पुलिस अधीक्षक, डीआईजी और डीजीपी के खिलाफ न्यायालय में मामला दायर करने की अनुमति के लिए तीन दिन का आकस्मिक अवकाश मांगा है। शुभंकर ने पुलिस अधीक्षक को संबोधित आवेदन में वरिष्ठ अधिकारियों के 'मनमाने रवैये' और 'शोषण' का आरोप लगाया है।

आवेदन में लगाए गंभीर आरोप

शुभंकर ने अपने आवेदन में लिखा कि वर्ष 2024 का आकस्मिक अवकाश (CL) और 2023-24 का क्षतिपूर्ति अवकाश (CPL) का एक भी दिन उन्हें उपभोग नहीं करने दिया गया। इसके परिणामस्वरूप उनका अवकाश व्यर्थ हो गया। उन्होंने इस संबंध में 18 दिसंबर 2024 को एसपी, डीआईजी और डीजीपी को आवेदन भेजा था, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई।

न्यायालय जाने की अनुमति का आग्रह

शुभंकर ने आरोप लगाया कि अधिकारियों के रवैये के कारण वह मानसिक तनाव (डिप्रेशन) का सामना कर रहे हैं। उन्होंने लिखा कि वह कोई गंभीर आपराधिक घटना कारित करने से पहले न्यायालय की शरण लेना चाहते हैं। इसके लिए उन्होंने 3 जनवरी 2025 से तीन दिनों का आकस्मिक अवकाश मांगा है ताकि वह रांची उच्च न्यायालय में न्याय के लिए मामला दायर कर सकें।

क्या लिखा आवेदन में?

उन्होंने आवेदन में लिखा है कि मैं विभाग से न्याय प्राप्त करना चाहता था, लेकिन मुझे न्याय नहीं मिला। मैंने दोषी अधिकारियों के वेतन से कटौती कर मेरे अवकाश के बदले क्षतिपूर्ति देने की मांग की थी, लेकिन उस पर भी कोई कार्रवाई नहीं हुई।

न्याय के लिए उच्च न्यायालय का रुख

आवेदन में शुभंकर ने हाई कोर्ट रांची में अधिकारियों के खिलाफ मामला दर्ज कराने के लिए तीन दिनों का अवकाश स्वीकृत करने का अनुरोध किया है। उन्होंने इसे 'महान कार्य' बताते हुए परिवार सहित हमेशा आभारी रहने की बात कही।

पुलिस विभाग में चर्चा का विषय

शुभंकर कुमार का यह कदम पुलिस विभाग में चर्चा का विषय बन गया है। वरिष्ठ अधिकारियों के खिलाफ न्यायालय जाने की अनुमति मांगने का यह मामला विभागीय प्रक्रियाओं और आंतरिक अनुशासन पर सवाल उठाता है। अब देखना होगा कि इस पर विभागीय प्रतिक्रिया क्या होती है।

उत्साहपूर्वक मना गुरु गोविंद सिंह का 358वां प्रकाश पर्व

प्रातः नागपुरी प्रतिनिधि

हजारीबाग : गुरु गोविंद सिंह जी के 358वें प्रकाश पर्व के अवसर पर हजारीबाग सदर विधायक प्रदीप प्रसाद ने शहर के प्रमुख गुरुद्वारे में पहुंचकर माथा टेका और इस पावन दिन की अहमियत को महसूस करते हुए सिख समुदाय के साथ मिलकर उत्सव मनाया। इस अवसर पर उन्होंने गुरुद्वारे में विशेष अरदास में भाग लिया और सिख समुदाय के विभिन्न पदाधिकारियों तथा सदस्यों से मुलाकात की।

विधायक प्रदीप प्रसाद ने इस अवसर पर सिख समुदाय को गुरु गोविंद सिंह जी के जीवन और शिक्षाओं के प्रति श्रद्धा और सम्मान व्यक्त करते हुए कहा की गुरु गोविंद सिंह जी ने हमें न केवल धर्म और सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी, बल्कि उन्होंने हमें समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को निभाने का भी मार्गदर्शन किया। उनका जीवन प्रेरणा का स्रोत है और हमें उनके दिखाए हुए रास्ते पर चल कर समाज में शांति, समृद्धि और भाईचारे की भावना को मजबूत करना चाहिए।

सिख समुदाय ने विधायक प्रदीप प्रसाद का सम्मान करते हुए उन्हें सरोपा भेंट किया, जो गुरु गोविंद सिंह जी के आदर्शों और उनकी शिक्षाओं के प्रति सम्मान का प्रतीक है। विधायक ने इस सम्मान को गर्व के साथ स्वीकार किया और सिख समुदाय की एकता और भाईचारे की भावना की सराहना की।

विधायक प्रदीप प्रसाद ने कहा की आज के दिन हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम गुरु गोविंद सिंह जी के आदर्शों को अपने जीवन में उतारेंगे और समाज के हर वर्ग के लिए काम करेंगे।

हमें उनके दिखाये गये मार्ग पर चलते हुए न केवल अपनी ज़िंदगी को सुधारना चाहिए, बल्कि समग्र समाज में भाईचारे और सहिष्णुता की भावना फैलानी चाहिए। गुरु गोविंद सिंह जी का प्रकाश पर्व न केवल सिख समुदाय के लिए, बल्कि समूचे समाज के लिए एक प्रेरणा का दिन है। इस दिन की महिमा को देखते हुए विधायक ने यह भी कहा कि हम सभी को अपने जीवन में गुरु जी के उपदेशों को आत्मसात करने की आवश्यकता है ताकि समाज में शांति और समृद्धि का वातावरण बने।

प्रकाश पर्व पर सजा भव्य कीर्तन दरबार

पलामू : सिखों के दशमगुरू, दशमेश पिता, खालसा पंथ के संस्थापक और हिन्दु धर्म-संस्कृति के रक्षक गुरूगोबिंद सिंह का 358 वां प्रकाश पर्व सोमवार को मनाया गया। इस अवसर पर गुरूद्वारा श्रीगुरू सिंह सभा, बेलवाटिका डालटनगंज में प्रातः की चौकी उपरांत भव्य दीवान सजाया गया। इसमें रागी जत्था के अलावा स्थानीय बच्चे, युवक-युवतियां कीर्तन वाणी से संगत को नेहाल कर दिया। प्रकाश पर्व को लेकर मुख्य समारोह का आयोजन गुरूद्वारा में किया गया। इसमें टाटानगर से आए ज्ञानी हरमित सिंह एवं अन्य जत्था के द्वारा कीर्तन किया गया। समाज के बच्चों की ओर से प्रस्तुत कीर्तन ने संगत को भाव विभौर कर दिया। पूर्वाहन 11 बजे मुख्य दिवान सजाया गया। ज्ञानी सुंदर सिंह ने अरदास की। सिख समाज के लिए समर्पित रहने पर श्री महावीर नवयुवक दल जेनरल द्वारा रजिन्दर सिंह बंटी को सम्मानित किया गया। दिवान की समाप्ति के बाद गुरूतेग बहादुर मेमोरियल हॉल में लंगर हुआ। इससे पहले प्रकाश पर्व को लेकर 30 दिसम्बर से प्रभातफेरी निकाली गयी। पांच जनवरी को इसका समापन हुआ।

पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवगौड़ा ने बाबा बैद्यनाथ धाम में की पूजा

प्रातः नागपुरी प्रतिनिधि

देवघर। जनता दल सेक्युलर के वरीय नेता राज्य सभा सांसद और पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवगौड़ा सोमवार को दो दिवसीय दौरे पर देवघर पहुंचे। बाबा बैद्यनाथ धाम ज्योतिलिंग पहुंचे। महाभिषेक व विशेष पूजा अर्चना की। उनके साथ पार्टी के झारखंड प्रदेश अध्यक्ष पवन कुमार झा भी शामिल रहे। इससे पहले डीसी विशाल सागर ने देवघर एयरपोर्ट पर उन्हें बुके और शॉल देकर सम्मानित किया।

बाबा बैद्यनाथ मंदिर में पूजा अर्चना कर पूर्व प्रधानमंत्री ने देश व राज्य के लोगों के सुख समृद्धि की कामना की। मंदिर गर्भ गृह में विद्वान पंडितों द्वारा मंत्रोचार के बीच उन्हों ने पूजा की। उन्होंने कहा कि मेरी विशेष इच्छा थी कि बाबा बैद्यनाथ मंदिर में पूजन करूं। यहां पूजन के दौरान सकारात्मक ऊर्जा का संचार मालूम पड़ा। देश ही नहीं विदेश से भी भक्त यहां पहुंचकर बाबा बैजनाथ का दर्शन करते हैं। इनकी काफी महिमा है।

श्री देवगौड़ा ने कहा कि झारखंड की जनता काफी शांतिप्रिय व खुशहाल मिजाज की है। इस दौरान श्री देवगौड़ा बासुकिनाथ धाम भी गए। वहां भी उन्होंने विद्वान पंडितों की उपस्थिति में पूजन व आरती की।

पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष पवन कुमार झा ने कहा कि मंगलवार को वे देवघर से बेंगलोर के लिए रवाना होंगे। मौके पर उपायुक्त सह जिला दण्डाधिकारी विशाल सागर, पुलिस अधीक्षक अजीत पीटर डुंगडुग, एसडीएम रवि कुमार मौजूद थे।

सरकारी उदासीनता के कारण पीड़ित परिवार को नहीं मिल पा रहा घर

प्रातः नागपुरी प्रतिनिधि

विष्णुगढ़ : विष्णुगढ़ प्रखंड अंतर्गत चेडरा पंचायत के करोंज मोड़ स्थित घटवार टोला में लंबे समय से सर पर छत की आस लगाए स्व० कल्लू गोस्वामी एवं स्व० मल्लू नाथ गोस्वामी के परिवार की जद्दोजहद खत्म होने का नाम नहीं ले रही है। बता दें कि प्रधानमंत्री आवास आवंटित होने के बाद भी पीड़ित परिवार अब तक अपने घर का निर्माण नहीं करा पाए, इसका एकमात्र कारण है विरोधियों द्वारा लगातार लंबे समय से बाघा डालना। आखिरकार विष्णुगढ़ अंचल अधिकारी की उपस्थिति में बीते 22 दिसंबर 2024 को ग्राम सभा का आयोजन कर पीड़ित के पक्ष में मामले का निपटारा किया। बीते शनिवार को जैसे ही पीड़ित के द्वारा निर्माण कार्य शुरू करवाया गया, तभी विरोधियों ने वापस से बाधा डालनी शुरू कर दी, स्थिति ऐसी आन पड़ी कि पीड़ित परिवार की महिलाओं एवं बच्ची के साथ अभद्र व्यवहार करते हुए मारपीट पर उतारू हो गए। इसकी सूचना चेडरा पंचायत समिति सदस्य मुन्नी देवी को मिली तब उनके साथ पप्पू कुमार एवं गौतम भारती ने मौके पर पहुंच कर कड़ी मशक्कत के साथ मामले को शांत करवाया। इस दौरान विष्णुगढ़ थाने को भी इसकी सूचना दी गई लेकिन थाना द्वारा तत्परता न दिखाते हुए पुलिस बल देरी से घटना स्थल पर पहुंची। नतीजन पीड़ित परिवार अभद्रता एवं मारपीट के शिकार बने।

अंततः छत की आश अधूरी ही रह गई, साथ ही निर्माण कार्य सामग्री भी बर्बाद हुई। अब तक पुलिस द्वारा भी इस मामले में कोई कार्रवाई नहीं की गई, जिससे बड़ा प्रश्न चिन्ह खड़ा होता दिखाई दे रहा है कि आखिर ऐसी विडंबना क्यों। पीड़ित की विवशता का दृश्य ऐसा की बासगीत पर्चा से उन्हें सरकार द्वारा यह भूमि प्रदान की गई, पीएम आवास आवंटित हुआ, ग्राम सभा के माध्यम से आवास निर्माण कार्य शुरू करने का आदेश भी पारित हुआ और थाने में भी आवेदन दिया गया, लेकिन न्याय अब तक अधूरा।

रेलवे लाइन के बीच से युवक का शव बरामद, जांच में जुटी पुलिस

प्रातः नागपुरी प्रतिनिधि

पलामू। जिले के डाली गांव के पास रेलवे लाइन के बीच से एक युवक का शव सोमवार को बरामद किया गया है। शव की पहचान गढ़वा जिले के कांडी थाना क्षेत्र अंतर्गत बलियारी गांव निवासी सुजीत दुबे के पुत्र प्रकाश कुमार दुबे (18 वर्ष) के रूप में की हुई। घटना की सूचना मिलते ही युवक के पिता सुजीत दुबे, माता बिंदा देवी, दादी राधिका देवी, छोटा भाई आकाश दुबे एवं दो छोटी बहनों में मातम छा गया।

शव मोहम्मद गंज थाना अंतर्गत गढ़वा रोड-सोन नगर रेल खंड पर रेलवे ट्रैक से पुलिस ने संदेहात्मक स्थिति में जब्त कर पोस्टमार्टम के लिए हुसैनाबाद भेज दिया था। यह घटना डाली गांव के पास रेलवे खम्भा (संख्या 352/25 एसओ 4/के वीक्यू) के पास अप ट्रैक में घटी है। रेलवे लाइन के निकट बाइक, मोबाइल एवं टोपी रखे हुए थे। तब तक मृतक के परिजन भी घटनास्थल पर पहुच गए थे।

परिजनों के अनुसार मृतक करीब डेढ़ माह से घर पर ही रह कर पुलिस बहाली की तैयारी कर रहा था। पिता ने काफी मोटी राशि खर्च कर बेटे का कोटा राजस्थान में प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी के लिए एडमिशन कराया था। हालांकि वह संस्थान का प्रेशर नहीं झेल पाने के कारण इन दिनों मानसिक रूप से परेशान था।

पुलिस ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम में भेजकर हत्या है या आत्महत्या, इसकी छानबीन की जा रही है। पोस्टमार्टम के बाद अस्पताल से शव परिजनों को सौंप दिया गया। कांडी के बरवाडीह गांव के समीप सोन नदी के किनारे मृतक का अंतिम संस्कार कर दिया गया। मुखाग्नि चाचा बृजराज दुबे ने दी।

फायरिंग के मामले में पुलिस ने दो आरोपिओं को किया गिरफ्तार

आदित्यपुर। आरआईटी थाना पुलिस ने बीते 4 जनवरी की रात करीब 8 बजे के आसपास हाइवा कंपनी में सिक्योरिटी गार्ड को गाली-गलौज करने, धमकाने और कंपनी का गेट नहीं खोले जाने पर गार्ड पर गोली चलाने के आरोप में पूर्व सिक्योरिटी गार्ड समीर कुमार झा और जेएसएस सिक्योरिटी एजेंसी के क्षेत्रीय पदाधिकारी सर्वजीत शर्मा को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। पुलिस ने उनकी निशानदेही पर एक अवैध देसी कट्टा, दो जिंदा कारतूस, घटनास्थल से बरामद गोली का पिलेट और घटना में प्रयुक्त मोटरसाइकिल बरामद किया है। इस संबंध में जानकारी देते हुए थाना प्रभारी विनय कुमार ने बताया कि कंपनी के एचआर संजय कुमार गुप्ता द्वारा लिखित शिकायत के आधार पर पुलिस अधीक्षक के दिशा-निर्देश में एक छापेमारी दल का गठन किया गया था।

पर्यावरण संतुलन के लिए नदियों में भरपूर बालू का होना अनिवार्य

प्रातः नागपुरी प्रतिनिधि

भवनाथपुर : पर्यावरण संतुलन के लिए नदियों में भरपूर बालू का होना अनिवार्य है। परंतु बालू के अवैध उत्खनन के कारण न सिर्फ नदियां वीरान हो रही है, बल्कि जन जीवन भी प्रभावित हो रही है और नदियों के तट का स्वरूप भी बिगड़ता जा रहा है। नदियों की जल धारण की क्षमता घटने से इसका सीधा असर पर पड़ रहा है। मामला प्रखंड अंतर्गत मकरी के बरवारी नदी तथा पास ढांढरा नदी में बड़े पैमाने पर हो रहे बालू का अवैध

उत्खनन कर ट्रैक्टर से परिवहन किए जाने का है। यहां बरवारी तथा ढाढरा नदी से बालू के अवैध और अंधाधुंध उत्खनन से यह बड़ी नदियां पूरी तरह समाप्त होने की कगार पर चुकी हैं। बालू तस्करों ने तो बरवारी नदी के अस्तित्व को ही खत्म कर दिया है। यह मात्र एक छोटा सा सूखा नाला बन कर रह गया है। गांव कें ग्रामीणों का कहना हैं, कि मकरी पंचायत के बरवारी नदी तथा पास के ढाढरा नदी भीषण गर्मी में भी नहीं सूखती थीं, परंतु पिछले कुछ वर्षों के दौरान क्षेत्र में सरकारी तथा निजी कार्य निर्माण कार्य में आई तेजी कें कारण बालू की मांग लगातार बढ़ती जा रही है। इसके कारण इन नदियों से स्थानीय बालू माफियाओं द्वारा लगातार दिन रात उत्खनन कर दोनों नदियों का अस्तित्व मिटाने पर तुले हुए है। बरवारी और ढाढ़रा नदी से रात के अंधेरे में अवैध तरीके से बालू उत्खनित कर माफियाओं द्वारा ट्रैक्टरों पर लोड कर इसे झगड़ाखांड मुख्य पथ से लेकर बरवारी गांव तक करोड़ों रुपए की लागत से बनने वाली कालीकरण और पीसीसी सड़क निर्माण में उपयोग हेतु बरवारी बस्ती मोड़ तथा बराबरी स्कूल के समीप करीब बड़े पैमाने पर भंडारण किया गया है।

प्रेस क्लब देवघर के प्रतिनिधिमंडल ने मुख्यमंत्री के नाम डीसी को सौंपा ज्ञापन

प्रातः नागपुरी प्रतिनिधि

देवघर। सोमवार को प्रेस क्लब, देवघर की ओर से छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले के पत्रकार मुकेश चंद्राकर एवं बिहार के पूर्णियां जिले के पत्रकार नीलांबर यादव की हत्या की घटना पर दुख जताते हुए इंडोर स्टेडियम में शोकसभा आयोजित की गयी। इस अवसर पर प्रेस क्लब, देवघर के सदस्यों ने दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए मौन रखा।

साथ ही शोकाकुल परिवारों के प्रति संवेदना जतायी गयी। सदस्यों ने कहा कि, खबर लिखने के एवज में एक पत्रकार को गायब कर उसकी हत्या करना पत्रकारों के लिए खतरनाक संदेश है. पत्रकारों की सुरक्षा महत्वपूर्ण है। यह सुनिश्चित करना अनिवार्य है कि किसी भी पत्रकार को उनकी पेशेवर जिम्मेदारियों के निर्वहन में कोई खतरा न हो। देवघर में भी पत्रकारों की सुरक्षा की मांग को लेकर प्रेस क्लब, देवघर का एक प्रतिनिधिमंडल डीसी से मिला। प्रतिनिधिमंडल ने डीसी को ज्ञापन सौंपते हुए झारखंड में पत्रकार सुरक्षा कानून लागू करने की मांग राज्य सरकार से की, साथ-ही भविष्य में पत्रकारों के साथ ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति नहीं हो, इसके लिए पत्रकारों की सुरक्षा और पत्रकारों से जुड़े मामलों में गंभीरता दिखाते हुए त्वरित प्रशासनिक पहल करने की मांग की। इस संबंध में डीसी ने प्रेस क्लब, देवघर को आश्वस्त किया कि पत्रकारों की मांगों को मुख्यमंत्री तक भेजा जायेगा।

- बीजापुर जिले के पत्रकार मुकेश चंद्राकर एवं बिहार के पूर्णियां जिले के पत्रकार नीलांबर यादव की हत्या की निंदा कर शोकसभा में श्रद्धांजलि दी
- दोनों हत्याकांडों की सीबीआई से जांच कराने की मांग

झारखंड में पत्रकार सुरक्षा कानून लागू करें सरकार

इस दौरान कंचन सौरभ मिश्रा, नीरज चौधरी, आशीष कुंदन, राकेश कर्म्हें, रामनंदन सिंह, सुमरजीत सिंह, सोहनलाल साह, निषिद्ध मालवीय, अमरनाथ पोद्दार, राकेश पुरोहितवार, राजीव रंजन, कौशल किशोर, भोला प्रसाद सिंह, अमरेंद्र कुमार, रितुराज सिन्हा, रजनीश कुमार गुप्ता, अमित कुमार, सुनील कुमार, महेश पंडित, सुमन सौरभ, अजय परिहस्त, भगवान तिवारी, अजय संतोषी, संतोष कुमार दास, आदि मौजूद थे।

संक्षिप्त

विस्थापितों की एचओपी से वार्ता 10 को

बोकारो थर्मल। पांच सूत्री मांगों को लेकर विस्थापित एवं स्थानीय संघर्ष समिति की डीवीसी बोकारो थर्मल के एचओपी (परियोजना प्रधान) से सोमवार को होनेवाली वार्ता एचओपी के नहीं रहने के कारण 10 जनवरी को एचओपी के साथ पावर प्लांट स्थित तकनीकी भवन के सभागार में होगी। सोमवार को 10 जनवरी की वार्ता को लेकर डीवीसी के डीजीएम प्रशासन बीजी होलकर ने समिति को पत्र निर्गत कर जानकारी दी। बाद में समिति के सभी कार्यकर्ताओं ने एक बैठक बोकारो क्लब दुर्गा मंडप परिसर में सोमवार को की। बैठक में निर्णय लिया गया कि डीवीसी प्रबंधन शीघ्र एक पैनल बनाने का कार्य करे, साथ ही डीवीसी मुख्यालय द्वारा निर्धारित सर्कुलर 2016 को स्थानीय प्रबंधन को लागू हर हाल में करना होगा। बैठक में मुख्य रूप से वाजीद हुसैन, करीमुद्दीन अंसारी, मिथिलेश रजवार, छत्रधारी गोप, लाल मोहम्मद, एनुल अंसारी, जयराम रविदास, ताहिर अंसारी, बबलू अंसारी, कृष्ण कमार आदि मुख्य रुप से मौजूद थे।

धनबाद जेल में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

धनबाद। जिला विधिक सेवा प्राधिकार के तत्वावधान में सोमवार को धनबाद जेल में मेडिकल शिविर का आयोजन किया गया। इस बावत जानकारी देते हुए प्राधिकार के सचिव सह अवर न्यायाधिश राकेश रोशन ने बताया की जेल अदालत में डॉ. राजीव कुमार सिंह के नेतृत्व में चिकित्सकों की टीम ने बंदियों का स्वास्थ्य जांच किया और उसे विभिन्न तरह की दवाइयां भी प्रदान की गई। जिन बंदियों को बेहतर इलाज के लिए आवश्यकता महसुस की गई उनके इलाज के लिए प्रशासन को लिखा गया।

गोशाला में तुलादान कार्यक्रम 14-15 को

धनबाद। श्री झरिया धनबाद गौशाला बस्ताकोला में मकर संक्रांति को लेकर सोमवार को बैठक हुई। अध्यक्षता महेंद्र कुमार अग्रवाल ने किया। बैठक में निर्णय लिया गया कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी मकर संक्रांति दो दिवसीय 14 जनवरी एवं 15 जनवरी को बस्ताकोला गौशाला में मनाया जायेगा। मकर संक्रांति पर तुलादान करने से अपने शरीर की वजन के बराबर गुड चोकर, हरा चारा, मूंग कोटा से करने से सभी ग्रहों की शांति एवं सभी कष्टों का निवारण होता है। कोई भी भक्त गौशाला में तुलादान करना चाहते हैं उसकी व्यवस्था गोशाला में है। गोशाला कमेटी के अध्यक्ष महेंद्र कुमार अग्रवाल, मुरलीधर पोद्दार द्वारका प्रसाद गोयनका, रामप्रसाद कटे सरिया, जगदीश तुलसियान, अशोक सराफ, शारदानंद सिंह अनिल खेमका पवन खरकिया, संदीप सांवरिया अनिल खरकिया सतीश अग्रवाल आदि सदस्य उपस्थित थे।

धूमधाम से मनाई गई गुरु गोविन्द सिंह की जयंती

टेल्को गुरुद्वारा में सम्मानित हुए मंत्री, टाटा मोटर्स प्लांट हेड व विधायक

- विधायक पूर्णिमा साहू ने झाड़ू लगाकर भक्ति भावना दर्शाई
- सांसद एवं पूर्व राज्यपाल भी हुए शामिल

प्रातःनागपुरी प्रतिनिधि

जमशेदपुर। खालसा पंथ के संस्थापक एवं सिखों के दसवें गुरु गोबिंद सिंह जी के 358 वें प्रकाश पर्व पर शहर में सिखों के द्वारा विशाल नगर कीर्तन सजाया गया।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी महाराज की छत्रछाया, पांच प्यारों की रहनुमाई और सेंट्रल गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के तत्वावधान में टेल्को से निकला विशाल नगर कीर्तन का समापन साकची गुरुद्वारा साहिब में हुआ।

आगे आगे ऊंट एवं घोड़े पर सवार सिख किशोर चल रहे थे और उसके पीछे-पीछे सिख मार्शल आर्ट गतका के पांच जत्थे चल रहे थे। इसमें शामिल छोटे-छोटे बच्चों भी सामर्थ्य अनुसार युद्ध कौशल को दर्शा रहे थे। उसके पीछे गुरुद्वारा कमत्यों द्वारा संचालित धार्मिक, मिडिल एवं हाई स्कूल के बच्चे बैंड की धुन पर अनुशासन के साथ मार्च कर रहे थे। आयोजक संस्था सेंट्रल गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भगवान सिंह चेयरमैन शैलेंद्र सिंह, चेयरमैन गुरमीत सिंह महासचिव गुरु चरण सिंह बिल्ला एवं उनकी टीम चल रही थी। यहां पूर्व प्रधान गुरमुख सिंह मुखे भी अपनी टीम के साथ नजर आए। वहीं फूलों से सजे पालकी पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी एवं पंच प्यारे शोभायमान थे। श्रद्धा के अनुसार पालकी साहब के आगे जल छिड़क झाड़ू देकर रास्ते को साफ किया जा रहा था और पुष्प वर्षा लगातार हो रही थी।

यहां जमशेदपुर पूर्व की विधायक पूर्णिमा साहू ने भी अपनी भक्ति भावना झाड़ू बुहारकर दर्शाई। पालकी साहब के पीछे आम श्रद्धालु महिलाएं तथा उसके पीछे गुरुद्वारा की स्त्री सत्संग सभाएं की बीबीयां पटना सहर बिखै भव लयो, मित्र प्यारे नू आदि कीर्तन गायन करते हुए चल रही थीं। इससे पहले टेल्को गुरुद्वारा साहिब में शिक्षा मंत्री रामदास सोरेन, जुगसलाई के विधायक मंगल कालिंदी, टाटा मोटर्स के प्लांट हेड अजितेश मोंगा , एसएसपी कौशल किशोर, प्रधान भगवान सिंह को चेयरमैन राम किशन सिंह, चेयरमैन अजीत सिंह, प्रधान बलविंदर सिंह ने शॉल ओढ़ा कर सम्मानित किया। नगर कीर्तन में पूर्व राज्यपाल रघुवर दास, सांसद विद्युत वरण महतो, कांग्रेस जिला अध्यक्ष आनंद बिहारी दुबे और विभिन्न राजनीतिक दलों के नेता शामिल हुए। संचालन टाटा मोटर्स यूनियन के अध्यक्ष गुरमीत सिंह तोते ने किया। यहां प्रधान बलविंदर सिंह, भाजपा नेता सतबीर सिंह सोमू एवं अन्य उपस्थित थे। नगर कीर्तन का कंट्रोल और व्यवस्था सेंट्रल नौजवान सभा के प्रधान भाई अमरीक सिंह, भाई हरविंदर सिंह, सुरजीत सिंह एवं उनकी पूरी टीम कर रही थी।

साकची में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की अगवानी प्रधान निशान सिंह एवं उनकी टीम ने किया। रास्ते में रामगढ़िया सभा, खालसा क्लब, क्रूज एवं विभिन्न सामाजिक राजनीतिक संगठनों के द्वारा श्रद्धालुओं के बीच बिस्कुट, चिप्स, पानी, चाय की सेवा की गई। कौमी सिख मोर्चा के अध्यक्ष कुलविंदर सिंह के अनुसार गुरु गोविंद सिंह जी का जन्म 22 दिसंबर 1666 को पटना में हुआ था और उन्होंने 1699 में खालसा पंथ की सृजना की और मुगलों के आतंक से देश धर्म स्वाभिमान की रक्षा के लिए अपने चार बेटे पिताजी मां का बलिदान दे दिया। उन्होंने खालसा पंथ सजाया और हुकुम दिया कि जाति धर्म का भेदभाव नहीं कर मानवता की सेवा ही करनी है।

खालसा क्लब की ओर से की गई संगत की सेवा

जमशेदपुर। गुरु गोविंद सिंह जी के 358 वें प्रकाश पर्व के मौके पर टेल्को से सजाए गए नगर कीर्तन में शामिल गतका दल, स्कूली बच्चे तथा स्त्री सत्संग सभाओं की बीबीयों की सेवा सामाजिक संस्था खालसा क्लब की ओर से की गई। ट्रस्टी सरदार संता सिंह, प्रधान भगवंत सिंह रूबी, महासचिव नरेंद्र सिंह, उपाध्यक्ष ज्योतिंद्र सिंह बब्बू, सचिव कुलविंदर सिंह ने फूलों से सजी पालकी साहब पर विराजमान श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी महाराज को पुष्पमाला अर्पित की और प्रसाद भेंट कर पूरे विश्व के मंगल कल्याण की कामना की। इसके साथ ही बच्चों युवाओं, बीबीयों एवं आम संगत के बीच चिप्स पैकेट ,पेयजल एवं चाय का वितरण किया गया। सरदार भगवंत सिंह, परविंदर सिंह सर्बजीत सिंह लाली बलबीर सिंह,सुरजीत सिंह, गुरसिमरन सिंह, मनजीत सिंह, जगविंदर सिंह आदि ने संगत की सेवा की।

बोकारो में भी सोल्लास मनाई गई जयंती

बोकारो। नगर के सेक्टर-2 गुरुद्वारा में श्रीगुरु गोविंद सिंह की जयंती मनाई गई। इसके लिए शनिवार से पाठ शुरू हुआ था, जिसका समापन किया गया। उसके बाद हरप्रीत कौर की कीर्तन मंडली की ओर से कीर्तन किया गया। गुरु गोविंद सिंह पब्लिक स्कूल के बच्चों की ओर से कीर्तन किया गया। रांची से भरपूर सिंह के नेतृत्व में आए रागी जत्था और पंजाब से आए बलविंदर सिंह ने कीर्तन किया। चास-बोकारो के सभी संगत यहां मिलकर श्रीगुरु गोविंद सिंह की जयंती में शामिल हुए। श्री गुरु गोविंद सिंह के जीवनी पर प्रकाश डाला गया, जिसमें कहा गया कि श्री गुरु गोविंद सिंह जी ने ही मुगलों के खिलाफ खालसा पंथ की स्थापना की थी। उन्होंने कहा था कि सखा लाख से एक लड़ाउं, चिड़ियन ते मैं बाज तुड़ाउं, तबै गुरु गोविंद सिंह नाम कहलाउं..। श्रीगुरु गोविंद सिंह सिखों के 10वें गुरु थे। उनका जन्म 1666 में पटना में माता गुजरी देवी और पिता गुरु तेगबहादुर जी के घर हुआ। उन्हीं के बचनों के अनुसार गुरुजी का नाम गोविंद राय रखा गया। वैशाखी वाले दिन गुरुजी पंज प्यारों से अमृत छक कर गोविंद राय से गुरु गोविंद सिंह जी बन गए। 1675 में कश्मीरी पंडितों की फरियाद सुनकर श्री गुरु तेगबहादुर जी ने दिल्ली के चांदनी चौक में बलिदान दिया। उसके बाद 11 नवंबर 1675 को गुरु गोविंद सिंह जी गुरु गद्दी में विराजमान हुए। उन्होंने धर्म और समाज की रक्षा के लिए गोविंद सिंह जी ने 1699 में खालसा पंथ की स्थापना की। उसके बाद सभी ने लंगर छका। मौके पर सुरेंद्र पाल सिंह, सचिव गुरमेल सिंह, सुरजीत सिंह, राम सिंह, इकबाल सिंह, यशपाल सिंह, हरदीप सिंह, तरसेम सिंह, शैलेंद्र सिंह, मनप्रीत सिंह, तजिंदर सिंह, लखविंदर सिंह आदि मौजूद थे।

180 लीटर नकली विदेशी शराब जब्त

प्रातःनागपुरी प्रतिनिधि

बोकारो। सोमवार को उत्पाद विभाग की टीम ने जरीडीह थाना क्षेत्र के तुपकाडीह में सुरेंद्र अग्रवाल के मकान में छापामारी किया। मकान से टीम ने दो जार में 40 लीटर स्पिरिट एवं मकान के पीछे बने कमरे व उसी कमरे के तहखाना से शराब बनाने की सामग्री बरामद की गई। इनमें विभिन्न ब्रांड के स्टीकर, खाली बोतल, विभिन्न ब्रांड के ढक्कन व झारखंड सरकार के नकली लोगों व 20 पेटी में 180 लीटर नकली विदेशी शराब जब्त किया गया। टीम ने मामले में संलिप्त अभियुक्तों पर उत्पाद अधिनियम के आधार पर मामला दर्ज किया है। मामले में निरीक्षक विजय पाल, अवर निरीक्षक सन्नी विवेक तिर्की, महेश दास आदि मौजूद थे।

विवाहिता का फंदे से लटकता शव बरामद, पति पर हत्या का आरोप

प्रातःनागपुरी प्रतिनिधि

बोकारो। सोमवार सुबह चास थाना क्षेत्र के वार्ड-23 स्थित राणा प्रताप नगर निवासी राजकुमार शर्मा की पत्नी मिताली शर्मा (36) को घर पर ही दुपट्टा के फंदे से झूलता शव बरामद किया गया है।

सूचना पर पहुंची चास पुलिस को मृतका के पति ने बताया कि वह अपने ओढ़नी से वेंटिलेटर पर फंदा लगाकर झूल गई। वहीं पुलिस की सूचना पर पहुंची मृतका की मां जमशेदपुर चांडिल निवासी रतना सरकार ने बताया कि 13 साल पहले पुत्री की शादी हुई थी और उन्हें 4 साल की एक बेटी है। बताया कि उनकी पुत्री की हत्या उसके पति राजकुमार ने ही कर दी और इसे आत्महत्या का रूप दे दिया है। पति उसे लगातार बार-बार प्रताड़ित कर रहा था। पति ट्रांसपोर्ट में काम करता है और उसका किसी लड़की से अवैध संबंध है, जिसके कारण घर में झगड़ा हुआ करता था। इसको लेकर कुछ दिनों पहले ही पुत्री ने इसकी शिकायत चास थाना में की थी। उस समय आरोपी पति ने समझौता करा लिया। लेकिन उसकी प्रताड़ना कम नहीं हुई। अपने रास्ते से हटाने के लिए रात में बेटी की हत्या कर आत्महत्या का रूप दिया गया। इसके बाद पुलिस ने आरोपी पति को हिरासत में ले लिया। साथ ही शव का पोस्टमार्टम कर परिजनों को सौंप दिया। पुलिस आगे की कार्रवाई में जुटी है।

तनावग्रस्त युवक ने फांसी लगाकर की खुदकुशी

बोकारो। सेक्टर 4जी स्थित आवास संख्या 4111 में गुमला जिला निवासी लगभग 42 वर्षीय निशांत कुमार उरांव ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। मृतक के भाई दीपांश उरांव ने बताया कि वह गांव गया हुआ था और घर के लोग भी बोकारो से बाहर थे। सोमवार को लौटने पर काफी खटखटाने के बाद दरवाजा नहीं खुला। किसी तरह दरवाजा खोला गया तो उसका भाई फांसी लगाए पंखे से लटका हुआ था। दीपांश के अनुसार उसका बेरोजगार भाई कई दिनों से काफी तनाव में था और उसका घरवालों व मां से विवाद भी होता रहता था। पुलिस के अनुसार, मामला प्रथम दृष्टया आत्महत्या का लगता है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद स्थिति स्पष्ट हो सकेगी।

स्वास्थ्य जांच शिविर में सैकड़ों ग्रामीण हुए लाभान्वित

प्रातःनागपुरी प्रतिनिधि

बोकारो। झारखंड ग्रामीण चिकित्सा कल्याण संस्थान की ओर से भतुआ पंचायत के पंचायत भवन में निःशुल्क चिकित्सा एवं जांच शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें सैकड़ों ग्रामीणों ने लाभ उठाया।

शिविर में बड़े-बुजुर्ग, महिलाएं, बच्चे आदि की जांच हुई तथा निशुल्क दवाइयां भी दी गईं। कार्यक्रम की अध्यक्षता मदन कुमार गुप्ता ने की। इसका उद्घाटन मुखिया उर्मिला देवी ने किया। शिविर को सफल बनाने में डॉ. मो. मुश्ताक, झारखंड ग्रामीण चिकित्सा कल्याण संस्थान के अध्यक्ष डॉ. बिनोद कुमार, डॉ गौतम गिरि (कोषाध्यक्ष), डॉ. मो. शमीम अंसारी (सचिव), डॉ. विपिन मुखर्जी, सोमनाथ मुखर्जी, डॉ. आर. प्रसाद, डॉ. मधुसूदन कुमार, डॉ. आनंद, गोविंद कुमार, पूर्व मुखिया नरेश चंद्र, उप मुखिया राजेश कपरदार, सत्येंद्र कुमार, मदन कुमार गुप्ता, रोहित, गौतम, सूरज आदि मौजूद रहे।

28 को नगर प्रशासन का घेराव करेगा संघ

बोकारो। बोकारो इस्पात जनता मजदूर संघ की कार्यसमिति की बैठक तारकेश्वर महतो उर्फ तारा बाबू की अध्यक्षता में हुई। मजदूर मैदान, जनवृत 4 में आयोजित इस बैठक में अध्यक्ष ने कहा कि 28 जनवरी को पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के तहत पूर्व मांग पत्र के आलोक में नगर प्रशासन का घेराव का निर्णय सुनिश्चित है। महामंत्री सुमन सिंह ने कहा कि स्थानीय मजदूर, बी.एस.एल प्लाटधारी, झुग्गी झोपडी, कार्यरत कर्मचारियों की समस्याओं के निदान में गति लानी है। संयुक्त मंत्री आशा देवी के अथक प्रयास से नये सदस्यों को जोड़ने के लिए सभी सदस्यो ने एकमत से उनकी प्रशंसा की। बैठक का संचालन करते हुए कार्यालय सह प्रेस सचिव गंगेश कुमार पाठक ने कहा कि अगामी बैठक में वार्षिक सम्मेलन सह वनभोज का कार्यक्रम निर्धारित होगा। बैठक में मिथिलेश पाल सिंह, सुमित सिंह, लक्ष्मण सिंह, भोला प्रसाद, शीलावती, मंजु देवी, मदन पाठक, श्रवण कुमार झा आदि मौजूद रहे। उपाध्यक्ष नवीन सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

बोकारो के पत्रकार दीपेंद्र का निधन, शोक की लहर

प्रातःनागपुरी प्रतिनिधि

बोकारो। हिन्दी दैनिक समाचार-पत्र आजाद सिपाही के बोकारो प्रभारी दीपेंद्र प्रभंजन का सोमवार दोपहर आकस्मिक निधन हो गया। दोपहर 4:15 बजे बोकारो जनरल अस्पताल में इलाज के दौरान वह चल बसे।

प्राप्त जानकारी के अनुसार विगत कुछ दिनों से वह चेचक (चिकन पॉक्स) से पीड़ित थे और बीजीएच के सीसीयू वार्ड में उनका इलाज चल रहा था। उनकी स्थिति काफी नाजुक हो गई थी। इसी बीच सोमवार को हृदयाघात से उनका निधन हो गया। लगभग 50 वर्षीय दीपेंद्र अपने सरल स्वभाव और पत्रकारिता में बेहतरीन योगदान के लिए जाने जाते थे। उनके निधन से बोकारो के पत्रकारिता जगत में शोक की लहर दौड़ गई है। साथी पत्रकारों ने उनके निधन पर गहरा दुख करते हुए उनकी आत्मा को शांति और परिजनों को इस कठिन समय में संबल प्रदान करने की प्रार्थना की है।

खाद्य प्रसंस्करण एवं संरक्षण प्रशिक्षण आयोजित

बोकारो थर्मल। बोकारो थर्मल डीवीसी सीएसआर में महिलाओं एवं युवतियों के लिए सोमवार को खाद्य प्रसंस्करण और संरक्षण प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण का उदघाटन डीवीसी के डीजीएम प्रशासन बीजी होलकर, इप्टा नारायणपुर की सुभद्रा कुमारी, गोविंदपुर ई पंचायत की समिति सदस्य अनिता देवी एवं बांकुड़ा से आये प्रशिक्षक सुजीत कुमार सेनगुप्ता ने संयुक्त रुप से किया। एक सप्ताह तक चलनेवाले प्रशिक्षण में सभी को विभिन्न प्रकार के आचार, जैम, जेली, टमाटर एवं चिल्ली सॉस आदि बनाने को सिखाया जाएगा। मौके पर डीजीएम ने कहा कि डीवीसी सीएसआर द्वारा इस प्रकार के प्रशिक्षण से महिलाओं एवं युवतियों को आत्मनिर्भर बनाकर उन्हें स्वावलंबी बनाने का प्रयास किया जा रहा है, जिससे वे अपने आजीविका को लेकर सतत प्रयत्नशील रहें और परिवार को आर्थिक रुप से मदद करने में उनकी भी भागीदारी हो सके। मौके पर सीएसआर के भैरो महतो सहित सभी कर्मी मौजूद थे।

विद्यार्थियों ने लिया आदर्शों को आत्मसात करने का संकल्प

बोकारो। सेक्टर-3सी स्थित सरस्वती शिशु मंदिर में सोमवार को गुरु गोविन्द सिंह की जयंती मनाई गई। कार्यक्रम का शुभारंभ उनके चित्र पर पुष्पार्चन एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। इस अवसर पर कक्षा चतुर्थ से अष्टम, नवम तक के छात्र-छात्राओ ने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर अपने विचार रखे। सभी ने उनके त्याग, वीरता और साहस की प्रशंसा अपने वक्तव्यों में की। मुख्य वक्ता विद्यालय के आचार्य मनोज पाठक ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि गुरु गोविंद सिंह के जीवन का एक-एक क्षण हम सभी के लिए प्रेरणादायी है। कार्यक्रम का नेतृत्व प्रधानाचार्य संजीव कुमार ने किया। कार्यक्रम समाप्ति से पूर्व बच्चों को चॉकलेट बांटी गई और सभी ने गुरु गोविंद सिंह के आदर्शों को अपने जीवन में आत्मसात करने का संकल्प लिया।

झारखंड राज्य राजभाषा कर्मचारी संघ की हुई बैठक

धनबाद। झारखंड राज्य राजभाषा कर्मचारी संघ की एक महत्वपूर्ण बैठक जफीरुद्दीन के आवास आयुषी अपार्टमेंट, धनबाद में संपन हुई। बैठक की अध्यक्षता करते हुए महफूज आलम ने कहा कि उर्दू- हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार एवं विकास हमारी जिम्मेदारियों में से एक है जिसे हम नजरअंदाज नहीं कर सकते। बैठक में इस बात पर चिंता व्यक्त की गयी कि झारखंड राज्य में अब तक राजभाषा कर्मचारियों को प्रोन्नति नहीं दी गयी है, जबकि बिहार राज्य में इन कर्मचारियों को प्रोन्नति दी गयी है। बैठक को संबोधित करते हुए तदर्थ समिति के सचिव ने कहा कि अगर हमारी जायज मांगें पूरी नहीं हुईं तो हम कोर्ट जायेंगे। शकील अनवर ने कहा कि इस सम्बन्ध में विभाग को आवेदन दिया गया है लेकिन अब तक कोई सकारात्मक कार्रवाई नहीं हुई है। गुलाम सरवर ने कहा कि पदोन्नति के इंतजार में कई कर्मचारी सेवानिवृत्त हो चुके हैं और निकट भविष्य में अधिकांश राजभाषा कर्मचारी सेवानिवृत्त हो जायेंगे। इस बात पर भी अफसोस जताया गया कि झारखंड गठन के बाद राजभाषा में कोई नयी नियुक्ति नहीं हुई है, जो चिंता का विषय है। कुछ कर्मचारियों के एसीपी और एमएसीपी के मामले पिछले कुछ वर्षों से लंबित हैं, जिससे उन्हें आर्थिक नुकसान हो रहा है।

बोकारो में दस दिवसीय इस्पातांचल स्वदेशी मेला का शुभारंभ

राष्ट्रप्रेम के प्रति जागृति की भावना लाता है स्वदेशी मेला : ओझा

प्रातःनागपुरी प्रतिनिधि

बोकारो। स्वदेशी वस्तु एक आरंभ है, देश को महान बनाने का। स्वदेशी मेला अपने आप में विशिष्ट है। जो राष्ट्र के प्रति लोगों में जागृति की भावना लाती है। यह कहना है स्वदेशी जागरण मंच के पूर्व राष्ट्रीय संयोजक एवं अर्थ चिंतक अरुण ओझा का।

वह सेक्टर-4 स्थित मजदूर मैदान में आयोजित 10 दिवसीय स्वदेशी मेला के उद्घाटन में बतौर मुख्य वक्ता बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि देशभर में सबसे ज्यादा प्रदेशों में मेला लगाए जा रहे हैं। 50 प्रदेशों में मेला लग चुका है। लोग मेला का आनंद लें। वहीं, मुख्य अतिथि बीएसएल की अधिशासी निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन) राजश्री बनर्जी ने कहा कि यहां पूरे भारत का दर्शन करने का मौका मिलता है। यह मेला स्वावलंबन व सशक्तिकरण का प्रतीक है। विशिष्ट अतिथि पूर्व विधायक बिरंची नारायण ने कहा कि यह स्वदेशी मेला नहीं, वरन् स्वदेशी क्रांति है। यह क्रांति का दीया, जिस दिन बुझेगा, उसी दिन से देश गर्त में चली जाएगी। 2014 के बाद ठेंगरी जी के प्रेरणा से स्वदेशी जागरण मंच ने चीनी वस्तु के बहिष्कार का जो आंदोलन चलाया, वह आज साक्षात देखने को मिल रहा है। इसके पूर्व, अतिथियों ने भारत माता की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर मेले का शुभारंभ किया। अतिथियों का स्वागत अंग वस्त्र देकर किया गया। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता महानगर संघ चालक रंजीत बरनवाल ने की तथा संचालन अजय चौधरी दीपक ने किया। विषय प्रवेश मेला संयोजक ब्रजेश कुमार सिंह ने व धन्यवाद ज्ञापन प्रमोद कुमार सिन्हा ने किया। क्षेत्रीय संयोजक अमरेंद्र कुमार सिंह आदि मौजूद थे।

सुधार के बावजूद संकटों से घिरा भारतीय विमानन क्षेत्र

-प्रियंका सौरभ

यह सुनिश्चित करने के लिए कि विमानन सुरक्षा वैश्विक मानकों के अनुरूप हो, भारत को एक बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए, नियामक निरीक्षण को बढ़ाना, उन्नत तकनीक में निवेश करना और कौशल विकास को प्राथमिकता देना, घटना रिपोर्टिंग तंत्र को मजबूत करना, सुरक्षा-प्रथम संस्कृति का निर्माण करना और अंतर्राष्ट्रीय निकायों के साथ सहयोग करना इस क्षेत्र को भविष्य के लिए सुरक्षित बनाएगा, यात्रियों का विश्वास, परिचालन उत्कृष्टता सुनिश्चित करेगा और वैश्विक विमानन सुरक्षा मानकों में भारत का नेतृत्व सुनिश्चित करेगा। विमानन क्षेत्र को मजबूत बनाने के लिये सरकार को विमानन नीति में आमूलचूल बदलाव करने की जरूरत है।

भारत का विमानन क्षेत्र, जो वैश्विक स्तर पर तीसरा सबसे बड़ा क्षेत्र है, आर्थिक विकास और कनेक्टिविटी में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। नागरिक उड्डयन महानिदेशालय के तहत एक मजबूत नियामक ढांचे के बावजूद, कोझीकोड (2020) में एयर इंडिया एक्सप्रेस दुर्घटना जैसी बार-बार होने वाली घटनाएँ विमानन सुरक्षा में प्रणालीगत चुनौतियों को उजागर करती हैं। अंतर्राष्ट्रीय मानकों के साथ तालमेल बिठाने और यात्रियों का भरोसा सुनिश्चित करने के लिए इन मुद्दों पर विचार करना महत्त्वपूर्ण है। चिंतनीय स्थिति यह है कि अभी चाहे इंडिगो, स्पाइसजेट और गोएयर जैसी प्राइवेट कंपनियाँ हों या एयर इंडिया जैसी सरकारी कंपनी, लगभग सभी एयरलाइंस वित्तीय मोर्चे पर लगातार संघर्ष कर रही हैं। बोइंग 737 मैक्स विमानों को परिचालन से हटा दिये जाने के कारण स्थिति और भी खराब हो गई है। भारतीय विमानन बाजार में विमान किराए तेजी से बढ़ रहे हैं। इस कारण मध्यम वर्ग के यात्री जो इकोनॉमी क्लास में यात्रा करते थे, वे अब ट्रेन से यात्रा को तरजीह दे रहे हैं।

भारत का विमानन बाजार वैश्विक स्तर पर सबसे तेजी से बढ़ने वाले बाजारों में से एक है, जिसमें हवाई यात्रियों की संख्या बढ़ रही है और हवाई अड्डे के बुनियादी ढांचे का विस्तार हो रहा है। दिल्ली के टर्मिनल 3 और बैंगलोर के केम्पेगौड़ा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे जैसे आधुनिक हवाई अड्डों का निर्माण मजबूत बुनियादी ढांचे के विकास को दर्शाता है। नागरिक उड्डयन महानिदेशालय ऑपरेटरों और विमानों के लिए सुरक्षा अनुपालन और प्रमाणन सुनिश्चित करता है। नागरिक उड्डयन महानिदेशालय की वार्षिक सुरक्षा ऑडिट रिपोर्ट एयरलाइनों और हवाई अड्डों के परिचालन मानकों का मूल्यांकन करती है। भारत अंतरराष्ट्रीय नागरिक उड्डयन संगठन अनुलग्नक 13 पर हस्ताक्षरकर्ता है, जो दुर्घटनाओं की जांच और वैश्विक सुरक्षा प्रोटोकॉल का पालन सुनिश्चित करता है। कोझिकोड दुर्घटना (2020) के बाद, नागरिक उड्डयन महानिदेशालय ने अंतरराष्ट्रीय नागरिक उड्डयन संगठन-अनुरूप सुरक्षा ऑडिट किया और सुधारात्मक दिशा-निर्देश जारी किए। प्रमुख भारतीय वाहकों ने सुरक्षा और दक्षता बढ़ाने के लिए उन्नत सुरक्षा सुविधाओं वाले आधुनिक विमानों को अपनाते हुए अपने बेड़े का विस्तार किया है। इंडिगो एयरलाइंस एयरबस ए320नियो का

संचालन करती है, जो ईंधन दक्षता और सुरक्षा उन्नयन के लिए जानी जाती है। 2016 की राष्ट्रीय नागरिक उड्डयन नीति विकास, क्षेत्रीय संपर्क और विमानन बुनियादी ढांचे में सार्वजनिक-निजी भागीदारी को बढ़ावा देने पर केंद्रित है। उड़ान योजना ने सब्सिडी और प्रोत्साहन के माध्यम से क्षेत्रीय हवाई यात्रा को सुलभ बनाया।

बार-बार होने वाली विमानन सुरक्षा घटनाओं की चुनौतियों में रनवे भ्रम सबसे पहले है। पायलटों को अक्सर टैक्सीवे और रनवे के बीच अंतर करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिससे गलत सतहों पर टेकऑफ या लैंडिंग होती है। मोपा घटना (2024) और सुलूर एयर बेस घटना (1993) बार-बार होने वाले रनवे भ्रम को उजागर करती हैं। उड़ान और ड्यूटी समय विनियमों के अपर्याप्त कार्यान्वयन से चालक दल थक जाता है, जिससे निर्णय लेने और परिचालन सुरक्षा से समझौता होता है। कोझिकोड दुर्घटना में पायलट थका हुआ था, जिसके कारण कैप्टन पर बाद की उड़ानों को संचालित करने का दबाव था। एयरलाइंस रनवे मार्किंग और एप्रोच प्रोटोकॉल पर पर्याप्त पायलट प्रशिक्षण प्रदान करने में विफल रही, जिसके कारण बार-बार गलतियाँ हुईं। स्पाइसजेट विमान (2020) को रनवे एप्रोच तकनीकों के अनुचित ज्ञान के कारण कठिन लैंडिंग का सामना करना पड़ा। नागरिक उड्डयन महानिदेशालय के ऑडिट अक्सर हवाई अड्डे के बुनियादी ढांचे और संचालन में महत्त्वपूर्ण सुरक्षा अंतराल की पहचान करने या उन्हें सम्बोधित करने में विफल रहते हैं। मुंबई (2019) और हुबली (2015) जैसे हवाई अड्डों पर ओवररन अपर्याप्त सुरक्षा उपायों के परिणामस्वरूप हुए। ऑन-टाइम परफॉरमेंस पर अत्यधिक जोर पायलटों को सुरक्षा प्रोटोकॉल की अनदेखी करते हुए जोखिम भरे निर्णय लेने के लिए मजबूर करता है। मंगलुरु दुर्घटना (2010) दबाव के कारण हुई, जिसमें पायलट ने गो-अराउंड चेतावनियों को खारिज कर दिया।

अंतर्राष्ट्रीय मानकों के साथ संरेखित करने के लिए व्यापक सुधार पायलट प्रशिक्षण में वृद्धि, एयरलाइंस को रनवे भ्रम और स्थिर दृष्टिकोण जैसे परिदृश्यों के लिए सिम्युलेटर-आधारित प्रशिक्षण में सुधार करना चाहिए। सिंगापुर एयरलाइंस ने ताइवान दुर्घटना (2000) के बाद पायलट प्रशिक्षण को संशोधित किया, ताकि इसी तरह की घटनाओं की पुनरावृत्ति को रोका जा सके। चालक दल की ड्यूटी सीमा के लिए वैश्विक मानकों को लागू करें और बिना किसी समझौते के अनुपालन को लागू करें। यू.एस. संघीय उड्डयन प्रशासन ने उड़ान चालक दल के लिए सख्त विश्राम अवधि अनिवार्य की है, जिससे थकान से होने वाली गलतियाँ कम होती हैं। पारदर्शिता और सीखने को सुनिश्चित करने के लिए दुर्घटना की जाँच के लिए एक स्वतंत्र निकाय की स्थापना करें। यू.एस. में राष्ट्रीय परिवहन सुरक्षा बोर्ड विमानन घटनाओं की निष्पक्ष जाँच सुनिश्चित करता है। अंतरराष्ट्रीय नागरिक उड्डयन संगठनमानकों को पूरा करने के लिए रनवे मार्किंग, नेविगेशन एड्स और लाइटिंग सिस्टम सहित हवाई अड्डे के बुनियादी ढाँचे को अपग्रेड करें। सिंगापुर और दुबई में आधुनिक हवाई अड्डे (इंजीनियर्ड मैटेरियल अरेस्टिंग सिस्टम) जैसी उन्नत प्रणालियों के साथ सुरक्षा को प्राथमिकता देते हैं। पायलटों को दोष देने से हटकर न्यायपूर्ण संस्कृति को बढ़ावा देना, प्रतिशोध के डर के बिना त्रुटि रिपोर्टिंग को प्रोत्साहित करना। अंतरराष्ट्रीय नागरिक उड्डयन संगठन की वैश्विक विमानन सुरक्षा योजना एक प्रमुख प्राथमिकता के रूप में सुरक्षा संस्कृति पर जोर देती है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि विमानन सुरक्षा वैश्विक मानकों के अनुरूप हो, भारत को एक बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए, नियामक निरीक्षण को बढ़ाना, उन्नत तकनीक में निवेश करना और कौशल विकास को प्राथमिकता देना, घटना रिपोर्टिंग तंत्र को मजबूत करना, सुरक्षा-प्रथम संस्कृति का निर्माण करना और अंतर्राष्ट्रीय निकायों के साथ सहयोग करना इस क्षेत्र को भविष्य के लिए सुरक्षित बनाएगा, यात्रियों का विश्वास, परिचालन उत्कृष्टता सुनिश्चित करेगा और वैश्विक विमानन सुरक्षा मानकों में भारत का नेतृत्व सुनिश्चित करेगा। विमानन क्षेत्र को मजबूत बनाने के लिये सरकार को विमानन नीति में आमूलचूल बदलाव करने की जरूरत है। विमानन क्षेत्र में दीर्घकालीन ढाँचागत सुधार किये बिना कुछ हासिल नहीं हो सकता। इसके लिये सरकार, नागरिक उड्डयन मंत्रालय, बैंकों और नागरिक उड्डयन महानिदेशालय द्वारा ऐसे कदम उठाना आवश्यक है जिनसे विमानन कंपनियाँ घाटे के दुष्चक्र से बाहर निकल सकें।

संपादकीय

सुविधा और पर्यावरण हित

वायु प्रदूषण से निपटने के लिए सुप्रीम कोर्ट ने होलोग्राम आधारित रंग कोड़ वाले स्टीकर को अनिवार्य बनाने पर विचार करने को कहा है। शीर्ष अदालत ने 2018 में सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय के प्रस्ताव को स्वीकार किया था जिसमें दिल्ली-एनसीआर इलाके में पेट्रोल-सीएनजी का इस्तेमाल करने वाले वाहनों में होलोग्राम आधारित अलग-अलग रंग के स्टीकर लगाने की परिकल्पना की गई थी। इनमें वाहन के पंजीकरण की तारीख भी शामिल होनी थी। अदालत के आदेश के बाद केंद्र ने होलोग्राम आधारित स्टीकर की योजना को कानूनी मान्यता देने के लिए केंद्रीय मोटर वाहन अधिनियम, 1989 के नियम 50 और उच्च सुरक्षा पंजीकरण प्लेट आदेश, 2001 में संशोधन किया। एनसीआर में हर साल सर्दियों में वायू प्रदूषण की बढ़ती समस्या को देखते हुए सख्त कदम उठाने की जरूरत बढ़ती जा रही है। एनसीआर में उप्र, राजस्थान, हरियाणा शामिल हैं। देश में 2022 में कुल पंजीकृत वाहनों की संख्या साढ़े पैंतीस करोड़.के करीब थी, जो इन दो सालों में तीव्र गति से बढ़ी है।

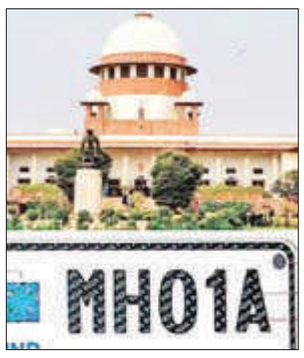

दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा सड़क नेटवर्क होने के कारण परिवहन उत्सर्जन से होने वाला प्रदूषण तेजी से बढ़ता जा रहा है। ये वहान पेट्रोल, ड़ीजल और सीएनजी के अतिरिक्त मेथनॉल, ईथनॉल, ईधन सेल हाइड्रोजन, एलएनजी, एलपीजी और सौर से भी चालित हैं। सबके लिए जरूरी है विशेष पहचान। इस स्टीकर के अलग-अलग रंग दूर से इनके ईधन के संकेतक बन सकेंगे। देश के कई शहरों में वायु प्रदूषण जानलेवा स्तर तक पहुंचता है जिसमें सुधार लाने के प्रयास आवश्यक होते जा रहे हैं परंतु बार-बार नये नियम लाद कर जनता से वसूली करना भी सरकारी विभागों की उगाही का जरिया बन चुका है। देश में सबसे बड़ी संख्या दो-पहिया वाहनों की 2.95 लाख बताई जाती है जो सड़क सुरक्षा के साथ ही खराब हवा में सांस लेने को भी मजबूर हैं। प्रदूषणजनित रोगों के अतिरिक्त सड़क हादसों पर लगाम लगाने में सरकारी तंत्र बुरी तरह असफल है। बात भले ही नंबर प्लेट बदलने की हो या किसी तरह के स्टीकर लगाने की, सरकारी स्तर पर ऐसे प्रयास होने चाहिए कि वाहन पंजीकरण के दरम्यान ही इन सबका एकमुश्त शुल्क वसूला जा सके। न कि बार-बार चालान काट कर वाहन चालकों से वसूली चालू की जाए। इससे न सिर्फ जनता परेशान होती है, बल्कि सरकारी संसाधनों और यातायात पुलिस का काम भी बढ़ जाता है। सुविधाओं या नियमों को लागू करने की भी संयमित व्यवस्था जरूरी है।

चिंतन-मनन

क्यों कहते हैं विष्णु भगवान को नारायण

भगवान विष्णु के हजारों नाम हैं। इनमें एक प्रमुख नाम है नारायण। फिल्मों, टीवी सीरियल या रामलीला में आपने देखा होगा कि नारद मुनि भगवान विष्णु को नारायण नाम से पुकारते हैं। इस नाम का धार्मिक रूप से बड़ा महत्व है। इस एक नाम में सृष्टि का संपूर्ण सार छिपा हुआ है। इसलिए शास्त्रों में अधिकांश स्थानों पर विष्णु भगवान को नारायण नाम से संबोधित किया गया है। हिन्दू धर्म में अठारह पुराणों का वर्णन मिलता है। इन अठारह पुराणों में विष्णु पुराण एक है। इस पुराण में सृष्टि की रचना का वर्णन किया गया है। इसी प्रम में बताया गया है किस प्रकार विष्णु भगवान ने वाराह रूप धारण करके पृथ्वी को रसातल यानी पाताल लोक से उठाकर जल के मध्य में स्थित किया। इसके बाद ब्रह्मा जी ने सत्व, रज और तम गुणों से असुर, देव, राक्षस, यक्ष, मनुष्य, सर्प एवं अन्य जीव-जन्तुओं की रचना की।

विष्णु पुराण में बताया गया है कि सृष्टि के समाप्ति के समय सब कुछ जल में समा जाता है और संपूर्ण ब्रह्माण्ड अंधकारमय हो जाता है। भगवान विष्णु चिर निद्रा में जल में शयन करते हैं। देवताओं का दिन आरंभ होने पर भगवान विष्णु फिर से सृष्टि की रचना करते हैं और ब्रह्मा एवं शिव की उत्पत्ति उन्हीं से होती है। भगवान विष्णु प्रथम नर रूप में व्यक्त होते हैं। इसलिए शास्त्रों में इन्हें आदिपुरूष कहा गया है। आदि पुरूष विष्णु का निवास यानी आयन नार यानी जल है इसलिए भगवान विष्णु को नारायण नाम से संबोधित किया जाता हैं।

सामूहिक योगदान से ही बच सकेगी धरा

मुकेश तिवारी

सन् 1907के पश्चात जब जब इसकी ईजाद हुई प्लास्टिक में हमारे जनजीवन में अहम भूमिका अदा की, और आज भी हमारे जीवन में इसकी मौजूद की बनी हुई है। 20वीं सदी का तथा कथित आश्चर्यजनक उत्पादन आज हमारे पर्यावरण का धीरे-धीरे गला दबोच रहा है ,और हमारी पर्वत श्रृंखलाओं और समुद्री को दुत गति के साथ प्रदूषित करता जा रहा है। प्लास्टिक कितने दिनों में सड़ता है इसके बारे में निश्चित रूप से कोई नहीं जानता संभव है कि इसमें 450 वर्ष से अधिक का वक्त लग जाए

पिछले तीन दशकों में प्लास्टिक के उत्पादन और खपत में काफी वृद्धि हुई है। आज दूध के बोतल,बैग से लेकर पानी की बोतले , बर्तन,पेन मोबाइल, घरेलू सामान सब कुछ प्लास्टिक से निर्मित है। यह मानव निर्मित होने की वजह से प्रकृति इसे स्वीकार नहीं करती। सिंगल यूज वाली प्लास्टिक की वस्तुओं ने पर्यावरण को काफी क्षति पहुंचाई है। इसकी कम कीमत के कारण इसका उत्पादन काफी बड़े पैमाने पर होता है, और इसके खतरनाक जहरीलेपन को नजरंदाज कर दिया जाता है।आज विश्व भर में 12 अरब टन प्लास्टिक मौजूद हैं, इसमें कोई अतिशयोक्ति भी नहीं है, ऐसा कोई शहर नहीं बचा है। जहां प्लास्टिक कचरे के पहाड़ न बन चुके हो। आंकड़ों पर पर एतबार करें तो विश्व भर में महज पांच में से एक हिस्से के प्लास्टिक की रिसाइकिल हो पातीं है। इस तरह इसका 80फीसदी हिस्सा लैंडफिल साइट अथवा सीधे समुद्र में जा रहा है। प्लास्टिक स्तनधारियों को प्रत्यक्ष रूप से असमय ही मौत के मुख में पहुंचा रहा है। क्यों कि वे इसे गटक रहे हैं,या यह उनके खाने की वस्तुओं में मिल रहा है, ओर इस तरह पादप जीवन को नष्ट कर रहा है, और इसी तरह मानव को भी। हर साल एक लाख से अधिक समुद्री जीव जंतु प्लास्टिक में फंसने के कारण असमय ही मर जाते हैं। काफी बड़ी संख्या में ह्वेल, पक्षी,सील और कछुए समुद्र में प्लास्टिक की थैलियों के फेंके जाने के कारण मार जाते हैं। क्यों कि ये जीव जंतु इन प्लास्टिक की थैलियों को भोजन समझकर ग्रहण कर लेते हैं।

शोधकताओं के मुताबिक बड़ी खबरें नदियों से होते हुए 95 फीसदी प्लास्टिक समुद्र में पहुंच रहा है। तकरीबन 1.5करोड टन प्लास्टिक समुद्र में कचरे के तौर पर फेंक दिया जाता है। इसमें सबसे बड़ा हिस्सा हिद महासागर का है, इसके बाद यह कचरा कहा जाता है। यह आज भी एक रहस्य है, वैज्ञानिकों के मुताबिक ज्यादातर कचरा बंगाल की खाड़ी में जमा हो रहा है। विश्व भर में सिंगल यूज प्लास्टिक को लेकर जागरूकता तो आई है। दुनिया के तमाम देश ऐसे हैं जिन्होंने सिगल यूज प्लास्टिक के दुष्परिणमों को देखते हुए काफी लम्बे समय से इसके उत्पादन और उपयोग पर प्रतिबंध लगा रखा है। विश्व भर में ऐसे 16देश है, जिसमें यूके, अमेरिका, ताइवान जैसे देश शामिल हैं। इसके अलावा तकरीबन 127देश एक ऐसा कानून बनाने की तैयारी में है, जिससे प्लास्टिक का उत्पादन और उपयोग पूरी तरह से बंद किया जा सके।

एशिया में सर्वाधिक प्लास्टिक का उत्पादन किया जाता है। हमारे देश में नगर निगमों के ठोस कचरा मैं इसकी मौजूद की सबसे ज्यादा होती है। अकेले हिंदुस्तान में 28,940 टन प्लास्टिक कचरे का उत्पादन प्रतिदिन होता है और इसी तरह वह प्लास्टिक कचरे के उत्पादन में 10 फीसदी से अधिक का योगदान करता है। काबिलेगोर है कि समस्या प्लास्टिक के उत्पादन में इतनी नहीं है, बल्कि एक उपभोक्ता के रूप में इसके कुप्रबंध इसकी रिसाइकलिंग कि आप्रभावी नीतियों से और उत्पादको की कोई जिम्मेदारी नहीं होने से है। फिर कचरा प्रबंधन की बुनियादी सुविधा को उन्नत बनाना, इसमें नवाचार जिस द्रुत गति से प्लास्टिक कचरे का उत्पादन बढ़ रहा है उससे तालमेल मिलाकर नहीं चल रहा। कचरा इकट्ठा करने वालों और कबाडी वालों या स्क्रैप डीलरों की अनौपचारिक श्रृंखला की मदद से प्लास्टिक के बोतल कंटेनर आदि पुनः उपयोग में या रिसाइकलिंग के लिए पहुंच जाते हैं। हालांकि इस बात के ठोस प्रयास किया जा रहे हैं कि कठोर प्लास्टिक पैकिंग और रीसाइकिलिंग कंपनियां भी करें। लेकिन सिंगल प्रयोग वाले अन्य प्लास्टिक उत्पादनों जैसे थैली। कैंडी को लपेटने वाली प्लास्टिक ,तंबाकू की पैकिंग के लिए प्रयुक्त होने वाले पाउच , साबुन की पैकिंग और शैंपू के खाली पाउच को जमा करना या तो बहुत ही दुरुह होता है या फिर इससे पैसे नहीं मिलते। इसका एक उदाहरण है ई कॉमर्स उद्योग कि शुरूआत होने के बाद से पैकिंग पैकेजिंग कचरे में वृद्धि हुई है। इसका पता इसी से चलता है की कुल उत्पादन के लगभग 40 फीसदी हिस्से का प्रयोग पैकिंग पैकेजिंग के लिए होता है ई-कॉमर्स उद्योग का उपभोक्ता आधार बढ रहा है क्योंकि यह सस्ता, सुलभ समय बचाने वाला होता है। कोई वही वस्तु जिसका ऑनलाइन ऑर्डर किया जाता है। वह प्लास्टिक बैग में पैक होकर आर्डर करने वाले के पास आता है। यह प्लास्टिक कचरे में इजाफा करता है। पिछले कुछ सालों में सिंगल यूज प्लास्टिक के प्रयोग को कम करने जैसे पूरी तरह से रोकने की दिशा में ठोस प्रयास हुए हैं और इसमें तेजी आ रही है। चीन एशिया में प्लास्टिक का सबसे बड़ा उत्पादक देश है उसने भी सिंगल यूज प्लास्टिक के दुष्परिणामों को देखते हुए। पतले प्लास्टिक बैग्स को पूर्णत प्रतिबंधित कर दिया है और मोटे बैग्स पर रिटेलर से शुल्क वसूलना प्रारंभ कर दिया है। माना जाता है कि चीन सरकार की इस पहल से प्लास्टिक बैग के प्रयोग में 70 फीसदी कमी आई है। तेज गति से बढ़ाने वाली अर्थव्यवस्था और 1.3 अरब की जनसंख्या के साथ भारत समुद्र में मिल रहे प्लास्टिक की कचरे में बड़ा योगदान करता है। उसको प्लास्टिक कचरे के प्रबंधन में भी परेशानी हो रही है। सरकार और जनता प्लास्टिक के दुष्परिणामों को भली-भांति समझ रही है और इसे उचित अहमियत दी जा रही है सिंगल यूज प्लास्टिक पर प्रतिबंध तब तक सफल नहीं होगा जब तक कि हम में से प्रत्येक व्यक्ति इसके प्रयोग को न ना कहे।

केन्द्रीय सरकार ने भी स्वच्छ भारत और हर घर जल जैसी बड़ी योजनाओं के पश्चात अब देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश में सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग को खत्म करने की युद्ध स्तर पर मुहिम छेड़ रखी है। स्वतंत्रता दिवस के मौके पर लाल किले से मोदी ने भारत को प्लास्टिक प्रदूषण से मुक्त करने की घोषणा की थी। उस पर सख्ती से अमल किया जा रहा है। यूरोपीय यूनियन ने भी वर्ष 2021 से सिंगल उसे प्लास्टिक आइटम का उपयोग पूरी तरह से बंद कर का चुकी है जबकि चीन के कमर्शियल हब शंघाई ने भी सिंगल यूज प्लास्टिक पर साल 2025 तक पूर्ण का प्रबंध का लक्ष्य है।

ऐसा नहीं है कि प्लास्टिक सिर्फ जमीन या जल स्रोतों को ही प्रदूषित कर रहा है एक रिपोर्ट के मुताबिक एक व्यक्ति हर सप्ताह एक क्रेडिट कार्ड के आकार जितना प्लास्टिक खा लेता है। जो कि तकरीबन 5 ग्राम जितना बजनी होता है। इसमें से ज्यादातर वह पानी के साथ पीता है। प्लास्टिक को समाप्त किए जाने के साथ-साथ हमें इसके कु प्रबंधन से भी रुवरु होना चाहिए और कैसे रीसाइकलिंग और दोबारा प्रयोग को मुख्यधारा में लाया जाए। इस बारे में भी बड़े स्तर पर जागरूकता और विश्व स्तर पर लक्ष्य के साथ सफाई अभियान चलाने की सख्त जरूरत है ताकि हम कितनी प्रगति कर रहे हैं इसकी जानकारी हमें मिलती रहे। सडने गलने वाले प्लास्टिक और शून्य कचरा की बात को सरकार और पर्यावरण के प्रति जागरूक लोग अब समझने लगे हैं इसे देखते हुए प्लास्टिक रीसाइकलिंग उद्योग में तेजी आने की उम्मीद की जा रही है। इस क्रांति से प्लास्टिक के उत्पादन में कच्चे माल को बचाने लैंड फील्ड की समस्या कम करने ऊर्जा की खपत कम करने में सफलता मिलेगी।

टीम इंडिया में अब बदलाव की जरूरत

मनोज चतुर्वेदी

भारतीय टीम सिड़नी टेस्ट में हार कर पिछले एक दशक में पहली बार ऑस्ट्रेलिया के हाथों बोर्डर-गावस्कर ट्रॉफी को गंवा बैठी। इस दौरे और इससे पहले न्यूजीलैंड़ के हाथों घर में पहली बार 3-1 से सफाये के बाद लगने लगा है कि टीम इंड़िया में अब बदलाव की जरूरत है। सही है कि इस सीरीज को खोने में बल्लेबाजों के योजना के हिसाब से नहीं खेलने, टीम चयन में गलतियां करने की तो भूमिका रही ही, टीम के दिग्गज बल्लेबाजों का नहीं चलना भी बड़ा कारण रहा। बेहतरीन स्पिनरों में शुमार रखने वाले रविचंद्रन अश्विन के बीच दौरे में संन्यास लेने की घोषणा के बाद महसूस किया जा रहा था कि कप्तान रोहित शर्मा और विराट कोहली भी इस तरफ कदम बढ़ख सकते हैं।

भारतीय कप्तान ने अपनी खराब फॉर्म की वजह से जब सिड़नी टेस्ट की अंतिम एकादश से अपने को बाहर रखा तो लगा कि बदलाव के दौर की शुरूआत होने जा रही है। पर रोहित ने अगले ही दिन साफ कर दिया कि सिड़नी टेस्ट नहीं खेलने का फैसला टीम के हित में लिया गया था पर मैं टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेने नहीं जा रहा। वहीं विराट ने भी ऐसे कोई संकेत नहीं दिए हैं। शायद इसकी वजह भारत को अब जून माह में इंग्लैंड़ का दौरा करके विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के अगले संस्करण की शुरूआत करनी है। अगला टेस्ट सीरीज में लंबा समय होने की वजह से ही शायद वह इस बारे में सोचने के लिए समय लेना चाहते हैं। भारतीय कोच गौतम गंभीर से जब सीरीज खत्म होने पर सवाल पूछा गया कि रेड़ बॉल क्रिकेट में क्या दीर्घकालीन योजना बनाने और युवाओं पर फोकस करने का समय आ गया है, तो उनका जवाब था कि इस बारे में तत्काल चर्चा की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि टेस्ट सीरीज पांच महीने बाद होनी है। पांच महीने में बाद क्या होगा, हमें पता नहीं है। उस समय कौन कहां होगा। मैं इतना ही कह सकता हूं कि जो भी होगा, टीम के हित में होगा। गंभीर ने इतना जरूर कहा कि मैं किसी खिलाड़ी के भविष्य के बारे में कुछ नहीं कह सकता, यह उन पर ही निर्भर है पर सीनियर खिलाड़ियों में अभी भूख बाकी है और वह भारतीय क्रिकेट को आगे ले जा सकते हैं।

मौजूदा भारतीय टीम ही नहीं, बल्कि हर टीम में बदलाव का दौर आता है। 2011-14 तक भी भारतीय टीम में ऐसा ही दौर आया था। उस समय सचिन तेंदुलकर, राहुल द्रविड़, अनिल कुंबले और वीवीएस लक्ष्मण जैसे खिलाड़ियों ने संन्यास लिया था और उनकी जगह विराट कोहली, रोहित शर्मा, चेतेश्वर पुजारा और रविचंद्रन अश्विन ने ली थी। खिलाड़ियों को तो अक्सर लगता है कि उनमें अभी क्रिकेट बाकी है पर इस बारे में चयन समिति और कोच को ही सख्त फैसला करने की जरूरत होती है। तभी सही समय पर विकल्प तैयार किए जा सकते हैं। कई बार टीमें बदलाव करने में पिछड़. जाती हैं तो उन्हें पटरी पर आने में बहुत समय लग जाता है। इस बारे में श्रीलंका का उदाहरण हमारे सामने है। कोई दिग्गज खिलाड़ी लय में नहीं होता है तो कहा जाता है कि उसके लय में आने के लिए एक अच्छी पारी की देर है। विराट ने पर्थ टेस्ट में शतकीय पारी खेली। यह पारी भी उनकी समस्या का समाधान नहीं निकाल सकी और लगातार एक ही तरह से ऑफ स्टंप से बाहर की गेंदों पर ड्राइव करने के प्रयास में स्लिप में लपके जाते रहे। विराट की यह समस्या कोई पहली बार सामने नहीं आई है। यह कुछ सालों से इस समस्या से जूझ रहे हैं। लगता है कि उनके रिफलेक्सस में कमी आ रही है। वह दुनिया के बेजोड़. खिलाड़ी हैं और उन्होंने देश का सम्मान बढ़ाने वाली तमाम पारियां खेली हैं पर हर खिलाड़ी का समय आता हैड्ड जब उसे विराम के बारे में सोचना पड़ता है। इसी तरह रोहित की स्थिति तो और भी खराब है। वह पिछले आठ टेस्टों में 10 से कुछ ऊपर के औसत से ही रन बना सके हैं, जिसमें सिर्फ एक ही अर्धशतक है। इस सीरीज में तो वह तीन टेस्ट की पांच पारियों में 31 रन ही बना सके हैं।

सिड़नी टेस्ट में भारत की हार में दूसरी पारी में जसप्रीत बुमराह के बाहर होने की भी अहम भूमिका रही पर यह भी सच है कि टीम प्रबंधन का दो स्पिनर खिलाने का फैसला भी गलत साबित हुआ। इसका प्रमाण ऑफ स्पिनर वाशिंगटन सुंदर से पूरे मैच में एक ओवर ही फिंकवाया गया। बल्लेबाजी में भी वह कुछ खास

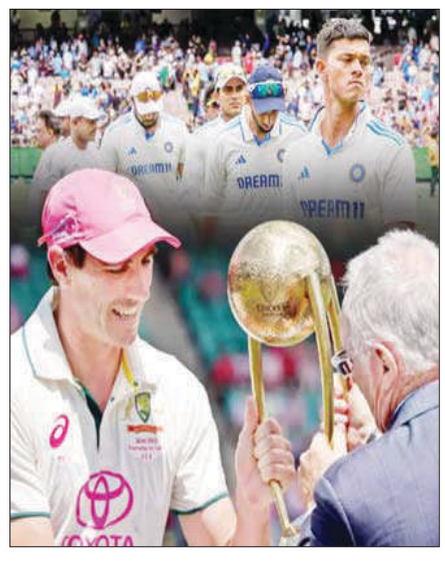

न कर सके। बेहतर होता कि किसी पेसर को टीम में रखा जाता। ऐसा होता तो बुमराह के दूसरी पारी में उपलब्ध न होने पर अटैक में ज्यादा दिक्कत नहीं आती। चौथे टेस्ट में शुभमन गिल को बाहर बैठाने का फैसला भी समझ से परे रहा। सीरीज में भारत ने तीसरे गेंदबाज के तौर पर आकाशदीप और हर्षित राणा का इस्तेमाल किया और वे प्रभावी नहीं रहे। सिराज के लय में न होने से भी मुश्किलें बढ़ीं। उधर, हेजलवुड़ के चोटिल होने पर बोलैंड़ का ऑस्ट्रेलिया ने इस्तेमाल किया और उन्होंने ऑस्ट्रेलिया को सीरीज जिताने में बड़ी भूमिका निभाई।

ऑर्गेनिक खेती आजकल कई शिक्षित युवाओं को अपनी ओर आकर्षित कर रही है। जमीन से जुड़े इस करियर में काफी अच्छी कमाई है। साथ ही सरकार इसे प्रोत्साहित करने के लिए ऑर्गेनिक कृषकों को कई तरह से सहायता उपलब्ध कराती है।

ऑर्गेनिक खेती खेत उगलें सोना

देश की लगभग 70 प्रतिशत आबादी कृषि पर निर्भर है, वहीं यह सेक्टर पचास फीसद से ज्यादा आबादी को रोजगार भी उपलब्ध कराता है। इसके अलावा हाल के वर्षों में जिस तरह से कृषि क्षेत्र में आधुनिकीकरण हुआ है, इसमें नई टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल बढ़ा है, पारंपरिक खेती के साथ-साथ ऑर्गेनिक और इनोवेटिव फार्मिंग हो रही है, उसने एग्रीकल्चर के प्रति समाज और खासकर युवाओं का नजरिया काफी हद तक बदला है। यही कारण है कि बीते कुछ समय में आईआईटी और आईआईएम से पास-आउट कई युवाओं ने मल्टीनेशनल कंपनियों की जॉब छोड़कर एग्रीकल्चर और एग्रीबिजनेस की ओर रुख किया है। इनके अलावा भी दूसरे सेक्टरों में काम करने वाले युवा हॉर्टिकल्चर, डेयरी, ऑर्गेनिक और पोल्ट्री फार्मिंग जैसे पेशे से जुड़ रहे हैं। उन्हें गर्व है कि वे देश और किसानों के लिए कुछ सकारात्मक कर पा रहे हैं।

ऑर्गेनिक खेती बनाए मालामाल

ऑर्गेनिक खेती का जिक्र तो आजकल बहुत हो रहा है, लेकिन सवाल यह है कि अगर किसी को इसमें करियर बनाना है, तो वह क्या करे। गौरतलब है कि यह ऐसी खेती है, जिसमें सिंथेटिक खाद, कीटनाशक आदि जैसी चीजों के बजाय तमाम ऑर्गेनिक चीजें जैसे गोबर, वर्मी कंपोस्ट, बॉयोफर्टिलाइजर्स, क्रॉप रोटेशन तकनीक आदि का इस्तेमाल किया जाता है। कम जमीन में, कम लागत में इस तरीके से पारंपरिक खेती के मुकाबले कहीं ज्यादा उत्पादन होता है। यह तरीका फसलों में जरूरी पोषक तत्वों को संरक्षित रखता है और नुकसानदेह केमिकल्स से दूर रखता है। साथ ही यह पानी भी बचाता है और जमीन को लंबे समय तक उपजाऊ बनाए रखता है। यह पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में मददगार है।

कैसे करें शुरूआत?

अगर आपको ऑर्गेनिक खेती शुरू करनी है, तो सबसे पहले आपको इसका प्रोजेक्ट या ब्लू प्रिंट बनाना होगा। यह तय करना होगा कि कितनी जमीन पर यह खेती करेंगे। जमीन की लोकेशन क्या है? जमीन किस फसल के लिए अच्छी है? आपका बजट कितना है? यह प्रोजेक्ट किसी भी चार्टर्ड एकाउंटेंट से बनवा सकते हैं। इसके बाद आपको फॉर्म 1ए-1, 1ए-3, 1जी और फॉर्म 11 भरकर रजिस्ट्रेशन फीस के साथ अपने राज्य के डिपार्टमेंट ऑफ ऑर्गेनिक सर्टिफिकेशन में जमा करना होगा।

सरकार देती है सब्सिडी

कृषि वैज्ञानिक आपकी जमीन की जांच करेंगे और यह तय करेंगे कि इसकी मिट्टी किस फसल की खेती के लिए अच्छी है। इसके बाद आपका प्रोजेक्ट कृषि विभाग में पास होने के लिए भेज दिया जाएगा। ऑर्गेनिक फार्मिंग के लिए तकरीबन हर राज्य में सरकार 80 से 90 फीसद तक सब्सिडी देती है। मतलब यह आपको पूरे प्रोजेक्ट में 10 से 20 फीसद ही इनवेस्ट करना होगा। प्रोजेक्ट पास होने के बाद ऑर्गेनिक फार्मिंग टेक्निक वाली कंपनियां सेटअप लगाने के लिए आपसे खुद संपर्क करती हैं। सरकार से मिले पैसों से ये कंपनियां आपकी जमीन पर ग्रीन हाउस और ऑर्गेनिक फार्मिंग के लिए सेटअप लगाती है। साथ ही आपको ट्रेनिंग भी देती हैं।

पूरे देश में चल रहा प्रोजेक्ट

सरकार की ओर से नेशनल ऑर्गेनिक फार्मिंग प्रोजेक्ट भी चलाया जा रहा है। इसके सेंटर की वेबसाइट से आप और भी जानकारी ले सकते हैं। दिल्ली स्थित पूसा इंस्टीट्यूट से भी पूरी जानकारी और ट्रेनिंग ले सकते हैं।

सिर्फ मानसून पर निर्भर नहीं कृषि

कृषि अब पूरी तरह से मानसून पर निर्भर नहीं है। वैज्ञानिक तरीके से अगर खेती की जाए, तो फसल भी अच्छी होती है और पानी भी कम लगता है। पहले जैसे सूखे के हालात अब नहीं पैदा होते। अब बारिश के पानी का स्टोरेज भी बेहतर तरीके से किया जाता है। इससे बारिश कम होने पर भी फसलों को पर्याप्त पानी मिल जाता है।

सेल्फ एम्प्लॉयमेंट का जरिया

एग्रीकल्चर स्वरोजगार का सबसे अच्छा साधन है। इससे अब अच्छी कमाई भी की जा सकती है। बहुत से प्रोफेशनल फार्मर साइंटफिक फार्मिंग के जरिये न सिर्फ अच्छा पैसा कमा रहे हैं, बल्कि दूसरों को भी रोजगार दे रहे हैं। यही नहीं, प्राइवेट और गवर्नमेंट दोनों सेक्टरों में एग्रीकल्चर का स्कोप तेजी से बढ़ रहा है।

एग्रीबिजनेस भी है आकर्षक

आज के समय में जो भी कंपनी किसानों के साथ बिजनेस ट्रांजैकशन कर रही है, फिर चाहे वह खाद्यान्न, फल, फूल से जुड़ा हो या किसी सर्विस से, उसे एग्रीबिजनेस सेक्टर में शामिल किया जाता है। इसी तरह बीज, कीटनाशक, एग्रीकल्चर इक्विपमेंट की सप्लाई, एग्री-कंसल्टेंसी, एग्रो प्रोडक्ट्स की स्टॉकिंग, फसल का बीमा कराने या खेती के लिए लोन देने का काम भी एग्रीबिजनेस के अंतर्गत आता है। एग्री प्रोडक्शन में इनवेस्टमेंट से लेकर उसकी मार्केटिंग तक का काम एग्रीबिजनेस कहलाता है। भारत का एग्रीकल्चर सेक्टर आज सिर्फ अनाजों के उत्पादन तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि इसमें बिजनेस के अवसर भी काफी बढ़ चुके हैं। फसलों की हार्वेस्टिंग से लेकर प्रोसेसिंग, पैकेजिंग, स्टोरेज और ट्रांसपोर्टेशन में काम करने के कई सारे मौके पैदा हुए हैं। इसके अलावा एडवांस टेक्नोलॉजी के आने से फूड प्रोसेसिंग इंडस्ट्री और फूड रिटेल सेक्टर में अनेक प्रकार के रोजगार सृजित हुए हैं। इसी तरह जो युवा एग्रीबिजनेस मैनेजमेंट जैसे कोर्स करते हैं, उन्हें मल्टीनेशनल कंपनियों में अच्छे पे-पैकेज पर रखा जा रहा है। इसके अलावा, एग्रीकल्चर और इससे जुड़े फील्ड के क्वॉलिफाइड यूथ के लिए वेयरहाउस, फर्टिलाइजर, पेस्टिसाइड, सीड और रिटेल कंपनी में तमाम तरह के विकल्प सामने आ चुके हैं।

ऐसा बोलें कि सब सुनें

अपनी बात कहने से पहले दूसरों की बात गौर से सुनें-गुनें और उनकी उम्मीदों-अपेक्षाओं को समझें, ताकि जब आपके कहने की बारी आए, तो दूसरे भी आपकी बातों को ध्यान से सुनें और प्रभावित हों। जॉब सर्च, इंटरव्यू या नौकरी के दौरान अपनी बात से दूसरों को मुरीद बनाने की कम्यूनिकेशन स्किल के टिप्स दे रहे हैं मोटिवेटर।

अच्छे वक्ता वे होते हैं, जो बोलते हैं तो लोग ध्यान से सुनते हैं। आज स्थिति यह है कि आप अपनी बात को कितने प्रभावशाली ढंग से रखते हैं, उसी पर आपको करियर या जीवन के किसी भी क्षेत्र में मिलने वाली कामयाबी निर्भर करती है। जरा सोचिए, आप किसी मंच पर अपनी बात रख रहे हैं, तो लोग उसे क्यों सुनना चाहेंगे? अगर आप वहां उपस्थित लोगों की मन :स्थिति, उनकी रुचियों, अपेक्षाओं को ध्यान में रखते हुए प्रस्तावित विषय को जोड़ेंगे, तभी लोग उससे प्रभावित होंगे।

सीखें कहने की कला

आप चाहे जितनी हायर स्टडी कर लें या तकनीकी ज्ञान हासिल कर लें, जब तक उसके बारे में लोगों को अच्छी तरह बताने की कला में पक्के नहीं हो जाते, तब तक लोग आपके ज्ञान से कतई प्रभावित नहीं हो सकते। इसलिए जितना जरूरी ज्ञान प्राप्त करना है, उससे कहीं ज्यादा जरूरी अपनी कम्यूनिकेशन स्किल विकसित करना है। अगर आप एक बार कहने की कला में पारंगत हो गए, तो चाहे पब्लिक स्पीकिंग हो या फिर इंटरव्यू या ग्रूप डिस्कशन या फिर मार्केटिंग फील्ड में अपने क्लाइंट को प्रभावित करना हो, हर जगह आप कामयाबी हासिल कर सकते हैं।

होमवर्क जरूरी

अगर आप किसी संस्थान में जॉब हासिल करना चाहते हैं, तो वहां अप्लाई करने से पहले या साथ-साथ उसके बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारी जुटाने का प्रयास करें। मसलन यह कि कंपनी क्या काम करती है, मार्केट में उसकी छवि कैसी है, वहां के लोगों को मार्केट में कितना आदर-सम्मान दिया जाता है आदि। यह सब जानने के बाद ही आप इंटरव्यू के दौरान वहां के एचआर को बता सकते हैं कि आप वहां के लिए कितने उपयोगी हो सकते हैं। 90 फीसद से ज्यादा उम्मीदवार ऐसा नहीं करते। ऐसे में इंटरव्यू के वक्त जब उनसे पूछा जाता है कि आप संस्थान की तरक्की में किस तरह का योगदान दे सकते हैं, तो उम्मीदवारों के पास तार्किक जवाब नहीं होता। फिर वे जो भी जवाब देते हैं, उसकी कोई अहमियत नहीं रह जाती। अगर कंपनी के बारे में आपको जानकारी है, तो आप आत्मविश्वास के साथ अपनी बात कह सकते हैं।

तोल-मोल कर बोलें

जब कभी इंटरव्यू के लिए जाएं, तो अपने रेज्यूमे में लिखी बातों का ध्यान रखें। अपने बारे में वही बताएं, जो आपने रेज्यूमे में पहले लिखकर भेजा है। इंटरव्यू के दौरान पूरी विनम्रता से, मीडियम टोन में अपनी बात रखें। न तो इतनी जोर से बोलें कि आपकी आवाज कमरे से बाहर तक सुनाई दे और न ही इतना धीमे बोलें कि सामने वाले लोग आपकी बात सुन ही न पाएं। अगर आपकी आवाज कर्कश, बेसुरी है, तो संगीत साधना की तरह घर पर इसे विनम्र-मधुर बनाने का रियाज करें। आगे आपको हर जगह इसका फायदा मिलता नजर आएगा।

सुनें ज्यादा, बोलें कम

इंटरव्यू या क्लाइंट मीटिंग के दौरान बीच में बोले बिना सामने वाले की बातों को गौर से सुनें। उनकी बात खत्म होने के बाद दस सेकंड सोचें और अपनी सूझ-बूझ का परिचय देते हुए विनम्रता से जवाब दें या अपनी बात रखें। एक बार जो बोलें, उसे बदलें नहीं। न ही किसी बात पर उत्तेजित हों।

द्वीपों के देश में विद्या का सागर

इंडोनेशिया की चर्चा आमतौर पर इसकी समृद्ध संस्कृति और पर्यटकों के लिए ढेरों आकर्षणों के कारण होती है। मगर, अब यह उच्च शिक्षा के लिए भी जाना जाने लगा है। भारतीय विद्यार्थियों के लिए अतिरिक्त आकर्षण यह है कि यहां उन्हें काफी हद तक घर जैसा ही लग सकता है। विश्व के सबसे बड़े द्वीप समूह वाला यह देश प्राकृतिक विविधता से विदेशियों को अपनी ओर आकर्षित करता रहा है। विदेशी विद्यार्थियों के मामले में इसका क्रम काफी नीचे रहा है लेकिन अब इसमें सुधार हो रहा है।

शोध कार्य

इंडोनेशिया में आज विभिन्न देशों द्वारा कई तरह के अनुसंधानात्मक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। शिक्षा क्षेत्र में भी शोध कार्यों को प्राथमिकता दी जा रही है। शोध कार्यों के लिए सरकार हर संभव सहायता उपलब्ध करा रही है। इनकी निगरानी के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर की टीचिंग फैकल्टी की व्यवस्था की जा रही है। शोध कार्यों को मिल रहा प्रोत्साहन भी विदेशी विद्यार्थियों की संख्या में इजाफा कर रहा है। समृद्ध संस्कृति और पर्यटन आकर्षणों वाला यह देश धीमी रफ्तार से ही सही, अब अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों के आकर्षण का केंद्र बनने लगा है।

भाषा है पहली पसंद

पढ़ाई के लिए जितने भी विद्यार्थी विदेश जाते हैं, उनका एक बड़ा वर्ग वहां की भाषा का ज्ञान हासिल करने के लिए ही जाता है। इंडोनेशिया की भाषा सरल है, जिसे आसानी से सीखा जा सकता है। यहां के विश्वविद्यालयों में अभी भी बहुत-से कोर्स स्थानीय भाषा में ही चलाए जा रहे हैं। आप इस भाषा को सीखकर विभिन्न विषयों में आगे की पढ़ाई भी कर सकते हैं। इंडोनेशिया में यहां की भाषा से संबंधित कई तरह के कोर्स चलाए जा रहे हैं। कोर्स के आधार पर ट्यूशन फीस और समयावधि अलग-अलग है। इस तरह के कोर्स करके आप चाहें तो यहां विभिन्न विषयों में पोस्ट ग्रेजुएशन की पढ़ाई भी कर सकते हैं।

सरकारी सहायता

इंडोनेशिया में विदेशी विद्यार्थियों को आकर्षित करने के लिए सरकारी स्तर पर कई प्रयास किए जा रहे हैं। इसमें विभिन्न विषयों में स्कॉलरशिप और कई अन्य तरह की सहायताएं शामिल हैं। आप इंडोनेशिया की भाषा और संस्कृति के बारे में शिक्षा हासिल करना चाहते हैं, तो ऐसी सहायता आपको आसानी से मिल सकती है।

सीखने को बहुत कुछ

इस देश में शिक्षा के दौरान यहां की कला, संगीत, इतिहास, साहित्य, सभ्यता आदि आपको बहुत कुछ सिखाएगी। यहां का रहन-सहन और लोगों का अपनी संस्कृति से लगाव जीवन के हर दौर में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता रहेगा। यहां के विश्वविद्यालयों में कला-संस्कृति को प्रोत्साहित करने के कई तरह के कार्यक्रम होते रहते हैं।

लघु भारत का अहसास

विदेश में शिक्षा के लिए देश के चयन में जो पैमाने प्रमुख होते हैं, उनमें एक यह भी है कि वहां आपको संस्कृति, भाषा, रंग आदि के आधार पर किसी तरह की परेशानियों का सामना न करना पड़े। इंडोनेशिया में भारतीय संस्कृति की छाप हर जगह दिखाई देती है, जो यहां भारतीय विद्यार्थियों को लघु भारत का अहसास कराती है।

वीसा के लिए जरूरी बातें

स्टूडेंट वीसा के लिए वैध पासपोर्ट, कलर पासपोर्ट-साइज फोटोग्राफ, उस संस्थान का प्रमाणपत्र जहां आपने शिक्षा के लिए प्रवेश लिया है, फीस एवं रहने संबंधी खर्चों को वहन करने की सक्षमता का प्रमाण आदि की आवश्यकता पड़ती है। अगर आप इंडोनेशियन भाषा के अलावा किसी अन्य कोर्स में प्रवेश लेना चाहते हैं, तो आपको इंडोनेशियन भाषा में निपुणता का प्रमाण देना पड़ सकता है। इंडोनेशिया में विद्यार्थी के पास चिकित्सा स्वास्थ्य बीमा होना अनिवार्य है।

संक्षिप्त खबरें

सम्पत्ति विवाद को लेकर मारपीट

मढ़ौरा (सारण)। थाना क्षेत्र के शिल्हौड़ी में सम्पत्ति बंटवारा विवाद में हुई मारपीट की घटना में पति- पत्नी जख्मी हो गए। घटना को लेकर जख्मी जयपाल प्रसाद के द्वारा एक प्राथमिक की दर्ज कराई गई है । दर्ज प्राथमिक में उसी गांव के इंद्रजीत कुमार यादव, चितरंजन राय, चंदन राय, रवि शंकर राय का लड़का को आरोपित किया गया है। प्राथमिकी में कहा गया है कि सभी एक राय होकर उसके दरवाजे पर आए और उसे लाठी, डंडा, रड से मारपीट करने लगे। जिसमें चोट लगने से वह जख्मी होकर जमीन पर गिर गया। जब उसे बचाने उसकी पत्नी रूबी कुमारी पहुंची तो सभी आरोपियों ने उसके साथ भी मारपीट कर उसे जख्मी कर दिया। जख्मी पति पत्नी का इलाज मढ़ौरा सरकारी अस्पताल में कराया गया है।

लखीसराय : पॉक्सो एक्ट का आरोपित गिरफ्तार

सूर्यगढ़ा (लखीसराय)। एसआइ मो आलम के नेतृत्व में सूर्यगढ़ा थाना की पुलिस ने बेगूसराय जिले के नीमा चांदपुरा गांव में छापेमारी कर इसी गांव के योगी राम उर्फ भगवान राम के पुत्र पॉक्सो एक्ट मामले के आरोपित पांडव कुमार उर्फ अंकित कुमार को गिरफ्तार किया है। पुलिस के मुताबिक सूर्यगढ़ा थाने में दर्ज मामले के तहत पॉक्सो एक्ट मामले की प्राथमिकी दर्ज कराया गया था। उक्त मामले में पांडव कुमार उर्फ अंकित कुमार नामजद है। आरोपी फरार चल रहा था।

महिला की गला दबाकर हत्या, प्राथमिकी दर्ज

सिमराहा (अररिया)। सिमराहा थाना क्षेत्र की बोकड़ा पंचायत स्थित थरिया वकिया वार्ड संख्या 10 में रविवार की रात एक 45 वर्षीय महिला बीवी अंसरी पति स्व मंसुर आलम की गला दबाकर हत्या कर दी गई। घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांच शुरू की। एफएसएल की टीम को भी बुलाया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल अररिया भेज दिया। सिमराहा थानाध्यक्ष प्रेम कुमार भारती ने बताया कि अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया है। मामले की गहन छानबीन जारी है।

12 नाबालिग करायी गयीं मुक्त, तीन गिरफ्तार

छपरा। ऑर्केस्ट्रा में नाबालिग लड़कियों के शोषण के मामले में सारण पुलिस ने बड़ी कार्रवाई की है। एसपी डॉ कुमार आशीष के निर्देश पर बनियापुर, जलालपुर व कोपा थाने की पुलिस द्वारा सोमवार की सुबह 12 नाबालिग लड़कियों को मुक्त कराया गया। साथ ही तीन ऑर्केस्ट्रा संचालकों को गिरफ्तार किया गया। एसपी ने बताया कि इन सभी नाबालिग लड़कियों से ऑर्केस्ट्रा में काम कराया जा रहा था। साथ ही इनका शोषण भी किया जाता था।

जॉलीवुड निवेशकों का जेल भरो अभियान

मुंगेर। जॉलीवुड निवेशकों की जमाराशि वापसी, फरार अभियुक्तों की तत्काल गिरफ्तारी एवं सफेदपोश - मास्टरमाइंडों को बेनकाब करने की मांग को लेकर जॉलीवुड निवेशकों ने सोमवार को जेल भरो अभियान चलाया। शहीद स्मारक के पास से निवेशक प्रदर्शन प्रदर्शन करते हुए एसपी कार्यालय पहुंचकर अपनी गिरफ्तारी दी। अभियान का नेतृत्व जॉलीवुड निवेशक संघर्ष मोर्चा के मुख्य संरक्षक संजय केशरी ने की।

सिकंदराबाद-रक्सौल स्पेशल ट्रेन का विस्तार

समस्तीपुर। यात्रियों की सुविधा के मद्देनजर सिकंदराबाद और रक्सौल के मध्य चलायी जा रही 07005/07006 स्पेशल ट्रेन के परिचालन अवधि में विस्तार किया जा रहा है। 07005 सिकंदराबाद-रक्सौल स्पेशल अब 31 मार्च तक सप्ताह के प्रत्येक सोमवार को परिचालित की जायेगी। 07006 रक्सौल-सिकंदराबाद स्पेशल 3 अप्रैल तक सप्ताह के प्रत्येक गुरुवार को परिचालित की जायेगी। वहीं जम्मूतवी स्टेशन पर चल रहे यार्ड रिमाडलिंग कार्य के मद्देनजर कई ट्रेनों के परिचालन में बदलाव किया गया है। इसमें कामाख्या और श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस का भी परिचालन एक दिन रद्द किया जा रहा है। 12 जनवरी को कामाख्या से खुलने वाली 15655 कामाख्या-श्री माता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रेस व 15 जनवरी को श्री माता वैष्णो देवी कटरा से खुलने वाली 15656 श्री माता वैष्णो देवी कटरा-कामाख्या एक्सप्रेस का परिचालन रद्द रहेगा।

वाजपेयी ने ही हमें बनाया था सीएम उनके मूल्य मुझे करते हैं प्रेरितः नीतीश

- मुख्यमंत्री ने प्रगति यात्रा के क्रम में वैशाली जिला को 276 करोड़ 80 लाख रुपये की दी सौगात

पटना/वैशाली। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने आज प्रगति यात्रा के क्रम में वैशाली जिला को 276 करोड़ 80 लाख रुपये की सौगात दी। मुख्यमंत्री ने रिमोट के माध्यम से 344 विकासात्मक योजनाओं का उद्घाटन एवं शिलान्यास किया। इसके अंतर्गत 113 करोड़ 37 लाख रुपये की लागत से 118 योजनाओं का उद्घाटन तथा 163 करोड़ 43 लाख रुपये की लागत से 226 योजनाओं का शिलान्यास किया।

मुख्यमंत्री के वैशाली दौरे में जिले के पटेहरी बेलसर ब्लॉक के नगरवा गांव और महनार शामिल थे। जहां उन्होंने जल जीवन हरियाली अभियान के तहत औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) और एक तालाब के सौंदर्यीकरण जैसी प्रमुख पहलों का शुभारंभ किया।

नगरवा और महनार में प्रमुख परियोजनाएं : मुख्यमंत्री ने नगरवा गांव एक तालाब के सौंदर्यीकरण का उद्घाटन किया और नगरवा के उत्क्रमित मध्य विद्यालय में शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्रामीण विकास और महिला सशक्तीकरण के लिए विभागीय स्टॉल का निरीक्षण किया। मुख्यमंत्री ने महनार में एक आईटीआई का उद्घाटन किया और क्षेत्र में बुनियादी ढांचे और कौशल प्रशिक्षण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अतिरिक्त विकासात्मक पहलों की शुरुआत की।मुख्यमंत्री ने हाजीपुर के बिहार सुधार प्रशासन संस्थान (बीआईसीए) में चल रही जिला स्तरीय परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा के लिए वरिष्ठ अधिकारियों के साथ एक उच्च स्तरीय बैठक भी की।

अपने दौरे के दौरान, मुख्यमंत्री ने जीविका सदस्यों से मुलाकात की और ग्रामीण परिवर्तन में उनके प्रयासों की सराहना की। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे जीविका, एक स्व-सहायता समूह मॉडल के रूप में संकल्पित है, जो पूरे बिहार में महिलाओं को सशक्त बनाने में सहायक रही है।

राजनीतिक सवालों का जवाब देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि मैं अपने काम पर ध्यान केंद्रित करता हूं और राजनीतिक विवादों में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है। मेरी प्राथमिकता हमेशा विकास और शासन रही है। उन्होंने कहा, "मुझे अटल बिहारी वाजपेयी जी के मार्गदर्शन में पहली बार मुख्यमंत्री बनने का सम्मान मिला, जिन्होंने मुझे बहुत सम्मान दिया। उनके मूल्य मुझे प्रेरित करते रहते हैं।

निर्मली स्टेशन पर ट्रेन के नीचे फंसी गर्भवती महिला, यात्रियों ने बचाया

- ट्रेन से उतरने के दौरान पैर फिसलने से हुई घटना

सुपौल। निर्मली रेलवे स्टेशन पर सोमवार की सुबह एक महिला हादसे का शिकार हो गयी। 23 वर्षीय गर्भवती महिला सुबह करीब 8:30 बजे लहेरियासराय-सहरसा मेमू ट्रेन के नीचे फंस गयी। इससे वह गंभीर रूप से घायल भी हो गयी। महिला की पहचान ललितग्राम थाना क्षेत्र के नया ग्राम टेंगरी निवासी सत्य नारायण कुमार की पत्नी सरिता कुमारी के रूप में हुई है। घटना के बाद आरपीएफ और स्थानीय लोगों की मदद से करीब 35 मिनट तक चले रेस्क्यू ऑपरेशन में महिला को ट्रेन के नीचे से सुरक्षित बाहर निकाला गया। निर्मली एचपीएस कॉलेज के छात्र कृष्णा और एक प्ले स्कूल के निदेशक मो आशिक ने जोखिम उठाकर ट्रेन के नीचे दबी महिला को बचाया। दोनों ने बिना समय गंवाए महिला को बाहर निकालने के लिए जी-जान से प्रयास किया। कृष्णा ने बताया कि घटना की जानकारी मिलते ही वे स्टेशन पहुंचे। जबकि मो आशिक उसी ट्रेन में यात्रा कर रहे थे। रेलवे स्टेशन पर मौजूद स्टेशन मास्टर मनोज कुमार, एसटीबीए असिस्टेंट मुजीबुल रहमान और आरपीएफ अधिकारी हरि नारायण चौधरी की अहम भूमिका रही। ट्रेन को आगे-पीछे कर महिला को बाहर निकाला गया।

हादसे की वजह से 8:34 बजे स्टेशन पर पहुंची ट्रेन को 9:15 बजे रवाना किया गया। निर्मली अस्पताल में डॉ। विजय कुमार और जीएनएम रीना कुमारी ने महिला का प्राथमिक इलाज किया। डॉ विजय कुमार ने बताया कि महिला को बाएं जांघ और कमर में गंभीर चोट लगी है। प्राथमिक उपचार के बाद उसे दरभंगा मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल (डीएमसीएच) रेफर कर दिया गया।

ट्रैक्टर के धक्के से गिट्टी-बालू सप्लायर की मौत

मझौलिया (पचं)। थाना क्षेत्र के गुरचुरवा रेलवे गुमटी पर रविवार की मध्य रात्रि तेज रफ्तार से आ रहे ट्रैक्टर ने बाइक चालक टक्कर मार दी। इसमें बाइक चालक की मौत हो गई। उसकी पहचान थाने की बैठनिया भानाचक पंचायत वार्ड 10 के गुरचुरवा निवासी बच्चा प्रसाद के पुत्र मैनेजर प्रसाद (45) के रूप में की गयी है। पुलिस ने लाश को पोस्टमार्टम कराकर परिजन को सौंप दिया है। इस बीच उसकी पत्नी रागिनी देवी ने जानबूझकर ठोकर मारकर मौत के घाट उतारने का आरोप लगाया है। पत्नी ने थाने में आवेदन देकर बताया है कि पति और पीछे से दूसरी बाइक पर मेरे भतीजे जयप्रकाश कुमार घर से जरूरी काम के लिए मझौलिया बाजार जा रहे थे। रेलवे गुमटी पर मझौलिया की ओर से तीव्र रफ्तार से ट्रैक्टर लेकर आ रहे चालक वीरेंद्र कुशवाहा व ट्रैक्टर मालिक नंदू कुशवाहा ने जानबूझकर बाइक में टक्कर मार दी। इसमें पति गंभीर रूप से जख्मी हो गए। पीछे से मेरा भतीजा पहुंचा, तो दोनों लोग ट्रैक्टर लेकर फरार हो गए।

अररिया में डकैतों ने की लूटपाट, विरोध करने पर मारी गोली

कुर्साकांटा (अररिया)। प्रखंड क्षेत्र के कुर्साकांटा सुंदरी मार्ग पर बलचंदा वार्ड संख्या 05 में सोमवार की देर रात दो दर्जन से अधिक की संख्या में आये अपराधियों ने व्यवसायिक प्रतिष्ठान के आगे से कमरे में घुसा। जहां वह पीछे जाकर पीछे के दरवाजे को गैस कटर से काटने का प्रयास कर रहा था कि व्यवसायी को खटखट की आवाज सुनाई दी। व्यवसायी अमित केसरी पिता महेंद्र केसरी ने बताया कि डकैती की सूचना बगल के घर में रह रहे परिजनों को दी। सूचना पर निकले परिजनों में शामिल अजीत केसरी पिता महेंद्र केसरी को अपराधियों ने देसी कट्टा से गोली मारी। जो कि व्यवसायी के हाथ में लगते हुए पंजरा में चला गया। इसी बीच अपराधियों के बम से व्यवसायी सरोज केसरी पिता मनोज केसरी के नाक में लगी। जिससे वह घायल हो गया। अपराधियों ने घटना के क्रम में अलमारी में रखे एक लाख रुपये लेता गया। पीड़ित व्यवसायी ने बताया कि बम ब्लास्ट के बाद जब ग्रामीण अपने अपने घरों से निकलने लगा तो अपराधी बम फेंकने की धमकी देते हुए आगे बढ़ता रहा। अपराधियों ने दो दर्जन से अधिक बम ब्लास्ट कर अगल बगल के ग्रामीणों को दहशत में डाल दिया। इधर अपराधियों द्वारा प्रयुक्त गैस सिलेंडर घटना स्थल से चार सौ मीटर की दूरी पर बरामद हुआ। इसके साथ ही घटना स्थल से लगभग डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर कथित अपराधियों ने बांस झाड़ी के बीच शराब की खाली बोतल व डिस्पोजल बरामद हुआ है। जिससे प्रतीत होता है कि कथित अपराधियों ने अपराध की घटना को अंजाम देने के पहले शराब भी पीया है। वहीं पीड़ित व्यवसायी ने घटना की सूचना कुर्साकांटा पुलिस को देते हुए अपराधियों के गोली के शिकार अजीत केसरी, ढाई वर्षीय पुत्री नैंसी कुमारी व नीरज केसरी को परिजनों ने अनुमंडलीय अस्पताल फारबिसगंज ले जाया गया। जहां से चिकत्सकों ने सदर अस्पताल पूर्णिया रेफर कर दिया गया।

‘भूख मुक्त भारत’ मिशनः आदिबोध फाउंडेशन और आरसीएल का समृद्ध भारत की ओर कदम

- सारण सांसद और पूर्व केंद्रीय मंत्री राजीव प्रताप रुडी हैं आरसीएल के मानद अध्यक्ष
- सांसद रुडी ने बिहार में आरसीएल के खाद्य बैंक की स्थापना की पहल करते हुए रूपरेखा तैयार करने का दिया सुझाव

छपरा। अपनी समृद्ध सांस्कृतिक और आर्थिक विरासत के बावजूद, भारत आज भी भूख और कुपोषण जैसे गंभीर समस्याओं का सामना कर रहा है। हर साल देश में लगभग 68.8 मिलियन टन भोजन बर्बाद होता है, जिसकी कीमत 7,92,000 करोड़ के करीब है। वहीं, पांच वर्ष से कम आयु के 33.4 मिलियन बच्चे कुपोषण से जूझ रहे हैं, जिनमें से 17.2 मिलियन गंभीर रूप से प्रभावित हैं। सारण सांसद सह पूर्व केंद्रीय मंत्री राजीव प्रताप रुडी ने दिल्ली के कॉन्सटीट्यूशन क्लब मीडिया से बात करते हुए उक्त बाते कही। उन्होंने आगे बताया कि इस के खिलाफ लड़ाई को एक नए आयाम तक पहुंचाने का प्रयास करते हुए आदिबोध फाउंडेशन और रेस्टोरेंट क्रिकेट लीग (आरसीएल) ने ''भूख मुक्त भारत'' मिशन का शुभारंभ किया। इस पहल के तहत देश में अधिशेष भोजन के बेहतर प्रबंधन और वितरण के जरिए भूखमरी को समाप्त करने के लिए प्रयास होगा। मालूम हो कि आरसीएल के मानद अध्यक्ष सारण सांसद और पूर्व केंद्रीय मंत्री राजीव प्रताप रुडी है।

सांसद रुडी ने मिशन की शुरुआत पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा, भूखमरी और कुपोषण जैसी समस्याओं का समाधान करना हमारे राष्ट्र के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। ‘भूख मुक्त भारत’ मिशन केवल एक पहल नहीं, बल्कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 2047 तक विकसित भारत के विज़न और संयुक्त राष्ट्र के 2030 तक भूख मिटाने के सतत विकास लक्ष्य की ओर एक ठोस कदम है। उन्होंने आगे कहा कि बिहार में भी इस मिशन के तहत आरसीएल खाद्य बैंक की स्थापना का प्रस्ताव है। यह खाद्य बैंक अधिशेष भोजन को संरक्षित कर उसे जरूरतमंदों तक पहुंचाने का कार्य करेगा। उन्होंने कहा कि फिलहाल, 26 जनवरी गणतंत्र दिवस के दिन दिल्ली में निःशुल्क भोजन वितरण की शुरुआत हो रही है। इसे क्रमशः सभी राज्यों में विस्तारित किया जाएगा, ताकि हर भारतीय को पौष्टिक और संतुलित भोजन सुनिश्चित किया जा सके।

''भूख मुक्त भारत'' मिशन के संस्थापक अरविंद कुमार और अभिषेक भटनागर ने कहा, हमारा उद्देश्य है कि कोई भी भारतीय भूखा न सोए। इस मिशन के जरिए हम एक ऐसी व्यवस्था बनाना चाहते हैं, जहाँ हर व्यक्ति को पोषण सुनिश्चित हो। ‘भूख मुक्त भारत’ अभियान केवल भोजन बचाने की पहल नहीं, बल्कि एक स्वस्थ, समृद्ध और न्यायसंगत भारत की ओर एक कदम है।

सांसद रुडी ने देशवासियों से ''भूख मुक्त भारत'' आंदोलन का हिस्सा बनने की अपील की। कोई भी व्यक्ति 9213332999 पर मिस्ड कॉल देकर या ''भूख मुक्त भारत'' मंच पर पंजीकरण कराकर इस अभियान से जुड़ सकता है। राजीव प्रताप रुडी ने कहा कि मैं सभी नागरिकों से इस अभियान का हिस्सा बनने का आह्वान करता हूं। आइए, हम सब मिलकर इस आंदोलन को सफल बनाएं और ''भूख मुक्त भारत'' के प्रयास में सहभागी बने। यह पहल न केवल भूख के खिलाफ एक लड़ाई है, बल्कि एक ऐसे भारत के निर्माण का सपना है जहां हर थाली भरी हो।

पेज एक का शेष

झारखंड बोर्ड...

कब होगी जैक 10वीं- 12वीं की परीक्षाएं : झारखंड एकेडमिक काउंसिल ने दसवीं (मैट्रिक) और बारहवीं (इंटरमीडिएट) की बोर्ड परीक्षाओं की तारीखों की घोषणा कर दी है। परीक्षाएं 11 फरवरी 2025 से शुरू होकर 3 मार्च 2025 को समाप्त होंगी। कक्षा 10 (मैट्रिकुलेशन) की परीक्षाएं 11 फरवरी से आरंभ होकर 3 मार्च तक आयोजित की जाएंगी। मैट्रिक परीक्षा के लिए सभी पेपर सुबह के सत्र में होंगे, जिनका समय सुबह 9:45 बजे से दोपहर 1:00 बजे तक निर्धारित है। परीक्षा का प्रारंभिक 15 मिनट का समय प्रश्न पत्र पढ़ने के लिए दिया जाएगा, जिससे छात्रों को उत्तर लेखन के लिए बेहतर योजना बनाने में मदद मिल सके। झारखंड बोर्ड परीक्षा 2025 के लिए एडमिट कार्ड और अन्य संबंधित जानकारी जल्द ही जैक की आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध होगी।

जैक बोर्ड में पास होने के कितने अंक चाहिए : झारखंड बोर्ड के मॉडल प्रश्न पत्र 2025 के हिसाब से अधिकतर विषयों की परीक्षा कुल 80 अंकों की होगी, जबकि गृह विज्ञान की परीक्षा 70 अंकों की होगी। वहीं, कक्षा 12 की बोर्ड परीक्षाएं भी मुख्य रूप से 80 अंकों की होंगी, लेकिन भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान और कंप्यूटर विज्ञान के लिए परीक्षा 70 अंकों की होगी। जैक के कक्षा 10 और 12 के मॉडल पेपर 2025 के अनुसार, परीक्षा की अवधि 3 घंटे निर्धारित की गई है। छात्रों को हर विषय में थ्योरी और प्रैक्टिकल दोनों को मिलाकर पास होने के लिए न्यूनतम 33% अंक प्राप्त करने होंगे।

महाकुंभ में 99...

श्रद्धालुओं को दर्शन-पूजन के साथ ही रुद्राभिषेक की भी सुविधा मिलेगी। मंदिर न्यास ने भूमि आवंटन के लिए प्रक्रिया शुरू कर दी है। 13 जनवरी से शुरू होने वाले महाकुंभ में आने वाले सनातनी बाबा विश्वनाथ का दर्शन कर सकेंगे। बाबा का ज्योतिर्लिंग प्रतीक स्वरूप में स्थापित किया जायेगा।

बाबा के दरबार में होगी चार प्रहर की आरती : बाबा काशी विश्वनाथ मंदिर की तरह ही संगम तट पर बाबा के दरबार में भी चार प्रहर की आरती के दर्शन होंगे। श्रद्धालु के लिए रुद्राभिषेक और अनुष्ठान के इंतजाम भी रहेंगे। प्रयाग के बाद श्रद्धालु और संत बाबा विश्वनाथ का दर्शन करने के लिए बनारस आते हैं। सुगम दर्शन के काउंटर से श्रद्धालु अपनी सुविधानुसार दर्शन, आरती और अनुष्ठान की बुकिंग पहले ही करा सकेंगे। एसडीएम शंभू शरण ने बताया कि महाकुंभ में बाबा का दरबार सजेगा। भूमि आवंटन होने के बाद तैयारियां शुरू हो जायेंगी। धाम की तरह ही संगम के तट पर सजने वाले बाबा दरबार में श्रद्धालुओं को बाबा विश्वनाथ के दर्शन होंगे। मालूम हो कि 2001 महाकुंभ और 2019 के कुंभ में बाबा विश्वनाथ के लिए जमीन आवंटित की गयी थी।

महाकुंभ में ज्योतिष पीठाधीश्वर के शिविर में होगी गो संसद : महाकुंभ में ज्योतिष पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती के शिविर में 10 जनवरी से धर्म संसद का आयोजन होगा, जिसका प्रारंभ 10 और 11 जनवरी को गो-संसद से होगा। उसमें 543 संसदीय क्षेत्रों से गो-प्रतिनिधि (गो सांसद) शामिल होंगे। श्री शंकराचार्य शिविर, ज्योतिर्मठ, बद्रिकाश्रम के प्रभारी मुकुंदानंद ब्रह्मचारी ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि भारत में मूल नस्ल की देशी गौ माता पर आज संकट है और इस गो-प्रधान देश में मात्र 53 नस्ल की ही गौ माता आज बची हुई हैं। मुकुंदानंद ब्रह्मचारी ने बताया कि 27 दिनों तक चलने वाली धर्म संसद के लिए 27 विषय निर्धारित किये हैं, जिन पर प्रतिदिन चर्चा होगी। गौ माता की रक्षा और हिंदुओं के कल्याण के लिए महाकुंभ में पहली बार 324 कुंडीय महायज्ञ का भी आयोजन किया जा रहा है, जिसे 1100 विद्वान पुरोहित संपन्न करेंगे।

99 देशों से धर्म प्रतिनिधि लेंगे भाग : इस धर्म संसद में 170 विद्वान संत, 99 देशों से धर्म प्रतिनिधि, 108 धर्माचार्य, चार शंकराचार्य या उनके पीठों के प्रतिनिधि, 51 शक्तिपीठों के प्रतिनिधि, पांच वैष्णव आचार्यों के प्रतिनिधि, 12 धर्म संस्थाओं के प्रतिनिधि, 36 राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि शामिल होंगे। पूज्य शंकराचार्य जी की महाकुंभ प्रवेश यात्रा नौ जनवरी को होगी।

झारखंड में विमान...

हैदराबाद-रांची फ्लाइट 26 मिनट लेट : इंडिगो की हैदराबाद-रांची फ्लाइट (6421) सुबह 10:20 बजे की जगह सुबह 10:46 बजे आई, तो इंडिगो की कोलकाता-रांची फ्लाइट (6ई 6152) सुबह 11:55 बजे की जगह दोपहर 12:29 बजे पहुंची। इंडिगो की पटना-रांची फ्लाइट (6ई6902) दोपहर 1:00 बजे की जगह दोपहर 1:34 बजे आई।

बेंगलुरु-रांची फ्लाइट डेढ़ घंटे देर से आई : एयर इंडिया एक्सप्रेस की बेंगलुरु-रांची फ्लाइट (आइएक्स2706) शाम 4:40 बजे की जगह शाम 6:07 बजे, इंडिगो की चेन्नई-रांची फ्लाइट (6ई5339) शाम 6:35 बजे की जगह शाम 7:20 बजे और एयर इंडिया एक्सप्रेस की बेंगलुरु-रांची फ्लाइट (आइएक्स2975) शाम 6:45 की जगह रात 8:13 बजे रांची पहुंची।

धमाके से 20...

दो साल में नक्सलियों का सबसे बड़ा हमला : एक अधिकारी ने बताया कि पिछले दो सालों में नक्सलियों द्वारा सुरक्षाकर्मियों पर यह सबसे बड़ा हमला है। इससे पहले 2023 में 26 अप्रैल बीजापुर के पड़ोसी जिले दंतेवाड़ा में सुरक्षाकर्मियों को ले जा रहे एक काफिले को नक्सलियों ने निशाना बनाया था, जिसमें दस पुलिसकर्मियों समेत एक नागरिक ड्राइवर की मौत हो गई थी।

नक्सलवाद के खात्मे के लिए हमारी लड़ाई मजबूती से जारी रहेगीः साय- वहीं बीजापुर की घटना पर मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि बस्तर में चल रहे नक्सल उन्मूलन अभियान से नक्सली हताश और निराश हैं और विचलित होकर ऐसी निंदनीय और कायराना हरकतों को अंजाम दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि जवानों की शहादत व्यर्थ नहीं जाएगी और नक्सलवाद के खात्मे के लिए हमारी यह लड़ाई मजबूती से जारी रहेगी। बता दें कि छत्तीसगढ़ में भाजपा की सरकार बनने के बाद से अब तक 200 से ज्यादा नक्सली मुठभेड़ में मारे जा चुके हैं। छत्तीसगढ़ के उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा ने बीजापुर आईईडी विस्फोट पर कहा, ₹...यह कैसे हुआ, यह जांच का विषय है... अब हम इस पूरे नक्सलवाद को जड़ से खत्म करने के लिए और दृढ़ता और ताकत के साथ काम करेंगे।

पलामू में गैंगवार...

भरत पांडेय और दीपक साव दोनों के खिलाफ हजारीबाग और रामगढ़ जिले के कई थाना क्षेत्रों में आपराधिक मामले दर्ज हैं। वे पुलिस की मोस्ट वांटेड क्रिमिनल्स की लिस्ट में शामिल थे। दोनों रामगढ़ कोयलांचल में सक्रिय कुख्यात पांडेय गैंग से जुड़े थे, लेकिन हाल में दोनों ने अलग से एक गैंग खड़ा कर लिया था। वारदात की सूचना पाकर चैनपुर और पलामू के कई थाना क्षेत्रों की पुलिस मौके पर पहुंची। मारे गए अपराधियों के शव पोस्टमार्टम के लिए भेजे गए हैं। गोली लगने से जख्मी हुए दो अन्य लोगों की हालत गंभीर बताई जा रही है। पुलिस मामले की तहकीकात में जुटी है।

प्रशांत किशोर को...

इसके बाद पुलिस उन्हें फतुहा के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र ले गई, जहां उनकी मेडिकल जांच हुई। मेडिकल जांच के बाद पुलिस पीके को सिविल कोर्ट लेकर पहुंची, जहा उन्हें मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया। कोर्ट में 25 हजार मुचलके पर जमानत दे दी।

वैनिटी वैन को डीटीओ कार्यालय : पीके की गिरफ्तारी के बाद उनके समर्थकों ने सरकार के खिलाफ नारेबाजी की। सिविल कोर्ट परिसर में सुरक्षा बढ़ा दी गई थी और भारी पुलिस बल तैनात किया गया था। कोर्ट परिसर छावनी में तब्दील हो गया था। पीके और उनके लगभग 43 समर्थकों को हिरासत में लिया गया है। साथ ही, 15 वाहनों को भी जब्त किया गया है, जिसमें पीके की वैनिटी वैन भी शामिल है। जब्त की गई वैनिटी वैन को डीटीओ कार्यालय में रखा गया है।

डीएम बोली- पीके ने नहीं मानी बात : पटना के जिलाधिकारी (डीएम) ने बताया कि पीके को कई बार निर्धारित जगह पर धरना करने के लिए कहा गया था, लेकिन उन्होंने प्रशासन की बात नहीं मानी। उन्होंने कहा कि कई बार आग्रह किया गया कि निर्धारित स्थल पर धरना किया जाए। लेकिन पीके के द्वारा नहीं मानी गई। जिसके बाद गिरफ्तारी की गई। डीएम ने आगे बताया कि बार-बार समझाने के बाद भी पीके नहीं माने, जिसके बाद गांधी मैदान थाने में प्राथमिकी दर्ज की गई। उन्होंने कहा कि पर्याप्त समय देने के बाद ही यह कार्रवाई की गई है। डीएम ने बताया कि अब तक हिरासत में लिए गए 43 लोगों में से 30 लोगों की पहचान की जा चुकी है। इनमें से केवल पांच लोग पटना के रहने वाले हैं, जबकि बाकी लोग दूसरे जिलों से हैं। इनमें से चार लोग उत्तर प्रदेश और एक दिल्ली का रहने वाला है। डीएम ने यह भी बताया कि हिरासत में लिए गए ज्यादातर लोग एक खास पार्टी के कार्यकर्ता हैं।

भारत में जल्द...

तेलंगाना में चारलापल्ली नए टर्मिनल स्टेशन का उद्घाटन और ओडिशा के रायगढ़ रेलवे डिवीजन भवन की आधारशिला रखते हुए मोदी ने कहा कि इन परियोजनाओं से क्षेत्रीय संपर्क और पर्यावरण-अनुकूल बुनियादी ढांचे में सुधार होगा।

रेलवे में तेजी से हो रहा आधुनिकीकरण : प्रधानमंत्री ने बताया कि पिछले 10 वर्षों में रेलवे में अद्वितीय विकास हुआ है। उन्होंने कहा, 2014 तक केवल 35% रेल लाइनों का विद्युतीकरण हुआ था। आज हम शत-प्रतिशत विद्युतीकरण के करीब हैं। बीते दशक में 30,000 किमी से अधिक नए रेल ट्रैक बिछाए गए हैं। प्रधानमंत्री ने 180 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से ट्रेन के हाल ही में हुए सफल परीक्षण का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि वर्तमान में 50 से अधिक मार्गों पर 136 वंदे भारत ट्रेनें संचालित हो रही हैं।

‘नमो भारत’ ट्रेन और दिल्ली मेट्रो की बड़ी उपलब्धि : प्रधानमंत्री ने हाल ही में 'नमो भारत' ट्रेन और दिल्ली मेट्रो की नई परियोजनाओं की शुरुआत का उल्लेख करते हुए कहा कि यह भारत के संपर्क और विकास में नई ऊर्जा का संचार करेगी। अब भारत का मेट्रो नेटवर्क 1,000 किमी से अधिक हो चुका है। यह देश के तेज रफ्तार विकास का संकेत है, उन्होंने कहा।

परियोजनाओं के लाभ : जम्मू रेलवे डिवीजनः रोजगार के अवसर, पर्यटन में बढ़ावा, और संपर्क में सुधार।

चारलापल्ली नया टर्मिनल स्टेशनः 413 करोड़ रुपये की लागत से बने इस टर्मिनल से सिकंदराबाद, हैदराबाद, और काचीगुडा में भीड़ कम होगी।

रायगढ़ रेलवे डिवीजन भवनः ओडिशा और आंध्र प्रदेश के क्षेत्रों को जोड़ने में अहम भूमिका निभाएगा।

प्रधानमंत्री ने रेलवे में आधुनिकीकरण, यात्री सुविधाओं में सुधार, और संपर्क बढ़ाने की योजनाओं को देश के विकास के चार प्रमुख स्तंभ बताया। उन्होंने कहा कि इन प्रयासों से न केवल रेलवे की छवि बदली है, बल्कि देशवासियों का आत्मविश्वास भी बढ़ा है।

चीनी वायरस...

तमिलनाडु के एक स्वास्थ्य अधिकारी ने बताया कि चेन्नई में दो बच्चों में ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस (एचएमपीवी) की पुष्टि हुई है और उनका इलाज किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि विस्तृत जानकारी की प्रतीक्षा है। वहीं राज्य के स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों ने एचएमपीवी की जांच के लिए उठाए जाने वाले कदमों और इसे फैलने से रोकने के लिए बरती जाने वाली सावधानियों पर चर्चा करने के लिए एक बैठक की। अहमदाबाद के बच्चे में सर्दी और बुखार के लक्षण हैं। निजी अस्पताल की एक लैब के अनुसार, बच्चे की एचएमवीपी रिपोर्ट पॉजिटिव आई है। बच्चा मोडासा के नजदीक एक गांव का रहने वाला है। हालांकि उसकी तबीयत सामान्य बताई जा रही है।

दिल्ली में एचएमपीवी को लेकर दिशा-निर्देश जारी : दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री सौरभ भारद्वाज ने स्वास्थ्य और एफई विभाग को दिल्ली में पूरी व्यवस्था करने का निर्देश दिया है। उन्होंने कहा कि केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की सलाह के अनुसार सभी अस्पतालों को श्वसन संबंधी बीमारी में किसी भी संभावित वृद्धि से निपटने के लिए पूरी तरह तैयार रहना चाहिए। साथ ही स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग को राजधानी में तैयारियों के बारे में समय पर अपडेट हासिल करने के लिए केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के संपर्क में रहना चाहिए।

ओयो ने अनमैरिड...

ओयो को पहले भी विशेष रूप से मेरठ में सोशल ग्रुप से इस समस्या के बारे में जानकारी मिली थी। इसमें कहा गया था कि अनमैरिड कपल भी होटल बुक करते हैं। इसके अलावा, कुछ दूसरे शहरों के लोगों ने भी अनमैरिड कपल को ओयो होटलों में चेक-इन करने की अनुमति न देने की मांग की थी। इसपर कंपनी ने विचार किया और नियमों में बदलाव किया।

कंपनी समय-समय पर अपने नियम की करती है समीक्षाः पावस- ओयो नॉर्थ इंडिया के रिजन प्रमुख पावस शर्मा ने मामले को लेकर जानकारी दी। उन्होंने कहा, ''ओयो सुरक्षित और जिम्मेदार कंपनी है। ये हॉस्पिटैलिटी को अच्छे से बनाए रखने के लिए कमिटेड है। हम समाज की चिंता को भी साथ लेकर चलने वाली कंपनी हैं। उनके साथ काम करने की अपनी जिम्मेदारी को पहचानते हैं।'' शर्मा ने कहा कि कंपनी समय-समय पर अपने नियम की समीक्षा करती है। जरूरी होने पर इसमें बदलाव किए जाते हैं।

ओयो ने कई कदम उठाए : ओयो ने कई कदम भी उठाए। जैसे कि सुरक्षित होटल बुकिंग को लेकर पुलिस और होटल पार्टनर के साथ संयुक्त सेमिनार आयोजित करना, गलत चीजों को बढ़ावा देने में शामिल होटलों को ब्लैक लिस्ट में डालना और ओयो ब्रांडिंग का उपयोग करने वाले अनधिकृत होटलों के खिलाफ कार्रवाई करना।

कनाडा के पीएम...

कनाडा की संसद स्थगित : इतना ही नहीं, ट्रूडो ने गवर्नर जनरल से भी अनुरोध किया है कि संसद को 24 मार्च तक स्थगित कर दिया जाए, जिससे नए पार्टी नेता के चयन और सरकार के आगामी फैसलों के लिए समय मिल सके। वहीं, ट्रूडो ने अपने संभावित उत्तराधिकारी, कंजरवेटिव पार्टी के नेता पियरे पोलिएवरे पर भी टिप्पणी की। उन्होंने कहा कि पोलिएवरे कनाडा का नेतृत्व करने के लिए सही व्यक्ति नहीं हैं और उनकी जलवायु परिवर्तन और आर्थिक मुद्दों पर विचार देश के लिए हानिकारक हो सकते हैं।

नए नेता को मौका देना चाहते हैं ट्रूडो : पीएम के पद पर रहते हुए अपने आखिरी भाषण में ट्रूडो ने कहा कि वह देश और पार्टी के लिए हमेशा उपस्थित रहेंगे, लेकिन अब वो नए नेता को मौका देना चाहते हैं, ताकि पार्टी नई दिशा में आगे बढ़ सके। उनके इस फैसले से कनाडा की राजनीति में बड़े बदलाव की उम्मीद की जा रही है, क्योंकि ट्रूडो पिछले नौ सालों से प्रधानमंत्री पद पर हैं और उनके नेतृत्व में कई महत्वपूर्ण बदलाव हुए हैं।

इस दौरान उन्होंने पहले इस्तीफा न देने का कारण भी स्पष्ट किया। ट्रूडो ने कहा कि उन्होंने क्लाइमेट चेंज के खिलाफ अपनी लड़ाई के लिए, यूक्रेन का साथ देने के लिए और कनाडा के लोगों के लिए उन्होंने पहले इस्तीफा नहीं दिया।

खूंटी में पीएलएफआई...

विकास गोप के पिता का नाम रंथु गोप और निमेश के पिता का नाम राजेंद्र गोप है। दोनों कर्रा के रोन्हे गांव के रहने वाले हैं। कर्रा पुलिस ने बताया कि रविवार (5 जनवरी) को खूंटी के एसपी को गुप्त सूचना मिली थी कि कर्रा थाना के रोन्हे जंगल में प्रतिबंधित पीएलएफआई संगठन के कुछ सदस्य किसी घटना को अंजाम देने की योजना बना रहे हैं। इस संबंध में उनकी कोई बैठक होने वाली है। सूचना का सत्यापन करने के बाद एसपी ने तोरपा के अनुमंडल पलिस पदाधिकारी (एसडीपीओ) एसडीपीओ खिस्तोफर केरकेट्टा के नेतृत्व में एक टीम का गठन किया।

होटवार जेल में बंद पीएलएफआई के सदस्यों ने खूंटी में कराई फायरिंग : एसडीपीओ की अगुवाई में बनी टीम ने तत्काल कार्रवाई करते हुए रोन्हे जंगल में छापेमारी शुरू की। छापेमारी के दौरान प्रतिबंधित उग्रवादी संगठन के दो सदस्य पुलिस टीम के हत्थे चढ़ गए। इनके पास से अवैध हथियार और गोलियां बरामद हुईं। गिरफ्तार पीएलएफआई के इन सदस्यों ने बताया कि होटवार जेल में बंद शिवकुमार साहू उर्फ चरकू और रांची एवं खूंटी क्षेत्र में सक्रिय पीएलएफआई के सदस्यों ने खूंटी थाना क्षेत्र में ग्रुप के अन्य लड़कों से फायरिंग करवाई है।

निकिता पर एफआईआर खारिज करने से कर्नाटक हाईकोर्ट ने किया इंकार

बेंगलुरु। अतुल सुभाष आत्महत्या के मामले में कथित आरोपी पत्नी निकिता सिंघानिया द्वारा अपने खिलाफ लगे आरोपों को पलटने की याचिका पर सुनवाई करते हुए, कर्नाटक हाई कोर्ट ने इस स्तर पर एफआईआर को खारिज करने से इंकार किया। एकल पीठ ने पाया कि प्रथम दृष्टया साक्ष्य चल रही जांच का समर्थन करते हैं, और डेथ नोट और आत्महत्या वीडियो जैसे प्रमुख साक्ष्य एकत्र करने में प्रगति की कमी पर सवाल उठाया। अदालत ने निर्देश दिया कि जांच के दौरान एकत्र किए गए सभी दस्तावेज जमा किए जाएं और सरकार से अपनी आपत्तियां दर्ज करने को कहा। मामले को दो हफ्ते के लिए टाला गया है। निकिता, उनकी मां और भाई को बेंगलुरु की एक अदालत ने मामले में जमानत दे दी थी। आईटी पेशेवर अतुल से अलग रह रही पत्नी ने मामले में अपने खिलाफ दर्ज एफआईआर को रद्द करने के लिए उच्च न्यायालय का रुख किया। निकिता ने अपनी गिरफ्तारी को चुनौती देकर दावा किया था कि यह अवैध है और इसमें औचित्य का अभाव है। उसके वकील ने सुप्रीम कोर्ट में अपना बचाव तैयार करने की अनुमति देने के लिए अंतरिम जमानत के लिए तर्क दिया। 9 दिसंबर, 2024 को आत्महत्या करके मरने वाले सुभाष ने अपने सुसाइड नोट में अपनी पत्नी और ससुराल वालों पर उत्पीड़न का आरोप लगाया।

संभल के बाद अब फिरोजाबाद में मिला करीब 30 सालों से बंद एक पुराना मंदिर, प्रशासन ने खुलवाया

फिरोजाबाद। संभल के बाद यूपी के कई शहरों में सालों से बंद मंदिर मिल रहे हैं। इनकी साफ-सफाई और अन्य व्यवस्था करने के बाद पूजा-पाठ शुरू किया जा रहा है। फिरोजाबाद के मुस्लिम बहुल इलाके में भी करीब 30 सालों से बंद एक पुराना मंदिर मिला है, जिसका ताला प्रशासन ने खोला। हिंदूवादी संगठन बजरंग दल की शिकायत के बाद जिला प्रशासन ने कार्रवाई की। इस दौरान भारी संख्या में पुलिस बल और प्रशासनिक अधिकारी मौजूद रहे। फिरोजाबाद के शहीद चौक के सामने बेहद तंग गली में मुस्लिम बहुल इलाका है, जहां गली के कोने पर एक मंदिर में सालों से ताला पड़ा हुआ था। बजरंग दल को जब इसकी जानकारी मिली कि यह शिव मंदिर काफी समय से बंद है, तब भारी फोर्स की तैनाती के बाद जिला प्रशासन ने मंदिर का ताला खुलवाया। हालांकि इस मंदिर का ताला खुलने का विरोध किसी ने नहीं किया। कई दशक पहले यहां हिंदू परिवार का घर था, उसमें ही गली के बाहर ये मंदिर था। वह परिवार गली को छोड़कर चला गया और मंदिर में ताला लगा हुआ है। मंदिर के अंदर की दीवारों पर धार्मिक शब्द लिखे हुए हैं और यहां खंडित मूर्तियां रखी हुई हैं। फिरोजाबाद के सिटी मजिस्ट्रेट राजेंद्र सिंह ने बताया कि इस मंदिर का निर्माण संवत 2020 (साल 1963) में हुआ था और लंबे समय से बंद पड़ा था। करीब 60 साल पुराना मंदिर है। मंदिर के खुलने से स्थानीय समुदाय को उनके धार्मिक अधिकार वापस मिले हैं। वहां का मुस्लिम समुदाय ने भी इस पहल का स्वागत किया। उनका कहना है कि मंदिर खोलने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं है और यहां कोई विवाद नहीं है।

तमिलनाडु विधानसभा में संविधान और राष्ट्रगान का हुआ अपमान, सदन से बाहर आए नाराज राज्यपाल

चेन्नई। तमिलनाडु विधानसभा में राज्यपाल आर.एन रवि राष्ट्रगान और संविधान का तिरस्कार करने पर आपत्ति दर्ज कर बाहर चले गए। इस बारे में राज्यपाल कार्यालय ने पोस्ट में जानकारी दी। राज्यपाल के आधिकारिक एक्स हैंडल पर कहा गया कि तमिलनाडु विधानसभा में आज एक बार फिर संविधान और राष्ट्रगान का अपमान किया गया। विधानसभा में राज्यपाल के आने पर केवल तमिल थाई वाज्थु गाया गया, जबकि संविधान में राष्ट्रगान का सम्मान करना हर नागरिक का कर्तव्य दहै।राज्यपाल ने इस पर आपत्ति जताकर सदन को उसके संवैधानिक कर्तव्य की याद दिलाई और मुख्यमंत्री और विधानसभा अध्यक्ष से राष्ट्रगान गाने का अनुरोध किया। लेकिन, उनके आग्रह को नजरअंदाज कर राज्य सरकार ने राष्ट्रगान गाने से इंकार कर दिया। इस अपमानजनक घटना के कारण राज्यपाल ने गहरी नाराजगी जताकर सदन को छोड़ दिया। वहीं राज्यपाल के विधानसभा भवन के बाहर जाने के बाद अन्ना विश्वविद्यालय के मामले को लेकर एआईएडीएमके के सदस्यों ने हाथों में पोस्टर लेकर विरोध प्रदर्शन किया। पोस्टर में लिखा हुआ था कि आखिर मामले में आरोपी कौन है? भाजपा विधायकों का कहना है कि अन्ना विश्वविद्यालय मामले में अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है, इसलिए वे विधानसभा से बाहर चले गए। कांग्रेस के विधायक मामले में अपना रोष प्रकट करने के लिए हाथों में बैज पहनकर आए थे। पिछले कुछ वर्षों में तमिलनाडु विधानसभा में राष्ट्रगान के बजाय राज्यगीत गाने के मामले सामने आ रहे हैं।

बाबा सिद्दीकी हत्या मामले में 4,590 पन्नों की चार्जशीट दाखिल, सलमान से करीब होना बनी हत्या की वजह

मुंबई (ईएमएस)। मुंबई क्राइम ब्रांच ने एनसीपी नेता बाबा सिद्दीकी की हत्या मामले में महाराष्ट्र संगठित अपराध नियंत्रण अधिनियम (मकोका) कोर्ट में 4,590 पन्नों की चार्जशीट दाखिल कर दी है। चार्जशीट में सिद्दीकी के मर्डर केस मामले में 26 आरोपियों को नामजद किया है। इसके अलावा इसमें तीन आरोपियों जीशान अख्तर, शुभम लोनकर, अनमोल बिश्नोई को फरार बताया गया है। चार्जशीट में कई लोगों के बयान भी पुलिस ने दर्ज किए हैं। क्राइम ब्रांच की जांच के मुताबिक, सिद्दीकी हत्या के तीन प्रमुख कारण हैं। पहला सलमान खान से करीबी, अनुज थपन की आत्महत्या का बदला या बिश्नोई गैंग का मुंबई में वर्चस्व स्थापित करना और अपना खौफ पैदा करना। क्राइम ब्रांच हत्या की इन तीन वजहों को स्थापित करने के लिए आरोपी लोनकर की सोशल मीडिया की पोस्ट को भी आधार बनाया है। चार्जशीट में 210 लोगों के बयान भी दर्ज हैं।

लोगों की समस्या बताने पर भड़के अजित पवार कहा : मुझे खेतिहर मजदूर समझ रहे हैं क्या?

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के डिप्टी मुख्यमंत्री अजित पवार आजकल काफी गुस्से में नजर आने लगे हैं। सियासी समस्याएं जो भी हों पर जनता अपनी समस्याएं तो बताएगी ही। बारामती के दौरे पर पहुंचे अजित पवार एक सार्वजनिक कार्यक्रम के दौरान वह अपना आपा खो बैठे। दौरे के दौरान नागरिकों ने उन्हें विभिन्न समस्याओं से अवगत कराया। कुछ नागरिकों ने विकास कार्यों में देरी को लेकर शिकायत की, जिस पर अजित पवार भड़क गए। उन्होंने कहा, आपने मुझे वोट दिया है, इसका मतलब यह नहीं कि आप मेरे मालिक बन गए। क्या आपने मुझे खेतिहर मजदूर बना दिया है?

उनके इस बयान ने राजनीतिक और सामाजिक हलकों में हलचल मचा दी है।

इस मौके पर अजित पवार ने एमआईडीसी (महाराष्ट्र औद्योगिक विकास निगम) के अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए कि बारामती में किसी भी भूखंड का दर्जा आवासीय से व्यावसायिक में उनकी अनुमति के बिना न बदला जाए। उन्होंने कहा, हमने कुछ भूखंडों को व्यावसायिक बनाया ताकि उद्योग स्थापित हों और स्थानीय लोगों को रोजगार मिल सके। लेकिन एमआईडीसी अधिकारी भूखंडों का दर्जा बदलने की होड़ में न लगें। मेरी जानकारी के बिना एक भी भूखंड का दर्जा नहीं बदला जाएगा।

अजित पवार ने बारामती तालुका क्रय-विक्रय संघ परिसर में एक पेट्रोल पंप का उद्घाटन किया। इस दौरान मौजूद नागरिकों और कार्यकर्ताओं ने लंबित कामों को लेकर सवाल उठाए। एक कार्यकर्ता ने कहा कि क्षेत्र में कई विकास कार्य अब तक पूरे नहीं हुए हैं। इसे लेकर नागरिकों ने पवार से जवाब मांगा। इस पर डिप्टी सीएम ने पहले अधिकारियों को निर्देश दिए कि विकास कार्य जल्द शुरू किए जाएं। लेकिन नागरिकों की बढ़ती शिकायतों पर वह नाराज हो गए और तीखी प्रतिक्रिया दी।

डिप्टी सीएम की नाराजगी पर लोगों की मिली-जुली प्रतिक्रिया सामने आई है। कुछ इसे जनप्रतिनिधि का अहंकार मान रहे हैं, जबकि अन्य का कहना है कि मतदाताओं को भी अपना व्यवहार संतुलित रखना चाहिए। अजित पवार के बयान ने सोशल मीडिया और राजनीतिक गलियारों में एक नई बहस छेड़ दी है।

महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री शिंदे को धमकी देने वाले पर एफआईआर दर्ज, तलाश जारी

ठाणे। महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे को धमकी देने के आरोप में एक व्यक्ति पर एफआईआर दर्ज की गई है। पुलिस ने कहा कि उसे आरोपी के खिलाफ कुछ सबूत मिले हैं, जिसके बाद मामला दर्ज किया गया है। वरिष्ठ इंस्पेक्टर गुलजारीलाल फड़तारे ने बताया कि ठाणे शहर के वरली पाड़ा निवासी हितेश धेंदे नाम से आरोपी की तलाश जारी है। पुलिस ने बताया कि आरोपी ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के खिलाफ अपमानजनक शब्दों का इस्तेमाल किया था और उन्हें जान से मारने की धमकी दी थी। गलत पोस्ट करने पर यह मामला दर्ज हुआ है। शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना के एक कार्यकर्ता की शिकायत के आधार पर पुलिस ने रविवार को कई धाराओं के तहत आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज किया है।

मुंबई : ताज होटल के सामने एक ही नंबर प्लेट की मिलीं दो कार, पुलिस अलर्ट

मुंबई। मुंबई के ताज होटल के सामने एक ही नंबर प्लेट वाली दो गाड़ियां खड़ी होने से हड़कंप मचा है। मूल वाहन चालक ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है। मौके पर पहुंची पुलिस दोनों गाड़ियों को कोलाबा पुलिस थाना ले गई और एफआईआर दर्ज की। इनमें से किस कार पर फर्जी नंबर प्लेट है? इसके पीछे उसका उद्देश्य क्या है? इन सभी सवालों का पता लगाया जा रहा है। दो गाड़ियों पर नंबर एमएच-01-ईई-2388 लगा है, नंबर प्लेट पीली है। मिली जानकारी के मुताबिक, एक ही नंबर प्लेट वाली दोनों गाड़ियां सोमवार दोपहर करीब 1 बजे मुंबई के ताज होटल के सामने खड़ी थी। इसके बाद असली नंबर के ड्राइवर ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई। मामले पर संज्ञान लेते हुए दोनों गाड़ियों को कोलाबा पुलिस स्टेशन ले जाया गया। इसके बाद पुलिस ताज होटल के सामने दूसरी कार की पहचान कर गहनता से जांच कर रही है। ज्ञात हो कि 26/11 के आतंकवादी हमले के दौरान ताज होटल को निशाना बनाया गया था। इसलिए इस इलाके में हमेशा पुलिस बल तैनात रहता है। मुंबई पुलिस के पास सुरक्षा के साथ-साथ ताज होटल की अपनी सुरक्षा भी है। हालांकि, दोपहर के करीब एक ही समय पर एक ही नंबर प्लेट वाली दो गाड़ियां आ गईं, जिससे हड़कंप मच गया। इन दोनों कारों का नंबर एमएच-01-ईई-2388 है और दोनों चार पहिया वाहनों का रंग भी सफेद है। जांच के समय पता चला कि दोनों कारों की नंबर प्लेट एक जैसी थी। इससे साफ है कि दोनों कारों में से एक की नंबर प्लेट फर्जी है। कोलाबा पुलिस ने दोनों कारों के ड्राइवरों की जांच शुरू कर दी है, लेकिन अभी तक कोई सुराग नहीं मिला है। आखिर फर्जी नंबर प्लेट का इस्तेमाल क्यों किया गया, इसके पीछे क्या मकसद था? ऐसे कई सवालों के जवाब पुलिस तलाश रही है।

विरोधियों को गिरिराज सिंह की दो टूक कहा: जब इस्लाम की पैदाइश नहीं हुई थी, तब से लग रहे कुंभ मेला

* महाकुंभ का आयोजन वक्फ की जमीन पर करने का किया था दावा

पटना (एजेंसी)। महाकुंभ का आयोजन वक्फ की जमीन पर करने का दावा करने वाले बयान पर केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा कि कुछ कट्टरपंथी मुसलमान देश के अंदर माहौल को बिगाड़ना चाहते हैं। उन्होंने नाराज होते हुए कहा जब इस्लाम की पैदाइश नहीं हुई थी, तब से कुंभ मेला लग रहा है। केंद्रीय मंत्री सिंह ने कहा कि कुछ लोग देश में माहौल बिगाड़ना चाहते हैं। उन्होंने पूछा, क्या कांग्रेस ने उन्हें ऐसा करने को कहा था, क्या कांग्रेस माहौल बिगाड़ रही है कि भारत में बांग्लादेश वाली स्थिति पैदा की जाए, जिस समय इस्लाम की पैदाइश नहीं हुई थी तब से कुंभ मेला का आयोजन हो रहा है। इसतरह के बयान देकर बेवजह हिंदुओं को उकसाना, हिंदुओं से झगड़ा करने का माहौल तैयार करना है। केंद्रीय मंत्री सिंह ने कहा कि कुंभ मेला पर इस तरह का बयान देना कहीं से सही नहीं है। उन्होंने पूछा कि इस बयान पर कांग्रेस नेता राहुल गांधी, उद्धव ठाकरे, लालू यादव, अखिलेश यादव की जुबान बंद क्यों है? सबकी मुंह में बर्फ क्यों जम गया?

इसके पहले ऑल इंडिया मुस्लिम जमात के राष्ट्रीय अध्यक्ष मौलाना शहाबुद्दीन रजवी बरेलवी ने कहा कि कुंभा का मेला जहां लग रहा हैं वहां जमीन वक्फ की है। मुसलमान बड़े दिल वाले हैं, अखाड़ा परिषद उनके प्रवेश पर पाबंदी लगा रहे हैं। मौलाना शहाबुद्दीन ने कहा कि प्रयागराज के निवासी ने दावा किया है कि कुंभ के मेले की जहां तैयारियां हो रही हैं, वहां जमीन वक्फ की संपत्ति है। ये जमीन करीब 54 बीघा है। मुसलमानों ने बड़ा दिल दिखाकर कोई आपत्ति नहीं की है। कुंभ मेले के सारे इंतजाम इसी वक्फ की जमीन पर हो रहे हैं। मगर, दूसरी तरफ अखाड़ा परिषद और दूसरे बाबा लोग मुसलमानों के प्रवेश पर पाबंदी लगा रहे हैं।

दिल्ली से बांग्लादेशी होंगे बाहर, दस्तावेजों की हो रही जांच, हजारों की हुई पहचान

नई दिल्ली (एजेंसी)। नई दिल्ली(ईएमएस)। दिल्ली में अवैध तरीके से रह रहे बांग्लादेशियों की पहचान की जा रही है। उनके दस्तावेजों की जांच हो रही है। प्रशासन से जुड़े अधिकारियों को कहना है कि फर्जी तरीके से दस्तावेज तैयार किए गए हैं। इनके पास बंगाल, असम, बिहार, झारखंड, दिल्ली, यूपी व हरियाणा के आधार व वोटर कार्ड मिले हैं। 16 हजार लोगों की सूची तैयार की गई है। दिल्ली के सभी 15 जिलों की झुग्गियों में वर्षों से अपना ठिकाना बनाकर अवैध रूप से रहने वाले लाखों बांग्लादेशी नागरिकों को वापस अपने देश लौटना होगा। गृह मंत्रालय व उपराज्यपाल के निर्देश पर दिल्ली पुलिस ने इनकी पहचान कर वापस बांग्लादेश भेजने की कवायद तेज कर दी है।

एक माह के दौरान 15 जिले की पुलिस ने 16,000 संदिग्ध बांग्लादेशियों की सूची तैयार की है। इनसे चरणबद्ध तरीके से पूछताछ व उनके दस्तावेज की जांच की जा रही हैं। इनमें 750 संदिग्धों के बारे में पुलिस को पूरा शक है कि ये बांग्लादेशी हो सकते हैं। इनके पास बंगाल, असम, बिहार, झारखंड, दिल्ली, यूपी व हरियाणा के आधार व वोटर कार्ड मिले हैं।इनमें कुछ के पास नए व कुछ के पास वर्षों पुराने दस्तावेज पाए गए। इन 750 संदिग्धों के आधार कार्ड के बारे में दिल्ली पुलिस ने भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण से जानकारी मांगी है। भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण से यह बताने को कहा गया है कि आधार कार्ड बनवाने के लिए इन्होंने क्या दस्तावेज जमा किए थे। अवैध रूप से आधार कार्ड व अन्य भारतीय दस्तावेज बनवाने वाले संदिग्ध बांग्लादेशियों के सभी दस्तावेज जब्त कर पुलिस संबंधित विभागों के सहयोग से जुटी हुई है। फर्जी तरीके से आधार व अन्य भारतीय दस्तावेज बनवाने की पुष्टि होते ही उनके उक्त दस्तावेज रद कर दिए जाएंगे और उन्हें पकड़ कर वापस बांग्लादेश भेज दिया जाएगा।

75 बांग्लादेशियों को वापस भेजा

भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण द्वारा भी संबंधित लोगों को जवाब तलब किया जाएगा। दिल्ली पुलिस मुख्यालय सूत्रों के मुताबिक एक माह के दौरान अब तक 75 बांग्लादेशियों को वापस बांग्लादेश भेज दिए गए हैं। इनकी सूची विदेशी क्षेत्रीय पंजीकरण कार्यालय (एफआरआरओ) को भी भेज दी गई है। सबसे अधिक बांग्लादेशी दक्षिण, दक्षिण-पूर्वी व दक्षिण-पश्चिम जिले में पकड़े गए हैं।इन तीन जिले में बड़ी संख्या में झुग्गी बस्ती हैं, जिनमें लाखों की संख्या में बांग्लादेशी रहते हैं। इनमें अधिकतर भारतीय दस्तावेज बनवा रखे हैं। पुलिस अधिकारी का कहना है कि अब बांग्लादेश से टूरिस्ट व बिजनेस वीजा पर दिल्ली आने वाले बांग्लादेशियों के बारे में भी पता लगा उनके बारे में जांच शुरू कर दी गई हैं।

फर्जी दस्तावेज बनवाने वाला गिरोह सक्रिय

दक्षिण जिला पुलिस ने हाल ही में दो ऐसे गिरोह का भी भंडाफोड़ किया है जो बांग्लादेशी नागरिकों के आधार कार्ड बनवा रहे थे। गिरोह के तार बांग्लादेशी एजेंटों से भी जुड़े थे जो बांग्लादेशी नागरिकों को सीमा पार कराने, ट्रांसपोर्टेशन के लिए तत्काल फर्जी भारतीय पहचान पत्र मुहैया कराने, दिल्ली लाने व यहां उन्हें जगह मुहैया करवाने के बाद उनके असली आधार कार्ड बनवा रहे थे।

पहाड़ों पर बर्फबारी से उत्तर प्रदेश में बढ़ा सर्दी का असर, लोग ठंड से बचने के लिए ले रहे आग का सहारा, प्रयागराज में अलाव की व्यवस्था की मांग

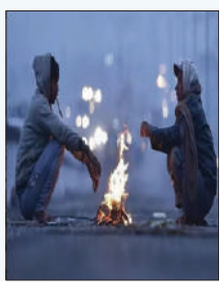

इलाहाबाद। उत्तर प्रदेश के कई इलाकों में लगातार हो रही बर्फबारी के कारण मौसम में बड़ी ठंडक छाई हुई है। नवाबादा, प्रयागराज, लखनऊ जैसे स्थानों में लोगों को थंड से बचाव के लिए आग का सहारा लेना पड़ रहा है। चौंकाने वाली बात है कि यहां की सर्दी लगभग लेह, लद्दाख जैसी ठंडी जगहों के स्तर को पहुंच गई है। सर्दी का मौसम अभी और भी खतरनाक होने की संभावना है। मौसम विभाग के अनुसार, आने वाले दिनों में भी ठंड का सितम जारी रहेगा। अब तक तबाही मचाने वाली सर्द ने प्रदेशवासियों की नींद उड़ा दी है और दिन-रात की जिंदगी में बड़ी ख़लल डाल रही है। प्रयागराज में लोगों को सूर्य के दर्शन नाम मात्र ही हो रहे हैं, जबकि घने कोहरे के कारण सड़कों पर वाहनों की रफ्तार भी धीमी हो गई है। आम नागरिक लकड़ी जलाने से ठंड से बचने का प्रयास कर रहे हैं। नगर निगम की ओर से अलाव की व्यवस्था हो रही है, लेकिन कुछ अविकसित क्षेत्रों में लोगों को सर्दी का सामना करना पड़ रहा है। इस पर एक नागरिक ने अपील की है कि सभी जगह अलाव की व्यवस्था की जाए ताकि सर्दी से बचने के लिए लोगों को आग का सहारा मिल सके। इसी संदर्भ में एक और व्यक्ति ने बताया कि सर्दी का मौसम बढ़ रहा है और अविकसित क्षेत्रों में लकड़ी की कमी ने लोगों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। यहां लोग प्रकार-प्रकार की लकड़ी जला कर ठंड से बचने का प्रयास कर रहे हैं। भविष्य में भी सर्दी की स्थिति और गंभीर होने की संभावना है और इससे बचने के लिए अलाव की व्यवस्था की जानी चाहिए।

इंडिया गेट का नाम बदलकर भारत माता द्वार करने की उठी मांग, पीएम मोदी को लिखा गया पत्र

अल्पसंख्यक मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जमाल सिद्दीकी ने लिखा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) अल्पसंख्यक मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जमाल सिद्दीकी ने इंडिया गेट का नाम बदलकर भारत माता द्वार करने की मांग की है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को संबोधित पत्र में सिद्दीकी ने बताया कि यह बदलाव भारत के शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। अल्पसंख्यक मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष सिद्दीकी ने कहा कि प्रतिष्ठित संरचना का नाम बदलकर भारत माता द्वार रखना राष्ट्र की भावना को बेहतर ढंग से प्रतिबिंबित करेगा और देश की सुरक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने वालों के बलिदान का सम्मान करेगा।

दरअसल कर्तव्य पथ के पास स्थित इंडिया गेट, भारतीय सेना के करीब 75,000 सैनिकों के बलिदान का सम्मान करते हुए एक गंभीर युद्ध स्मारक के रूप में खड़ा है। इन सैनिकों ने प्रथम विश्व युद्ध (1914-1921) के दौरान फ्रांस, फ्लैंडर्स, मेसोपोटामिया, फारस, पूर्वी अफ्रीका, गैलीपोली और निकट और सुदूर पूर्व के अन्य क्षेत्रों के साथ-साथ तीसरे एंग्लो के दौरान अपने जीवन का बलिदान दिया। सर एडविन लुटियंस द्वारा डिजाइन किया गया, इंडिया गेट की स्थापत्य शैली रोम में कॉन्सटेंटाइन के आर्क जैसे प्राचीन रोमन विजयी मेहराबों से प्रेरणा लेती है।

इंडिया गेट की तुलना पेरिस में आर्क डी ट्रायम्फ और मुंबई में गेटवे ऑफ इंडिया जैसी प्रतिष्ठित संरचनाओं से भी की जाती है। भारत के सबसे बड़े युद्ध स्मारकों में से एक के रूप में मान्यता प्राप्त, इंडिया गेट राष्ट्रीय गौरव के प्रतीक के रूप में कार्य करता है। गणतंत्र दिवस पर, प्रधानमंत्री अमर जवान ज्योति पर श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए स्मारक पर जाते हैं, जिसके बाद गणतंत्र दिवस परेड शुरू होती है, जो इसे भारत की औपचारिक परंपराओं में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर बनाती है। पिछले साल जुलाई में, राष्ट्रपति भवन के प्रतिष्ठित दरबार हॉल और अशोक हॉल का नाम बदलकर क्रमशः गणतंत्र मंडप और अशोक मंडप कर दिया गया था।

कर्नाटक के स्वास्थ्य मंत्री राव ने कहा, एचएमपीवी मामले देश के पहले केस नहीं

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक सरकार ने स्पष्ट किया कि बेंगलुरु में तीन और आठ महीने की उम्र के दो शिशुओं में मिले ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस (एचएमपीवी) के दो मामले भारत में पहले नहीं हैं। कर्नाटक के स्वास्थ्य मंत्री दिनेश गुंडू राव ने कहा,हम इन मामलों को देश का पहला मामला नहीं कह सकते। यह वायरस देश में पहले से ही मौजूद है। हो सकता है कि व्यक्ति का इस विशिष्ट वायरस के लिए परीक्षण किया गया हो और इसका पता चला हो। कर्नाटक सरकार में मंत्री राव ने बताया, यह साबित नहीं हुआ है कि बेंगलुरु में पाया गया मामला भारत का पहला मामला है। यह दावा सच नहीं है। यह एक मौजूदा वायरस है और एक निश्चित प्रतिशत लोग इससे प्रभावित हैं। यह कोई नई बात नहीं है।

वहीं मंत्री राव ने स्पष्ट किया कि वायरस से संक्रमित बच्चे का कोई विदेशी यात्रा इतिहास नहीं है और वह स्थानीय परिवार से हैं। राव ने कहा, उनमें से किसी ने भी चीन, मलेशिया या किसी अन्य देश की यात्रा नहीं की है। चीन में प्रकोप एचएमपीवी के एक नए प्रकार से जुड़ा हुआ है। हमारे पास अभी तक पूरी जानकारी नहीं है, और सरकार अभी भी जानकारी जुटा रही है। उन्होंने कहा, यह एचएमपीवी का एक नया वेरिएंट हो सकता है। हालांकि, एचएमपीवी एक ऐसा वायरस है जो भारत में पहले से ही लंबे समय से मौजूद है। यह सर्दी, फ्लू और खांसी जैसे सामान्य लक्षण पैदा करता है, जो आमतौर पर कुछ समय बाद कम हो जाते हैं। मुझे नहीं लगता कि हमें मामले को पहला केस कहना चाहिए। उन्होंने लोगों से कहा है कि वह बिल्कुल भी न घबराएं। यह एक मौजूदा वायरस है जो आता है और चला जाता है। चीन में स्थिति अलग है और इस पर सरकार बारीकी से नजर रखे हुए है। इस दौरान मंत्री ने कुछ नई जानकारी जुटाने और अगले कदमों पर निर्णय लेने के लिए आपातकालीन बैठक आयोजित करने की जानकारी दी। राव ने कहा, समय से पहले निर्णय नहीं लिया जा सकता है। पीसीआर जांच हमेशा से उपलब्ध रही है, लेकिन हमें यह निर्धारित करने की आवश्यकता है कि क्या यह आवश्यक है। हमें यह आकलन करना चाहिए कि क्या यह एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य चिंता है। सिर्फ इसलिए कि एक मामला पाया गया है, हम पैनिक मोड में नहीं जा सकते। यदि हम सर्दी के लक्षणों वाले सभी लोगों की जांच करते हैं, तो कोई न कोई वायरस मिलने की संभावना है।

किसान नेता के शरीर पर नहीं बचा मांस, क्या मोदी सरकार डल्लेवाल को यूं ही मरने देगी?

खनौरी बॉर्डर पर बढ़ती जा रही आंदोलनकारियों की संख्या

चंडीगढ़ (एजेंसी)। खनौरी बॉर्डर पर 42 दिनों से अनशन कर रहे भारतीय किसान यूनियन (सिद्धूपुर) के नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल की हालत नाजुक होती जा रही है। किसान नेता डल्लेवाल लगातार उल्टियां कर रहे हैं। डॉक्टरों की ओर से बताया गया कि उनके शरीर पर अब मांस नहीं बचा है। लीवर, किडनी और फेफड़ों में खराबी आ गई है। अब हालत यह है कि अगर डल्लेवाल का अनशन खत्म कर देते हैं, तब भी रिकवरी मुश्किल है। हालांकि केंद्र की ओर से अभी तक अनशन खत्म कराने की कोई सुगबुगाहट नहीं दिख रही है। अब सवाल यह है कि क्या मोदी सरकार डल्लेवाल को यूं ही मरने देगी?

लोकतंत्र में आमरण अनशन विरोध का सबसे अहिंसक तरीका है। किसान नेता डल्लेवाल भी एमएसपी को लेकर कानून बनाने की मांग पर अड़े हैं। वे पिछले 26 नवंबर से खनौरी बॉर्डर पर आमरण अनशन कर रहे हैं। पिछले दिनों सुप्रीम कोर्ट की ओर से गठित कमेटी ने आंदोलनकारी किसान से बातचीत करने की पेशकश की, इस मांग को किसान नेताओं ने खारिज कर दिया। डल्लेवाल का स्वास्थ्य हर दिन खराब हो रहा है। 70 साल के किसान नेता कैंसर के मरीज हैं और दवाइयां भी नहीं ले रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट की फटकार के बाद पंजाब सरकार ने धरनास्थल पर मेडिकल टीम, एडवांस्ड लाइफ सपोर्ट सिस्टम और एंबुलेंस को तैनात किया, मगर डल्लेवाल ने मेडिकल सपोर्ट लेने से मना कर दिया है। उनकी हालत गंभीर होती दिख रही है।

वहीं खनौरी बॉर्डर पर आंदोलनकारियों की भीड़ बढ़ती जा रही है, मगर केंद्र हालात को नजर अंदाज कर रही है। हर मंगलवार को किसानों से मिलने वाले कृषि मंत्री ने बयान दिया था कि मामले को सुप्रीम कोर्ट देख रहा है। सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों का पालन होगा। यह रवैया मोदी सरकार की मुश्किलें बढ़ा सकता है, क्योंकि आंदोलनकारियों के बीच मीडिया में छपी कई कहानियां तैरने लगी हैं। मीडिया रिपोर्ट में बताया गया कि 2020 के आंदोलन के दौरान किसान संगठनों ने 11 दौर की बातचीत के बाद अड़ियल रवैया अपनाया था और वार्ता फेल हो गई। 8 दिसंबर 2020 को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह बातचीत करने पूसा पहुंचे थे, मगर किसानों ने बातचीत से इंकार किया था। किसानों के इस रुख से मोदी सरकार की काफी किरकिरी हुई थी। चार साल पुराने अनुभव के कारण केंद्र सरकार सीधे तौर से बातचीत की पहल नहीं कर रही है।

पिछले दिनों सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई के दौरान सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता से पूछा गया कि केंद्र सरकार बयान क्यों नहीं दे रही है कि वह वास्तविक मांगों पर विचार करेगी और हम किसानों से चर्चा के लिए तैयार हैं। इसके जवाब में मेहता ने बताया था कि शायद कोर्ट को इससे जुड़े फैक्टर्स की जानकारी नहीं है। केंद्र हर किसान को लेकर चिंतित है। किसान संगठनों का कहना है कि 2020 के किसान आंदोलन के दौरान केंद्र सरकार ने एमएसपी की कानूनी गारंटी, लोन माफी, स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशों को लागू करने जैसी मांगों पर विचार करने का लिखित आश्वासन दिया था। दल्लेवाल भी वादे को लागू करने की मांग कर रहे हैं, मगर कोई केंद्र सरकार इस मुद्दे पर बातचीत नहीं करना चाहती है।

दल्लेवाल का आमरण अनशन विख्यात पर्यावरणविद स्वामी ज्ञान स्वरूप सानंद उर्फ प्रोफेसर जीडी अग्रवाल की याद दिला रहा है। जी डी अग्रवाल ने भी गंगा की सफाई को लेकर 112 दिनों तक आमरण अनशन करते हुए प्राण त्यागे थे। उन्होंने गंगा में गिरते प्रदूषित नालों और पवित्र नदी की सफाई के नाम पर खर्च हुए अरबों रुपये पर सवाल खड़े किए थे। उन्होंने भी अनशन से पहले प्रधानमंत्री को चिट्ठी लिखी थी, मगर जवाब नहीं मिला। 2018 में जी डी अग्रवाल ने एम्स ऋषिकेश में अंतिम सांस ली और उनके साथ ही एक बड़ा आंदोलन खत्म हो गया।

इंग्लैंड के खिलाफ ही नहीं, चैंपियंस ट्रॉफी से भी बाहर हो सकते हैं जसप्रीत बुमराह

नईदिल्ली, एजेंसी। भारत के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह को पीठ में ऐंठन के कारण इंग्लैंड के खिलाफ घरेलू सरजमीं पर सीमित ओवरों की सीरीज के अधिकांश मैचों से आराम दिया जा सकता है। उनकी नजरें 19 फरवरी से शुरू हो रही आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी पर टिकी हैं। हाल ही में समाप्त हुई बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 32 विकेट लेकर भारत के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी रहे बुमराह पीठ में ऐंठन के कारण सीरीज की अंतिम पारी में गेंदबाजी नहीं कर सके। समाचार एजेंसी के अनुसार 30 वर्षीय बुमराह ने सीरीज में 150 से अधिक ओवर गेंदबाजी की। इस चोट का सीधा संबंध सीरीज में उनके अत्यधिक वर्कलोड से है।

बाबर आजम के साथ मिलकर बना दिया वर्ल्ड रिकॉर्ड

शान मसूद ने साउथ अफ्रीका में जमाया ऐतिहासिक शतक

केपटाउन, एजेंसी। पाकिस्तान और साउथ अफ्रीका के बीच केपटाउन में टेस्ट सीरीज का दूसरा मुकाबला खेला जा रहा है. पाकिस्तान की टीम पहली पारी में 194 रनों पर ढेर होने के बाद बहुत ही मुश्किलों में थी. साउथ अफ्रीका ने फॉलो ऑन के लिए मजबूर कर दिया था. तभी दूसरी पारी में कप्तान शान मसूद ने ऐतिहासिक शतक जमाया. उन्होंने मैच के तीसरे दिन बाबर आजम के साथ मिलकर 205 रनों की ओपनिंग साझेदारी की और टेस्ट क्रिकेट में एक नया वर्ल्ड रिकॉर्ड बना दिया. दरअसल, 148 सालों के टेस्ट इतिहास में फॉलो ऑन के बाद ये सबसे बड़ी ओपनिंग साझेदारी बन गई है. साउथ अफ्रीका के कप्तान टेम्बा बावुमा ने टॉस जीतकर पहले बैटिंग करने का फैसला किया था. इसके बाद उनकी टीम ने पहली पारी में 615 रनों विशाल स्कोर खड़ा कर दिया. इसके जवाब में पूरी पाकिस्तानी टीम 194 रन पर ढेर हो गई.

अब दूसरी पारी में फॉलो ऑन मिलने के बाद पाकिस्तान पर दबाव दोगुना हो गया था. टीम के रेगुलर ओपनर सैम अयूब एंकल इंजरी के कारण मुकाबले से पहले ही बाहर हो चुके थे. लेकिन शान मसूद ने पिछली गलती को भूलते हुए बाबर आजम के साथ लड़ाई दिखाई और तेजी से रन बनाए. उन्होंने 166 गेंद में 102 रनों की नाबाद पारी खेली और शान ने 205 रनों की ओपनिंग पार्टनरशिप से अपनी टीम को मुश्किलों से निकाला.

हालांकि, दिन का खेल खत्म होने से पहले बाबर आजम 81 रन बनाकर आउट हो गए. लेकिन इससे ज्यादा मुश्किलें नहीं आई. नाइट वॉचमैन खुर्रम शहजाद ने विकेट नहीं गिरने दिया. पहले दिन का खेल खत्म होने तक पाकिस्तान की टीम ने दूसरी पारी में 1 विकेट के नुकसान पर 213 रन बना लिए हैं और अब साउथ अफ्रीका से 208 रन पीछे है. बाबर ने एक ही दिन जड़ी दो फिफ्टी

शान के साथ बाबर आजम भी वापस फॉर्म लौटते हुए दिखाई दिए. वो पिछले करीब दो साल रन के लिए संघर्ष कर रहे थे. वहीं अर्धशतक और शतक के लिए तरस गए थे. लेकिन साउथ अफ्रीका में वो रंग में लौटे और एक ही दिन में 2 फिफ्टी ठोक दी.

विराट, रोहित, रवींद्र का ये आखिरी ऑस्ट्रेलिया दौरा

नईदिल्ली, एजेंसी। ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट टीम ने अपने घर में खेली गई 5 मैचों की टेस्ट सीरीज में भारतीय टीम को 3-1 से करारी शिकस्त दी है. इसी के साथ कंगारू टीम ने बॉर्डर गावस?कर ट्रॉफी अपने नाम कर ली है. सीरीज का पांचवां यानी आखिरी टेस्ट सिडनी में खेला गया, जिसके तीसरे दिन (5 जनवरी) ही ऑस्ट्रेलिया ने 6 विकेट से जीत दर्ज कर सीरीज अपने नाम कर ली. बता दें कि भारतीय क्रिकेट टीम और ऑस्ट्रेलिया के बीच 1996-97 से बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी खेली जा रही है. मगर इस बार का ऑस्ट्रेलियाई दौरा कप्तान रोहित शर्मा, पूर्व कप्तान विराट कोहली और रवींद्र जडेजा के लिए आखिरी साबित होगा.

उम्र ही बाधा बनेगी

दरअसल, भारतीय टीम को बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के लिए अब अगला ऑस्ट्रेलिया दौरा 2029 में करना है. ऐसे में इन तीनों के लिए उनकी उम्र ही बाधा बनेगी. रोहित इसी साल 30 अप्रैल को 38 साल के हो जाएंगे. जबकि कोहली की उम्र 36 साल है.

दूसरी ओर स्पिन ऑलराउंडर जडेजा हैं, जो पिछले ही महीने यानी 6 दिसंबर को 36 साल के हुए हैं. ऐसे में इन तीनों का अगला ऑस्ट्रेलिया दौरा नामुमकिन सा है. इस तरह इन तीनों का यह आखिरी ऑस्ट्रेलिया दौरा साबित होगा. भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के तहत अगली टेस्ट सीरीज 2026-27 में होनी है. मगर तब कंगारू टीम को भारत दौरे पर आना होगा.

रोहित के लिए बेहद खराब रहा ऑस्ट्रेलिया दौरा

मौजूदा ऑस्ट्रेलिया दौरे पर रोहित शर्मा का बेहद ही खराब प्रदर्शन रहा है. हिटमैन ने इस ऑस्ट्रेलिया सीरीज में 3 टेस्ट की 5 पारियों में सिर्फ 31 रन बनाए हैं. उनका औसत भी 6.20 का रहा, जो किसी पुछल्ले गेंदबाज से भी कम का है. जबकि तेज गेंदबाज आकाश दीप ने 3 पारियों में रोहित से ज्यादा 38 रन जड़ दिए हैं.

जबकि विराट कोहली ने 9 पारियों में 190 रन बनाए. इस दौरान एक शतक भी जमाया है. दूसरी ओर जडेजा ने 5 पारियों में 135 रन जड़े. साथ ही गेंदबाजी में जडेजा ने 4 पारियों में 4 विकेट झटके है.

रोहित का क्रिकेट करियर

- **टेस्ट क्रिकेट:** 67 मैच, 116 पारियां, 4301 रन, 212 हाइएस्ट स्कोर, 40.57 औसत, 12 शतक और 18 अर्धशतक
- **वनडे क्रिकेट:** 265 मैच, 257 पारियां, 10866 रन, 264 हाइएस्ट स्कोर, 49.16 औसत, 31 शतक और 57 अर्धशतक
- **टी-20 क्रिकेट:** 159 मैच, 151 पारियां, 4231 रन, 121* हाइएस्ट स्कोर, 32.05 औसत, 5 शतक और 32 अर्धशतक

जडेजा का क्रिकेट करियर

- **टेस्ट क्रिकेट:** 80 मैच, 118 पारियां, 3370 रन, 175* हाइएस्ट स्कोर, 34.74 औसत, 4 शतक और 22 अर्धशतक, 323 विकेट लिए.
- **वनडे क्रिकेट:** 197 मैच, 132 पारियां, 2756 रन बनाए, 189 पारी में 220 विकेट लिए, 5/33 बेस्ट प्रदर्शन.
- **टी-20 क्रिकेट:** 74 मैच, 41 पारियां, 515 रन बनाए, 71 पारी में 54 विकेट लिए, 3/15 बेस्ट प्रदर्शन.

विराट कोहली का क्रिकेट करियर

- **टेस्ट क्रिकेट:** 123 मैच, 210 पारियां, 9230 रन, 254* हाइएस्ट स्कोर, 46.85 औसत, 30 शतक और 31 अर्धशतक
- **वनडे क्रिकेट:** 295 मैच, 283 पारियां, 13906 रन, 183 हाइएस्ट स्कोर, 58.18 औसत, 50 शतक और 72 अर्धशतक
- **टी-20 क्रिकेट:** 125 मैच, 117 पारियां, 4188 रन, 122* हाइएस्ट स्कोर, 48.69 औसत, 1 शतक और 38 अर्धशतक

11 जून से शुरू होगा वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप का फाइनल

लॉर्ड्स, एजेंसी। दक्षिण अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया तीसरे वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप फ़ाइनल में आमने-सामने होंगे। ऑस्ट्रेलिया ने सिडनी में भारत को हराकर बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफ़ी में 3-1 से सीरीज़ जीतने के साथ ही फ़ाइनल में जगह बनाई। यह मुक़ाबला 11 से 15 जून के बीच लॉर्ड्स में खेला जाएगा। ऑस्ट्रेलिया के पास इस चक्र में अभी दो और मैच बचे हैं, जो इस महीने के अंत में श्रीलंका के ख़िलाफ़ श्रीलंका में होंगे। लेकिन अगर वे 0-2 से हार भी जाते हैं, तब भी भारत या श्रीलंका में से कोई भी टीम उन्हें वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप टेबल के शीर्ष दो स्थानों से नहीं हटा सकेगी। अगर श्रीलंका 2-0 से यह सीरीज़ जीतता है, तो वह 53.85 प्रतिशत अंकों तक पहुंच सकता है। लेकिन ऑस्ट्रेलिया वर्तमान में 63.73 प्रतिशत अंक पर है और वह अगले दो मैच हार भी गया तो 57.02 प्रतिशत अंक पर रहेगा। वहीं भारत इस डब्ल्यूटीसी चक्र को 50 प्रतिशत अंकों के साथ समाप्त कर चुका है। ऑस्ट्रेलिया के लिए फ़ाइनल में जगह गंवाने का एकमात्र रास्ता यह है कि वे श्रीलंका में होने वाले दोनों मैचों में आठ पेनल्टी प्वाइंट गंवाएं, जो लगभग असंभव है। दक्षिण अफ़्रीका फ़ाइनल में पहुंचने वाली पहली टीम बनी थी। उन्होंने वेस्टइंडीज़, बांग्लादेश (2008 के बाद एशिया में पहली सीरीज़ जीत) और श्रीलंका के ख़िलाफ़ सीरीज़ जीती, जबकि भारत के ख़िलाफ़ घरेलू सीरीज़ ड्रॉ रही और न्यूज़ीलैंड में उन्हें हार का सामना करना पड़ा, जहां उन्होंने कमज़ोर टीम के साथ दौरा किया था। वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप फ़ाइनल में जगह बनाना दक्षिण अफ़्रीका के लिए सपनों की तरह रहा, जो इस साल की शुरुआत में पुरुष और महिला टी20 वर्ल्ड कप में उपविजेता भी रहे थे।

विराट कोहली को एबी डिविलियर्स की सलाह-

मैदान पर लड़ाई से बचें, कई बार ज्यादा ही उलझ जाते हैं

नईदिल्ली, एजेंसी। भारतीय टीम के पूर्व कप्तान विराट कोहली को रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के पूर्व साथी एबी डिविलियर्स ने रविवार (6 जनवरी) को रीसेट करने और फॉर्म में वापस आने के लिए मैदान पर लड़ाई से बचने की सलाह दी है। कोहली ने हाल ही में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी टेस्ट सीरीज में बहुत खराब प्रदर्शन किया।

उन्होंने 5 मैचों में सिर्फ 190 रन बनाए थे। एबी डिविलियर्स ने कहा, मुझे लगता है कि हर बार अपने दिमाग को रीसेट करना जरूरी है। विराट को लड़ाई पसंद है, लेकिन जब आप अपने सर्वश्रेष्ठ फॉर्म में नहीं होते हैं, तो उन चीजों से छुटकारा पाना सबसे अच्छा होता है। एक बल्लेबाज के तौर पर हर गेंद के लिए रीसेट होना और उसे इवेंट समझना और गेंदबाज के बारे में भूल जाना सबसे अच्छा है। एबी डिविलियर्स ने कहा, मुझे लगता है कि विराट कभी-कभी अपनी फाइटिंग स्पिरिट के कारण उसे भूल जाते हैं। वह पूरे भारत को दिखाना चाहते हैं कि वह उनके लिए लड़ने के लिए मौजूद हैं और इसलिए उलझ जाते हैं। उस व्यक्ति (कोहली) का कौशल, अनुभव और महानता कोई मुद्दा नहीं है। कभी-कभी हर एक गेंद के बाद फिर से ध्यान केंद्रित करना होता है। हो सकता है कि कभी-कभी वह बहुत अधिक उलझ जाते हैं।

सैम कोनस्टस के साथ विवाद

कोहली ने चौथे टेस्ट में सुर्खियां बटोरीं जब ऑस्ट्रेलिया के सैम कोनस्टस के साथ मैदान पर उनका विवाद हुआ। दोनों खिलाड़ी मैदान पर एक दूसरे से भिड़ गए थे। टेस्ट में आउट होने के बाद मेलबर्न के दर्शकों ने कोहली का मजाक उड़ाया। कोहली उनसे भी उलझे। डिविलियर्स ने कहा, ÷मुझे लगता है कि मैदान पर लड़ाई विराट की सबसे बड़ी ताकत है और यह उनकी कमजोरी भी हो सकती है।

व्हीलचेयर पर बैठकर जीवन को फिर से शुरू करना बहुत मुश्किल था: पैरा शूटर अवनि लेखरा

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय पैरा शूटर अवनि लेखरा ने पैरा-एथलीट बनने की चुनौतीपूर्ण यात्रा के लिए आभार व्यक्त किया और चैंपियन बनने में मानसिक स्वास्थ्य के महत्व पर विचार किया।

दो बार पैरालंपिक स्वर्ण पदक जीतने वाली अवनि 10 साल की उम्र में एक कार दुर्घटना के बाद कमर से नीचे लकवाग्रस्त हो गई थीं। चुनौतियों को अपने ऊपर हावी न होने देते हुए उन्होंने 2015 में निशानेबाजी का खेल अपनाया और तब से कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के टूर्नामेंट जीते। 2020 में, अवनि ने टोक्यो में पैरालंपिक स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनकर

इतिहास भी रच दिया। उन्होंने ओलंपिक पदक विजेता गगन नारंग स्पोर्ट्स प्रमोशन फाउंडेशन द्वारा शुरू की गई पहल हाउस ऑफ ग्लोरी पॉडकास्ट पर कहा, यह एक उतार-चढ़ाव भरा सफर रहा है। मुझे सब कुछ नहीं दिया गया था और मुझे बिल्कुल शुरुआत से शुरुआत करनी पड़ी।

दुर्घटना से पहले, मैं एक अलग बच्ची थी। मुझे डांसिंग, सिंगिंग और ऐसे ही अन्य शौक ज्यादा पसंद थे। दुर्घटना के बाद व्हीलचेयर पर जीवन को फिर से शुरू करना काफी मुश्किल था। आपकी जिंदगी पूरी तरह से बदल जाती है। आपको फिर से बैठना भी सीखना पड़ता है।

सिडनी टेस्ट से बाहर होने के बाद मार्श बीबीएल में पर्थ स्कॉर्चर्स के लिए खेलेंगे

मेलबर्न, एजेंसी। ऑस्ट्रेलिया के टी20 कप्तान मिशेल मार्श, जिन्हें भारत के खिलाफ सिडनी टेस्ट से बाहर कर दिया गया था, बिग बैश लीग (बीबीएल) में पर्थ स्कॉर्चर्स के लिए खेलने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। मार्श, जिन्होंने आखिरी बार सिडनी सिक्सर्स पर बीबीएल सीजन 11 के फाइनल में स्कॉर्चर्स के लिए खेला था, उन्हें मंगलवार को ऑप्टस स्टेडियम में मेलबर्न रेनेगेड्स के खिलाफ होने वाले मैच के लिए स्कॉर्चर्स की टीम में शामिल किया गया है।श्रृंखला में खराब प्रदर्शन के कारण ऑलराउंडर को सिडनी टेस्ट से बाहर कर दिया गया था और उनकी जगह डेब्यू करने वाले ब्यू वेबस्टर को शामिल किया गया, जिन्होंने 57 और नाबाद 39 रन बनाने के अलावा एक विकेट और दो शानदार कैच भी लिए। टखने की सर्जरी के कारण मार्श पूरे बीबीएल सीजन 12 से बाहर हो गए थे और ऑस्ट्रेलियाई टेस्ट टीम में अपनी जगह वापस जीतने के बाद टूर्नामेंट के 13वें सीजन के लिए उपलब्ध नहीं थे। स्कॉर्चर्स में मार्श की वापसी से प्रतिस्थापन खिलाड़ी ब्रायस जैक्सन 14 खिलाड़ियों की टीम से बाहर हो गए हैं।

ऋषि धवन ने किया संन्यास का एलान

नईदिल्ली, एजेंसी। टीम इंडिया में इस वक्त कई बड़े खिलाड़ियों के संन्यास की अटकलें लगाई जा रही हैं. स्टार ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन के अचानक सीरीज के बीच से ही रिटायरमेंट के बाद ऐसी अफवाहें ज्यादा तेज हो गईं. ऑस्ट्रेलिया दौरे पर टेस्ट सीरीज हारने और बल्ले से नाकाम रहने पर कप्तान रोहित शर्मा और स्टार बल्लेबाज विराट कोहली को बाहर करने और रिटायर होने की सलाह दी जा रही है. मगर इन दोनों से पहले एक भारतीय खिलाड़ी ने संन्यास का ऐलान कर दिया है. ये खिलाड़ी हैं ऋषि धवन, जिन्होंने लिमिटेड ओवर्स क्रिकेट से संन्यास का ऐलान कर दिया है.

हिमाचल प्रदेश क्रिकेट टीम के कप्तान और टीम इंडिया के पूर्व ऑलराउंडर ऋषि धवन ने रविवार 5 जनवरी को एक सोशल मीडिया पोस्ट में अपने रिटायरमेंट का ऐलान किया. 34 साल के धवन ने अपने रिटायरमेंट पोस्ट में बताया कि वो भारतीय क्रिकेट में लिमिटेड ओवर्स फॉर्मेट से संन्यास ले रहे हैं. यानि अब वो विजय हजारे ट्रॉफी, सैयद मुश्ताक अली टी20 ट्रॉफी और इंडियन प्रीमियर लीग में खेलते हुए नहीं दिखेंगे. हालांकि वो फर्स्ट क्लास यानि रणजी ट्रॉफी में खेलना जारी रखेंगे.

मैच के बाद किया ऐलान

धवन का ये ऐलान ठीक उस दिन आया, जिस दिन उनकी टीम ने विजय हजारे ट्रॉफी में जीत दर्ज की. रविवार 5 जनवरी को धवन की कप्तानी वाली हिमाचल प्रदेश ने आंध्र प्रदेश को 8 विकेट से हरा दिया. खुद धवन ने इस जीत में अहम भूमिका निभाई. उन्होंने पहले 2 विकेट हासिल किए. फिर तेजी से नाबाद 45 रन की पारी खेलकर टीम को जीत तक पहुंचाया. धवन की कप्तानी में ही 3 सीजन पहले हिमाचल ने इस टूर्नामेंट का खिताब जीता था.

ऋषि धवन ने अपने पोस्ट में बीसीसीआई, हिमाचल प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन, अपने टीममेट्स और फैंस को धन्यवाद दिया. उन्होंने साथ ही पंजाब किंग्स, मुंबई इंडियंस और कोलकाता नाइट राइडर्स को भी शुक्रिया कहा, जिन फ्रेंचाइजियों के लिए उन्होंने आईपीएल में हिस्सा लिया था. धवन की आखिरी आईपीएल टीम पंजाब किंग्स ही थी लेकिन इस बार उन्हें किसी फ्रेंचाइजी ने नहीं खरीदा था.

भारतीय खिलौना उद्योग का निर्यात बढ़ा

- निर्यात बढ़ने में सरकार के प्रयास और नीतियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा

नई दिल्ली ।

भारतीय खिलौना उद्योग ने हाल ही में एक उल्लेखनीय मोड़ लिया है जो उसके विकास की कहानी को दर्शाता है। एक नए अध्ययन के अनुसार, वित्त वर्ष 2022-23 में, इस उद्योग ने आयात में 52 फीसदी की गिरावट और निर्यात में 239 फीसदी की वृद्धि देखी है। इसका मामूली संकेतन यह है कि भारतीय खिलौना उद्योग अब एक महत्वपूर्ण खिलौना निर्यातक बन गया है। इस प्रगति के पीछे सरकार के प्रयास और नीतियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। विनिर्माण पारिस्थितिकी तंत्र की अच्छी बनावट ने इस उद्योग को विकसित किया है। साथ ही, सरकार के सहयोग की मात्रा बढ़ी है जिससे विनिर्माण इकाइयों की संख्या में वृद्धि हुई और निर्भरता कम हुई। भारतीय खिलौना उद्योग को भविष्य में और भी सशक्त बनाने के लिए सुझाव दिए गए हैं। विकास में प्रौद्योगिकी का महत्वपूर्ण योगदान है जिससे क्षेत्र में और भी नए उत्पाद विकसित हो सकें। ई-कॉमर्स के माध्यम से संयोजन बढ़ाए जा सकते हैं और निर्यात को संवर्धित किया जा सकता है। इसके साथ ही, सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देने के लिए कई अवसर हैं जिन्हें

उद्योग को लाभ देना चाहिए। इस समय उद्योग और सरकार का एक होकर काम करना जरूरी है ताकि भारत ग्लोबल खिलौना मार्केट में भाग ले सके। गति और योगदान में एकीकृत उद्योग और सरकार के संयोजन से, भारतीय खिलौना उद्योग ने एक नई पहचान बनाई है। इसे आगे बढ़ाने के लिए उद्योग को और भी सक्रिय रूप से काम करना होगा और सरकार को भी इसमें सहयोग प्रदान करना होगा।

चांदी के लिए 'हॉलमार्किंग' अनिवार्य करने पर विचार करे भारतीय मानक ब्यूरो : जोशी

नई दिल्ली। केंद्रीय खाद्य एवं उपभोक्ता मामलों के मंत्री प्रहलाद जोशी ने सोमवार को कहा कि भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) को उपभोक्ताओं की मांग के बाद चांदी तथा चांदी के सामान के लिए 'हॉलमार्किंग' अनिवार्य करने पर विचार करना चाहिए।

केंद्रीय मंत्री प्रहलाद जोशी ने राजधानी नई दिल्ली में आयोजित 78वें बीआईएस स्थापना दिवस समारोह को संबोधित करते हुए यह बात कही। उन्होंने कहा कि चांदी की 'हॉलमार्किंग' के लिए उपभोक्ताओं की ओर से मांग है। आप (बीआईएस) इस पर विचार-विमर्श कर निर्णय ले सकते हैं। उन्होंने कहा कि चांदी की 'हॉलमार्किंग' से भारत में बहुमूल्य धातुओं के गुणवत्ता नियंत्रण उपायों को बल मिलेगा।

इससे पहले केंद्रीय मंत्री ने भारतीय मानक ब्यूरो मुख्यालय में ₹बीआईएस स्टूडियो₹ का शुभारंभ किया। यह पहल देश के प्रत्येक उपभोक्ता को गुणवत्ता के प्रति जागरूक मानसिकता को बढ़ावा देने में अहम भूमिका निभाएगी, जिससे एक गुणवत्तापूर्ण जागृत राष्ट्र के निर्माण में सहायता मिलेगी।

केंद्र सरकार ने वर्तमान में केवल सोने के आभूषणों तथा अन्य सामान के लिए 'हॉलमार्किंग' अनिवार्य किया है, जिसका उद्देश्य उपभोक्ता हितों की रक्षा करना तथा उत्पाद की प्रामाणिकता सुनिश्चित करना है। मौजूदा 'हॉलमार्किंग' प्रणाली में छह-अंकीय 'अल्फान्यूमेरिक कोड' शामिल है, जो सोने की शुद्धता को प्रमाणित करता है।

अब विल्मर अपने हाई-मार्जिन वाले एफएमसीजी बिजनेस को बढ़ाएगी

विल्मर भारतीय बाजार में पेश कर सकती है वैश्विक एफएमसीजी ब्रांड

नई दिल्ली ।

भारत की सबसे बड़ी खाद्य तेल कंपनी अडाणी विल्मर लिमिटेड (एडब्लयूएल) से अडाणी समूह के बाहर निकलने के बाद विल्मर अपने हाई-मार्जिन वाले एफएमसीजी बिजनेस को बढ़ाने पर विचार करेगी। सूत्रों के अनुसार विल्मर आईटीसी के समान रणनीति अपनाते हुए अपने मुख्य व्यवसाय और व्यापक वितरण नेटवर्क का लाभ उठाने की तैयारी कर रही है। आईटीसी ने एफएमसीजी में विस्तार करने के लिए अपने मजबूत सिगरेट व्यवसाय का इस्तेमाल किया, उसी तरह एडब्लूएल अपने प्रमुख खाद्य तेल व्यवसाय का उपयोग एफएमसीजी वृद्धि के लिए आधार के रूप में करने के लिए तैयार है। मामले की जानकारी रखने वाले सूत्रों ने कहा कि अदाणी समूह के बाहर निकलने के बाद, विल्मर भारतीय बाजार में अधिक वैश्विक एफएमसीजी ब्रांडों को पेश कर सकती है। दिसंबर तिमाही में एडब्ल्यूएल के एफएमसीजी व्यवसाय ने मात्रा के लिहाज से सालाना आधार पर 24 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की। कुल बिक्री की मात्रा में खाद्य और एफएमसीजी की हिस्सेदारी बढ़कर 20 प्रतिशत हो गई। इस खंड की कुल राजस्व में हिस्सेदारी बढ़कर नौ प्रतिशत हो गई। इससे पहले अडाणी एंटरप्राइजेज ने बताया था कि वह अडानी विल्मर लिमिटेड में 13 फीसदी हिस्सेदारी बेचेगी। रिपोर्ट के मुताबिक अडाणी एंटरप्राइजेज अडाणी विल्मर से बाहर निकलकर 2 अरब डॉलर (करीब 17000 करोड़ रुपये) से ज्यादा जुटाएगी।

रुपये में गिरावट: भारतीय दवा निर्यातकों को फायदा या हानि?

- दवाओं की कीमतों में भी आ सकता है बदलाव

नई दिल्ली।

डॉलर के मुकाबले रुपये में हालिया गिरावट ने भारतीय दवा निर्यातकों के लिए हलचल मचा दी है। कुछ लोग मानते हैं कि रुपया में गिरावट से निर्यात पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा, क्योंकि निर्यात के लिए मुद्रा के उतार-चढ़ाव से बचाव पहले से ही किया जाता है। हालांकि, कुछ कह रहे हैं कि इससे दवाओं की कीमतों में भी बदलाव आ सकता है। इस बारे में इंडियन फार्मास्युटिकल अलायंस (आईपीए) के एक वे रिष्ठ अे धिकारी ने कहा कि इस तरह की उठापटक से बचने के लिए सालाना सौदों में इंतजाम किया जाता है। दवा निर्यात में 80 फीसदी योगदान करने वाली शोध केंद्रित देसी औषधि कंपनियों का संगठन आईपीए ने इस मामले पर जोर दिया है। वर्ष 2023-24 में भारत ने अमेरिका को 8.73 अरब डॉलर की दवाएं निर्यात की थीं, जो देश के कुल दवा निर्यात का 31 फीसदी था। भारतीय दवा कंपनियों के लिए अमेरिका एक महत्वपूर्ण बाजार बना रहेगा, क्योंकि वहां किफायती जेनेरिक दवाएं प्रचलित हैं। इसी संदर्भ में बायोकॉन ऐंड बायोकॉन बायोलॉजिक्स की चेयरपर्सन ने बताया कि रुपये में कमजोरी से भारतीय दवा निर्यातकों को फायदा हो सकता है। उनकी आशा है कि कंपनियाँ रुपये में हुई कमजोरी का इस्तेमाल अपने मुनाफे को बढ़ाने के लिए करेंगी। इस सबके बावजूद, आगे क्या होगा यह समय ही बताएगा। एक ओर खरीदार को अधिक लाभ देने के लिए दवाओं कीमतें बढ़ा सकती हैं, वहीं दूसरी ओर निर्यातकों को मार्जिन समेत मुनाफा कम हो सकता है। फिर भी, भारतीय दवा उद्योग का अमेरिकी बाजार में दबदबा बिगड़ सकता है।

दिसंबर 2024 में कारों की बिक्री में जबरदस्त उछाल

नई दिल्ली। मारुति सुजुकी इंडिया ने दिसंबर 2024 में बिक्री में 30 प्रतिशत का उछाल दर्ज करते हुए 1,78,248 यूनिट का आंकड़ा पार किया। मारुति सुजुकी की प्रतिद्वंद्वी कंपनी हुंडई, एसयूवी निर्माता महिंद्रा एंड महिंद्रा और किआ मोटर्स ने भी कारें खूब बेचीं। मारुति सुजुकी इंडिया (एमएसआई) ने रेगुलेटरी फाइलिंग में कहा कि दिसंबर में मारुति सुजुकी की कुल घरेलू बिक्री, जिसमें हल्के कमर्शियल वाहन और टोयोटा किर्लोस्कर मोटर को आपूर्ति शामिल है, 1,32,523 यूनिट रही यानि 24.44 प्रतिशत रहा। पिछले साल इसी महीने में यह आंकड़ा 1,06,492 यूनिट था। दिसंबर 2024 में कुल घरेलू यात्री वाहन (पीवी) की बिक्री 1,30,117 यूनिट रही, जबकि एक साल पहले इसी महीने में यह 1,04,778 यूनिट थी, जो 24.18 प्रतिशत अधिक है। मिनी कारों ऑल्टो और एस-प्रेसो की बिक्री इस महीने में बढ़कर 7,418 यूनिट हो गई, जबकि एक साल पहले इसी अवधि में यह 2,557 यूनिट थी।

इसी तरह, बलेनो, सेलेरियो, डिजायर, इग्निस, स्विफ्ट और वैगनआर जैसी कॉम्पैक्ट कारों की बिक्री दिसंबर 2023 में 45,741 यूनिट से बढ़कर 54,906 यूनिट हो गई। कंपनी ने कहा कि ब्रेजा, एर्टिगा, फ्रोंक्स, ग्रैंड विटारा, इनविक्टो, जिम्नी और एक्सएल6 सहित कंपनी की एसयूवी ने दिसंबर 2024 में 55,651 यूनिट की बिक्री दर्ज की, जो पिछले साल इसी महीने में 45,957 यूनिट थी। एमएसआई ने कहा कि दिसंबर में उसका निर्यात 37,419 यूनिट रहा, जबकि एक साल पहले इसी महीने में 26,884 यूनिट का निर्यात हुआ था। इसी तरह, ऑटोमेकर किआ इंडिया ने बताया कि पिछले साल की तुलना में 2024 में कुल बिक्री में 6 प्रतिशत की वृद्धि हुई और यह 2,55,038 यूनिट रही, जो अब तक की सबसे अधिक वार्षिक बिक्री है। हुंडई मोटर इंडिया लिमिटेड ने कहा कि कंपनी ने 2024 में 6,05,433 यूनिट की अब तक की सबसे अधिक वार्षिक घरेलू बिक्री दर्ज की है। कंपनी ने पिछले साल कुल 7,64,119 यूनिट (घरेलू और निर्यात सहित) की बिक्री हासिल की। दिसंबर के महीने में, एचएमआईएल ने 55,078 यूनिट (घरेलू 42,208 यूनिट घरेलू और 12,870 यूनिट निर्यात) की कुल मासिक बिक्री की जानकारी दी। एचएमआईएल के पूर्णकालिक निदेशक और मुख्य परिचालन अधिकारी तरुण गर्ग के अनुसार, उद्योग को बड़े पैमाने पर चुनौतियों का सामना करना पड़ा बावजूद इसके कंपनी 2024 में बिक्री की गति को बनाए रखने में सफल रही। 1,86,919 यूनिट की अब तक की सबसे अधिक वार्षिक घरेलू बिक्री हासिल कर, हुंडई क्रेटा मॉडल ने एसयूवी लीडर के रूप में कंपनी की स्थिति को मजबूत करना जारी रखा।

कंपनी ने अपने खुदरा कारोबार का विस्तार करने का लिया निर्णय

बेंगलुरु । रिवर भारत की जानी-मानी खुदरा कंपनी ने इस साल मार्च तक देशभर में 25 नए स्टोर्स खोलने की योजना घोषित की है। इस योजना के अंतर्गत कंपनी ने अपने खुदरा कारोबार का विस्तार करने का निर्णय लिया है। पहला स्टोर कोयंबटूर में कोठारी लेआउट पर खोला गया है, जो तमिलनाडु में इस प्रकार की दूसरी सुविधा है। रिवर के एक वे रिष्ठ अे धिकारी ने इस संबंध में कहा कि चेन्नई में हमारे प्रथम स्टोर की सफलता के बाद हम अब पूरे तमिलनाडु में विस्तार के लिए तैयार हैं। हम अन्य राज्यों में भी अपनी सुविधाओं को पहुंचाने के उद्देश्य में कार्रवाई कर रहे हैं। कंपनी का लक्ष्य वार्षिक आय को दोगुना करना है, और इसके लिए वह कई उद्यानिकरण कार्यक्रम चला रही है। अल फुतैम ग्रुप, यामाहा मोटर सहित मित्सुई एंड कंपनी लिमिटेड जैसे बड़े निवेशकों का समर्थन कंपनी को मिल रहा है। रिवर वर्तमान में अपने लोकप्रिय स्कूटर इंडी की खुदरा कीमत 1,42,999 रुपये पर बेच रही है और इसके साथ ही नए स्टोर्स में ई-मोबिलिटी सुविधाएं भी उपलब्ध होंगी। रिवर की यह पहल बाजार में बड़ी संभावनाएं बनाती है और उसे एक विशेष स्थान देती है।

कस्टम ड्यूटी कटौती के बाद सोने का आयात बढ़ा, सरकार ने शुरु की समीक्षा

नई दिल्ली । सरकार ने सोने समेत करीब दो दर्जन वस्तुओं पर कस्टम ड्यूटी की समीक्षा शुरू कर दी है। इसके पीछे का मुख्य कारण है सोने की खपत में वृद्धि तथा आयात की बढ़ती संख्या। सोने के आयात में 2024 में भारी वृद्धि का मामला एक बड़ी चिंता का विषय बन गया है। इसके विपरीत रत्न और आभूषण का निर्यात घटा है। सरकार ने पहले ही सोने और चांदी की छड़ों पर कस्टम ड्यूटी कम करके घरेलू स्तर पर वैल्यू एडिशन को बढ़ावा देने का प्रयास किया था। हालांकि, इसके बावजूद सोने के आयात में भारी वृद्धि होने के कारण तैयारियाँ चल रही हैं कि क्या ड्यूटी में वृद्धि का निर्णय लिया जाए। दिसंबर 2024 में सरकार को इस समस्या पर गहन विचार करने के निर्णय का स्पष्ट रूप से उठाना होगा क्योंकि 'मेक इन इंडिया' और निर्यात की राह पर भी दिक्कत हो सकती है। इसलिए उचित नीतियों को बनाने के लिए सभी पक्षों के सुझाव और आंकड़ों का विश्लेषण करना महत्वपूर्ण है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण की नजर में एक सही निर्णय के लिए इस समस्या को समझना और उसका समाधान ढूंढना महत्वपूर्ण है। जल्द ही इस मुद्दे पर सरकार का उत्तर आएगा।

आईईएक्स ने दिसंबर में 11,132 एमयू का सर्वाधिक मासिक बिजली कारोबार किया

16.62 लाख नवीनीकरणीय ऊर्जा प्रमाणपत्रों का कारोबार किया

नई दिल्ली। भारतीय ऊर्जा एक्सचेंज (आईईएक्स) ने दिसंबर में एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है, जिसमें उन्होंने सालाना आधार पर 29 प्रतिशत अधिक 1113.2 करोड़ यूनिट (एमयू) की अब तक की सबसे अधिक मासिक बिजली कारोबार किया है। इसके साथ ही आईईएक्स ने 16.62 लाख नवीनीकरणीय ऊर्जा प्रमाणपत्रों का कारोबार किया, जो सालाना आधार पर 58 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है। आईईएक्स ने वित्त वर्ष 2024-25 के नौ महीनों में सालाना आधार पर 8898.1 करोड़ यूनिट का बिजली कारोबार किया, जिसमें 19 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्शाई गई। यह वृद्धि कीमतों को नियंत्रित करने में मदद करती है। दिसंबर 2024 के महीने के लिए डे अहेड मार्केट (डीएएम) के मार्केट क्लियरिंग प्राइस ने 3.89 रुपये प्रति यूनिट की गिरावट दर्शाई। इस वृद्धि के साथ आईईएक्स ने ऊर्जा सेवाओं में भारतीय उपभोक्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है और ऊर्जा संयंत्रों की लोकप्रियता को बढ़ाने में मदद की है। आईईएक्स के सफलता के साथ भारतीय ऊर्जा बाजार में नए उत्साह की भावना फैल रही है और ऊर्जा संयंत्रों के संचय और वितरण में सुधार लाने के लिए नए अवसर उपलब्ध हो सकते हैं।

ऋूड में तेजी से कई शहरों में पेट्रोल-डीजल हुआ महंगा!

- ब्रेंट क्रूड का भाव चढ़कर 76.44 डॉलर प्रति बैरल

नई दिल्ली ।

वैश्विक बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में एक बार फिर बढ़ने लगी है। ब्रेंट क्रूड का भाव तो 77 डॉलर तक हो गया है जिसका असर सोमवार सुबह देशभर में पेट्रोल और डीजल की कीमतों पर भी दिखा। सरकारी तेल कंपनियों की ओर से जारी ताजा भाव में सोमवार को कई शहरों में तेल के खुदरा दाम बढ़े हुए दिख रहे हैं. हालांकि, देश के चारों महानगरों में तेल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं दिख रहा है। सरकारी तेल कंपनियों के अनुसार यूपी के गौतमबुद्ध नगर जिले में पेट्रोल 10 पैसे सस्ता होकर 94.77 रुपये लीटर बिक रहा है। डीजल भी 12 पैसे गिरा और 87.89 रुपये लीटर पहुंच गया है। गाजियाबाद में पेट्रोल 20 पैसे महंगा होकर 94.70 रुपये लीटर तो डीजल 23 पैसे बढ़कर 87.67 रुपये लीटर बिक रहा है। बिहार की राजधानी पटना में पेट्रोल 17 पैसे सस्ता होकर 105.41 रुपये लीटर तो डीजल 16 पैसे टूटकर 92.26 रुपये लीटर बिक रहा है।कच्चे तेल की बात करें तो बीते 24 घंटे में इसकी कीमतों में बढ़त दिख रही है। ब्रेंट क्रूड का भाव चढ़कर 76.44 डॉलर प्रति बैरल पहुंच गया है। डब्ल्यूटीआई का भाव भी बढ़त के साथ 73.95 डॉलर प्रति बैरल हो गया है। दिल्ली में पेट्रोल 96.65 रुपये और डीजल 89.82 रुपये प्रति लीटर, मुंबई में पेट्रोल 106.31 रुपये और डीजल 94.27 रुपये प्रति लीटर, चेन्नई में पेट्रोल 102.63 रुपये और डीजल 94.24 रुपये प्रति लीटर, कोलकाता में पेट्रोल 106.03 रुपये और डीजल 92.76 रुपये प्रति लीटर है। गाजियाबाद में पेट्रोल 94.70 रुपये और डीजल 87.81 रुपये प्रति लीटर हो गया है। नोएडा में पेट्रोल 94.77 रुपये और डीजल 87.89 रुपये प्रति लीटर हो गया है। पटना में पेट्रोल 105.41 रुपये और डीजल 92.26 रुपये प्रति लीटर हो गया है।

शेयर बाजार भारी गिरावट पर बंद, सेंसेक्स 1258 अंक गिरा

निफ़्टी 24 हजार से नीचे आया, निवेशकों को 6 लाख करोड़ का नुकसान

मुम्बई ।

भारतीय शेयर बाजार सोमवार को भारी गिरावट पर बंद हुआ। सप्ताह के पहले ही कारोबारी दिन बाजार में ये गिरावट दुनिया भर से मिले कमजोर संकेतों के साथ ही बिकवाली हावी रहने से आई है। इसके अलावा ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस (एचएमपीवी) के मामले आने से भी बाजार टूटने लगा।

दिन भर के कारोबार के बाद तीस शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स 1258 अंक करीब 1.59 फीसदी नीचे आकर 77,964.99 पर बंद हुआ। इसी प्रकार पचास शेयरों वाला नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ़्टी भारी बिकवाली बिकवाली के बाद 388.70 अंक तकरीबन 1.62 फीसदी की बड़ी गिरावट के साथ ही 23,616.05 पर बंद हुआ।

आज कारोबार के दौरान सेंसेक्स की 30 कंपनियों में से सनफार्मा और टाइटन को छोड़कर सभी शेयर गिरे हैं। टाटा स्टील का शेयर सबसे ज्यादा 4 फीसदी से ज्यादा नीचे आया। इसके अलावा कोटक महिंद्रा बैंक, एशियन पेंट्स समेत सभी अन्य शेयरों में भी गिरावट रही।

कर्नाटक में एचएमपीवी संक्रमण के दो मामले सामने आए हैं। इससे भी बाजार में भय का माहौल आया।

टाटा स्टील, रिलायंस इंडस्ट्रीज, एचडीएफ़सी बैंक, कोटक बैंक, टाटा मोटर्स और आईटीसी जैसे हैवी वेटेज वाले शेयरों में बिकवाली से भी बाजार नीचे आया है। वहीं अन्य बाजारों की बात करें तो एशियाई बाजारों में दक्षिण कोरिया का कॉस्पी लाभ में रहा, जबकि चीन का शंघाई कम्पोजिट, हांगकांग का हैंगसेंग तथा जापान का निक्की गिरावट पर रहे जबकि अमेरिकी बाजार शुक्रवार को सकारात्मक रुख के साथ बंद हुए थे।

इससे पहले आज सुबह सेंसेक्स और निफ्टी सप्ताह के पहले कारोबारी दिन सोमवार को तेजी के साथ खुले थे। तीस शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स सोमवार को 50 से ज्यादा अंक चढ़कर 79,281.65 पर खुला। इसी तरह, नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ़्टी भी सुबह शुरुआत में यह 13.30 अंक की मामूली गिरावट लेकर 23,991.45 पर कारोबार कर रहा था।

भारत में पेट्रोलियम उत्पादों की मांग में वृद्धि का अनुमान : रिपोर्ट

नई दिल्ली ।

फिच रेटिंग्स ने हाल ही में एक रिपोर्ट जारी की है, जिसमें 2025 में समाप्त होने वाले वित्तीय वर्ष में भारत में पेट्रोलियम उत्पादों की मांग में 3 से 4 फीसदी तक की वृद्धि का अनुमान जताया गया है। इसके आधार पर, फिच ने दर्शाया है कि यह वृद्धि मुख्य रूप से उपभोक्ता, औद्योगिक और बुनियादी ढांचे की बढ़ती मांग के कारण होगी। रिपोर्ट के अनुसार, इस वृद्धि से भारत की जीडीपी में 6.4 फीसदी तक का इजाफा हो सकता है। डीजल और पेट्रोल की मांग के कारण, जो भारतीय पेट्रोलियम उत्पादों का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, पेट्रोलियम उत्पादों की खपत में यह वृद्धि होने का अनुमान है। फिच ने बताया कि वित्त वर्ष 25 के पहले सात महीनों में पेट्रोलियम उत्पादों की खपत में 3 फीसदी की वृद्धि हुई है, जबकि वित्त वर्ष 24 में यह वृद्धि 5 फीसदी रही थी। हालांकि, रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि भारतीय तेल विपणन कंपनियां वित्तीय वर्ष 2025 में रिफाइनिंग मार्जिन पर दबाव का सामना कर सकती हैं। रिपोर्ट के अनुसार, रिफाइनिंग मार्जिन मध्य-चक्र स्तर से नीचे गिर सकते हैं, जो क्षेत्रीय स्तर पर अति आपूर्ति, कम उत्पाद दरों और कच्चे तेल की किस्मों के बीच मूल्य अंतर के कारण हो सकता है। अगले वर्ष में सुधार की संभावना है, जो क्षेत्रीय ओवरसप्लाई में कमी और ब्रेंट कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट के साथ आ सकता है। फिच रेटिंग्स के अनुसार, भारतीय तेल विपणन कंपनियों को रिफाइनिंग और विपणन के बीच संतुलन बनाना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, लेकिन लंबी अवधि में स्थिति में सुधार के संकेत भी मिल रहे हैं। एचपीसीएल-मित्तल एनर्जी लिमिटेड जैसी शुद्ध रिफाइनर कंपनियों को अपनी मार्केटिंग ऑपरेशंस की कमी के कारण अधिक लाभप्रदता की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। फिच की रिपोर्ट में पेट्रोलियम सेक्टर में भारत की वित्तीय मजबूती के संकेत छुपे हैं, जो आसपासी और अंतरराष्ट्रीय दौरों में एक गंभीर विषय है। अगले सालों में रिफाइनिंग मार्जिन में सुधार के साथ, उत्पादों की मांग और मुद्रा निर्भरता पर भारत की आर्थिक स्थिति पर व्यापक प्रभाव हो सकता है।

पिछले वर्ष नए कार्यालय स्थल में आपूर्ति में छह प्रतिशत की गिरावट

कार्यालय स्थल की मांग 2024 में 885.2 लाख वर्ग फुट हुई, जो 2023 में 745.6 लाख वर्गफुट थी

नई दिल्ली । देश के आठ प्रमुख शहरों में 2024 में नए कार्यालय स्थल की आपूर्ति में सालाना आधार पर छह प्रतिशत की गिरावट आई है। इस दौरान मांग अपने सर्वकालिक उच्चस्तर पर पहुंच गई है। इस जानकारी की पुष्टि करते हुए एक रियल एस्टेट सलाहकार ने रिपोर्ट जारी की है। यह रिपोर्ट दर्शाती है कि देश के आठ प्रमुख शहरों में 2024 के दौरान कार्यस्थल की नई आपूर्ति में गिरावट आई है। कुल कार्यालय स्थल की मांग 2024 में 885.2 लाख वर्ग फुट हो गई है, जो 2023 में 745.6 लाख वर्गफुट थी। इस गिरावट के बीच, दिल्ली-एनसीआर, पुणे, चेन्नई, हैदराबाद, कोलकाता और अहमदाबाद में नई आपूर्ति में गिरावट आई है, जबकि मुंबई में इसमें उछाल आया है। विभिन्न शहरों में, नई आपूर्ति की संख्या और जानकारी इस प्रकार है- मुंबई- 83.2 लाख वर्ग फुट, बेंगलुरु- 133.4 लाख वर्ग फुट, दिल्ली-एनसीआर- 46.8 लाख वर्ग फुट, चेन्नई- 21.7 लाख वर्ग फुट, पुणे- 42.2 लाख वर्ग फुट, हैदराबाद- 102.1 लाख वर्ग फुट, कोलकाता- 13.2 लाख वर्ग फुट, अहमदाबाद- 22.1 लाख वर्ग फुट। इन आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि वैश्विक और घरेलू कंपनियों की मांग के बावजूद, नए कार्यालय स्थल की आपूर्ति में गिरावट आई है।

मैक्रोटेक डेवलपर्स की बिक्री बुकिंग 32 प्रतिशत बढ़कर 4,510 करोड़ पहुंची

- 2023 में बिक्री बुकिंग 3,410 करोड़ रुपये रही थी

नई दिल्ली । रियल एस्टेट कंपनी मैक्रोटेक डेवलपर्स लिमिटेड की बिक्री बुकिंग में तेजी देखी जा रही है। अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में कंपनी ने सालाना आधार पर 32 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाते हुए 4,510 करोड़ रुपये की बिक्री बुकिंग दर्ज की। इससे पहले, 2023 में यही तिमाही में बिक्री बुकिंग 3,410 करोड़ रुपये रही थी। मैक्रोटेक डेवलपर्स का वित्त वर्ष 2024-25 के पहले नौ महीनों का कारोबार भी कर रहा है। उन्होंने इस वित्त वर्ष के दौरान बिक्री बुकिंग में 25 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की है, जो पिछले वर्ष की समयावधि में 10,300 करोड़ रुपये से बढ़कर 12,820 करोड़ रुपये हो गई है। मैक्रोटेक डेवलपर्स की लोढ़ा ब्रांड के तहत संपत्तियां बेचने वाली यह कंपनी देश के अग्रणी रियल एस्टेट डेवलपरों में से एक है। उनकी मुंबई महानगर क्षेत्र (एमएमआर) और पुणे आवासीय संपत्ति बाजार में मजबूत उपस्थिति है, जिसके अलावा उन्होंने बेंगलुरु आवास बाजार में भी अपनी अच्छी पहचान बनाई है। कंपनी ने सोमवार को शेयर बाजार को दी सूचना में बताया कि उनकी सर्वश्रेष्ठ तिमाही बिक्री बुकिंग दर्ज करने पर उन्हें गर्व महसूस हो रहा है, और वे हर साल के मुकाबले नए ऊंचाईयों की ओर बढ़ रहे हैं।

नवा बछर कर उपहार, महिलामन कर खाता में गेलक सम्मान रासि

नवा बछर कर उपहार। महिलामन कर खाता में 1000 से बढ़ाय के 2500 रुपया कर सम्मान रासि कर पहिल किस्त हस्तांतरित करल गेलक। रांची कर नामकुम में आयोजित कार्जक्रम में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन पैसा हस्तांतरित करलयं। देखू तसबीर।

मुद्रक व प्रकाशक **नीलम सिंह** द्वारा झारखंड वनिता उद्योग एसएचजी के लिए श्याम नगर, गांधी नगर सीसीएल कॉलोनी डीएवी गांधी नगर स्कूल के पीछे, थाना गोंदा, जिला-रांची, राज्य झारखंड-834008 से प्रकाशित एवं शिवा साईं पब्लिकेश प्राइवेट लिमिटेड रातू, काठीटांड़ टेंडर बगीचा के नजदीक, एचपी पेट्रोल पंप, पोस्ट व थाना रातू, रांची, झारखंड-835222 में स्थित प्रिंटिंग प्रेस में मुद्रित। आरएनआई पंजीयन संख्या. **JHABIL/2023/86791**, **संपादक** : नीलम सिंह, **प्रबंध संपादक** : कृशन गोपालका, **सलाहकार संपादक** : रतन लाल अग्रवाल। **फोन नंबर** : 8210640230, 9934166306, **ईमेल आइडी** : jharkhandwanitaudyog@gmail.com